# सहस्र अमूल्य हीरे

संग्रहकर्त्ता—

हरकिशनलाल अग्रवाल 'विशारद',

'हिन्दी साहित्य कुल भूषण' शिक्षक,

हरदा, जिला होशंगाबाद।

प्रकाशक—

भार्गवपुस्तकालय, गायघाट, बनारस।

ब्राञ्च—कचौड़ीगली, बनारस।

चतुर्थ संस्करण } सन् १९४९ { मूल्य १॥)

UNIVERSAL LIBRARY
OU_180140
UNIVERSAL LIBRARY

प्रकाशक—
भार्गवपुस्तकालय,
गायघाट, बनारस ।
शाखा—कचौड़ीगली बनारस ।

मुद्रकः—
पं० बैकुंठनाथ भार्गव,
आनन्दसागर प्रेस,
गायघाट, काशी ।

मिश्रित

# उपहार

मिश्रित

# भूमिका।

ऋषियों और महात्माओं के वचनामृत साहित्य की आगर संपत्ति, और जीवन के दिव्य संदेश हैं। जीवन के दुर्गम पथ में जब हम पथभ्रष्ट हो जाते हैं, जब विपत्ति की काली घटा हमारे सामने उमड़ती चली आती है, अच्छे दिनों के साथी हमारा संग छोड़ देते हैं, हमें चारों ओर अंधकार ही दिखाई देता है, मित्रों के बगली घूँसों से जब हम आहत हो जाते हैं, हमारा विवेक भी हमारा साथ छोड़ देता है, उस वक्त बहुधा ऋषियों के एक कथन से, एक जीवनप्रद वाक्य से, हमारी हिम्मत बँध जाती है, हम अपनी दुर्बल आत्मा में एक विचित्र बल का अनुभव करते हैं, वह काली घटाएँ उड़ जाती हैं, वह अंधकार मिट जाता है, और हम नए उत्साह, नए जोश और दृढ़ संकल्प से फिर अपने कर्तव्य पथ पर चल पड़ते हैं। बहुधा एक वाक्य से सशक्त होकर हम हारी हुई बाज़ियाँ जीत जाते हैं, ऊबते हुए श्रोताओं का मन खींच लेते हैं और अपने नीरस कथन को अलंकृत कर देते हैं। लेखक महोदय ने इन वचनामृतों का संग्रह कर के भाषा की सेवा की है। हमें आशा है कि पाठक इन सूक्तियों का आदर करेंगे।

प्रेमचन्द

# कुछ अमूल्य हीरे

( १ )

हे मनुष्य ! अपने किसी भाई की सेवा करके बदले में तू किसी प्रकार की इच्छा क्यों रखता है ? सत्कार्य मे तेरे मन को जो आनन्द हुआ उससे क्या तुझे सन्तोष नहीं होता ?

( २ )

सद्वस्तु में जो उत्तमता होती है, सच्चरित्र ही उसका पारितोषिक है इसके सिवाय उसे किसी प्रकार की प्रशंसा की ज़रूरत नहीं।

( ३ )

अगर तुमने अपने किसी पड़ोसी का कुछ भला किया और उससे उसे लाभ पहुँचा हो, तो फिर तुम इसके बदले में कीर्ति या अहसान प्राप्त करने की इच्छा क्यों करते हो ? यह तो मूर्खता है।

( ४ )

धन बुद्धिमानों का दास है; परन्तु वही धन मूर्खों के हृदय में अत्याचारियों का काम करता है। लोभी धन की चाकरी करता है, धन उसकी चाकरी नहीं करता। जिस प्रकार रोगी रोग के वश में रहता है उसी प्रकार लोभी धन के वश में रहता है।

( ५ )

धृष्टता पूर्वक कौन बोलता है ? अपनी ज़िद पर डटे रहने का प्रयत्न कौन करता है ? वह नहीं, जो अज्ञानी है; बल्कि वह, जो वृथाभिमानी है।

( ६ )

ऐसा न समझो कि प्राचीनता या बहुमत से कोई बात सत्य हो सकती है यदि विवेक धोखा न दे तो हमारी बात उतनी ही आदरणीय हो सकती है, जितनी दूसरों की।

( ७ )

सेवा की सच्ची महत्ता उत्तेजना देने में है। मुझे यह पूर्ण विश्वास है कि गरीबों के साथ जो अनिष्ट हो रहे हैं उनमें से बहुत ऐसे हैं जो हममें नम्रता और विवेक न होने से पैदा हुए हैं। अपने से बड़े आदमियों की हम जैसे उत्तम भावों से सहायता करते हैं, वैसे ही भावों से यदि गरीबों की सहायता की जाय तो हम निस्सन्देह उनका कल्याण कर सकते हैं।

( ८ )

तुम्हारे सच्चे से सच्चे मित्र तुमको जितना समझते हैं अगर तुम उससे ज्यादा भले नहीं हो तो तुम बहुत उत्तम आदमी नहीं हो।

( ९ )

कितने ही शब्द सूर्य की किरणों की तरह होते हैं जब कि कितने सर्प के काटने के समान होते हैं। जिस तरह कठोर शब्दों से मनुष्यों को दुःख होता है उसी प्रकार मीठे शब्दों से उन्हें आनन्द होता है।

( १० )

मनुष्य का धर्म क्या है ? अपने भाइयों की सहायता करना, अपनी दैवी सम्पत्ति का विकाश करना, जिस तरह बन सके लोक कल्याण करना और ईश्वर की इच्छा के अनुसार चलना।

( ११ )

आधे मन से किये हुए कार्य की अपेक्षा उदार मन से की हुई

सत्कार्य की इच्छा मात्र भी ज्यादा श्रेष्ठ है। एक दूसरे की शरम की खातिर दिये हुए लाखों रुपये की अपेक्षा 'निर्धन होने पर भी दयालु' मनुष्य के हृदय की भावपूर्वक की हुई प्रार्थना और शुभेच्छा अधिक कल्याण कर सकती है। परोपकार की इच्छा रखने वाले किसी मनुष्य को इन उत्तम साधनों का टोटा नहीं पड़सकता। **'ली'**

( १२ )

दाता की पहिचान उसके दान के परिमाण से नहीं, वरन् उसके भाव से होती है। **'लेसिंग'**

( १३ )

अगर तुझ से बन सके तो भिखारी को भिक्षा दे अगर इसका साधन न हो तो उसके साथ मीठे शब्दों में बातचीत तो अवश्य कर। **'हेरिक'**

( १४ )

सच्चा विनयशील मनुष्य परोपकार के छोटे छोटे अनेक सत्कार्यों के करने में आनन्द पाता है। बड़े बड़े काम करके दूसरे मनुष्यों पर उपकार का ऋण चढ़ाना और जनता में 'बड़ा आदमी' बनना उसे पसन्द नहीं होता। **'पी० जे० हेमर्टन'**

( १५ )

सत्कार्य करने की शक्ति वैसा काम करने की वृत्ति में रहती है। परोपकारी-हृदय से निकला हुआ स्वास भी एक प्रकार का कार्य है। **'हा वें'**

( १६ )

मीठे शब्द बहुत बार सोने के दान की अपेक्षा भी अधिक कीमती सिद्ध होते हैं। एक मधुर मुसकान बहुत समय से दुःख सहते हुए हृदय को सुखी कर सकती है। **'एल० एम० होजीज'**

( १७ )

सत्कार्यकी दुकान का कभी दिवाला नहीं निकलता। 'थारो'

( १८ )

अपकारी के साथ उपकार करना यही विरुद्ध मनुष्य को जीतने का उपाय है। 'टिलाटसन'

( १९ )

मित्रता कायम रखने के लिये मित्र के साथ भलाई करो और शत्रु को मित्र बनाने के लिये शत्रु के साथ भी भलाई करो। 'बेंजमिन फ्रेंक लिन'

( २० )

जो मनुष्य जलता हुआ घर कृष्णार्पण करता है उसमें कुछ भी उदारता नहीं; क्योंकि दान का तत्त्व त्याग है। 'हेनरीटेलर'

( २१ )

सहायता लेने की अपेक्षा सहायता देने में ही अधिक मान और आनन्द होता है।

( २२ )

जो हाथ दिन भर उदार प्रामाणिक कार्य करते रहते हैं, वे ही सुन्दर हैं। जो पैर नीच से नीच के घर दया का काम करने के लिये चल कर जाते हैं वे ही सुन्दर हैं। जो कन्धे दूसरों की चिन्ता का भार, धैर्य पूर्वक सदा सहते रहते हैं वे ही सुन्दर हैं। जो दूसरों के सुख की धारा को कायम रख रहे हैं उनका जीवन धन्य है। 'ई० पी० अलर्टन'

( २३ )

सत्कार्य का कभी नाश नहीं होता विनय दिखलाने वाला विनय प्राप्त करता है, दया करनेवाला स्नेह पात्र है। दूसरों को दिया हुआ आनन्द कभी व्यर्थ नहीं जाता। 'बेनिल'

बहुत से मनुष्यों से मिलकर मुझे जो अनुभव प्राप्त हुआ है वह यही है कि जो दूसरों की ज्यादा सेवा करता है वही सबसे ज्यादा सुखी है। ज्यादा से ज्यादा दुःखी वही होता है जो दूसरों की कम से कम सेवा करता है। **'बुकर टी० वाशिंगटन'**

( २५ )

किसी के साथ कोई भलाई कर देने से जगत का विशेष कल्याण नहीं हो सकता। इसके लिये आवश्यकता है कि मनुष्य सदा अपने कार्यों और नीति को ऊँचा बनाये रखे। मन वचन और कर्म की एकता से ही दूसरों के हृदय पर स्थायी प्रभाव डाला जा सकता है। **'ई० के अर्ड'**

( २६ )

किसी मनुष्य की इज्जत सिर्फ उसके बहुत से धन की वजह से नहीं करनी चाहिये, वरन् उसके सद्गुणों के लिये ही उसका मान करना चाहिये। सूर्य की पूजा उसकी ऊँचाई के कारण से नहीं, वरन् उससे मिलनेवाले प्रकाश के लिये की जाती है। **'जे० सी० वेइल'**

( २७ )

तुम किसी महान कार्य के करने का अवसर ढूँढ़ रहे होगे, किसी बड़ी बुराई को दूर करने की इच्छा कर रहे होगे, पर इस तरह मौका तलाश करने में वक्त खराब न करके छोटे छोटे परोपकार के कार्य बिना किसी को बतलाये करने लगो। ऐसा करने से बड़े बड़े काम अपने आप तुम्हारे पास आ खड़े होंगे और तब तुम उनको बहुत अच्छी तरह पूरा कर सकोगे। **'जान ब्राइट'**

( २८ )

मुझे आज क्या मिला है इसकी अपेक्षा यह विचार करना श्रेष्ठ है कि आज मेरे लिये दूसरे ने क्या तकलीफ उठाई है। **'एफ० डी० वेक'**

( २९ )

जो लोग दूसरों के जीवन को आनन्द मय बनाते हैं वे अपने जीवन को अवश्य आनन्द मय बना लेते है। **'जे० एम० बेरी'**

( ३० )

सच्ची सेवा का अर्थ है—दान, समय और शौक का त्याग, दूसरे के लिये स्वार्पण और ऐसी भेंट का देना जो फिर वापिस न मिल सके।

**'कैननबार्नेट'**

( ३१ )

जिन लोगों के साथ भलाई करने से प्रशंसा और शाबासी मिलने या जिनके परिचय के द्वारा अन्यलाभ होने की सम्भावना हो तो शायद ही कोई ऐसा आदमी निकलेगा कि ऐसे अवसर पर भलाई न करे। सच्चे, सहृदय और उदार आत्मा वालों में ही इतनी नैतिक उच्चता होती है कि वे बिना किसी प्रकारकी कामना के केवल कर्त्तव्य समझ कर दूसरों के साथ भलाई करते है। **'लिलिबेरी'**

( ३२ )

जिस प्रकार घूँघट स्त्रीकी सुन्दरताको बढ़ा देता है उसी प्रकार विनय की छाया मनुष्यके सद्गुणोंको अधिक उत्तम बना देती है।

( ३३ )

अभिमानी मनुष्य की ओर देखो, वह तड़क भड़क की पौशाक पहिन कर इधर उधर देखता हुआ बड़े अभिमान के साथ सड़क पर चलता है। उसे सदैव यही फ़िकर लगी रहती है कि लोग हमारी ओर देखें आश्चर्य करें और बड़े अदब से झुक कर हमें सलाम करें।

( ३४ )

वह अपनी गर्दन सीधी किये रहता है और गरीबों की तरफ ध्यान नहीं देता। वह अपने से कम दर्जे वाले के साथ धृष्टता का बर्ताव करता है। परिणाम यह होता है कि उससे ऊँचे दरजे के लोग भी उसका घमण्ड और मूर्खता का सहज में उपहास करने लगते हैं।

'एक प्राचीन महात्मा'

( ३५ )

वह धर्म वास्तव में श्रेष्ठ नहीं कहा जा सकता जिसके करने के पश्चात् हाथ मलने पड़ें और जिसका फल मिलते समय आँसू बहाने पड़ें।

( ३६ )

जब तक बुरा कर्म बुरे परिणाम पैदा नहीं करता तब तक मूर्ख को वह मधु की तरह मीठा मालूम होता है। पर जब बुरा काम बुरे फल देने लगता है तब मूर्ख शिर धुन कर पछताता है।

( ३७ )

ताजा दुहा हुआ दूध जैसे जल्दी नहीं बिगड़ता उसी प्रकार बुरे कर्मों का फल भी जल्दी नहीं मालूम होता। किन्तु वह राख में दबी हुई आग की तरह कायम रहता है। 'महात्मा बुद्ध'

( ३८ )

गरीब को आश्वासन दो, निर्बल को सहायता और आश्रय दो, और अपना पूरी ताकत से दुष्टता का खंडन करो। इसी से ईश्वर तुमको चाहेगा और मिलेगा। 'अलफ्रेड दि ग्रेट'

( ३९ )

सत्कार्य करने का एक भी अवसर हाथ से न जाने दो।

'आटरबरी'

( ४० )

मनुष्य जीवन के आधे दुःख पारस्परिक दया परोपकार और सहानुभूति से निवारण किये जा सकते हैं। 'ऐडीसन'

( ४१ )

बालकों! बलवान बनों। 'गीता का पाठ करने की अपेक्षा यदि तुम' फुटबाल' खेलो, तो स्वर्ग के बहुत नजदीक पहुँच सकते हो। तुम्हारा शरीर जरा तगड़ा हो जावेगा, तो तुम पहिले की अपेक्षा कहीं अधिक 'गीता' को समझ सकोगे। तुम्हारा खून जरा ताजा रहने लगे, तो तुम श्रीकृष्ण की विशाल प्रतिभा और दृढ़ शक्ति को अच्छी तरह समझोगे।
'स्वामी विवेकानन्द'

( ४२ )

रोग जब तक कष्ट न देने लगे, हम उसकी परवाह नहीं करते। बालक की गालियाँ हँसी में उड़ जाती हैं, लेकिन स्याने लड़के की गालियाँ कौन सहेगा? 'प्रेमचन्द'

( ४३ )

संयम वह मित्र है, जो जरा देर के लिये चाहे आँखों से ओझल हो जाय पर कभी साथ नहीं छोड़ता। संयत आत्मा चाहे पानी में फिसल जाय पर धार के साथ पानी में बह नहीं सकती। संयम अजेय है—अमर है। 'प्रेमचन्द'

( ४४ )

गल्ती न करने की अपेक्षा गल्ती करके उसे सुधारना अच्छा है। जिस प्रकार खेत में उपजे हुए खर-पात को उखाड़ कर उसी में सड़ने गलने को छोड़ देने से उसकी उपज शक्ति बढ़ती है उसी प्रकार गल्ती को सुधारने से हृदय बलवान होता है। 'स्विफ्ट'

( ४५ )

ज़िन्दगी उसी की बड़ी होती है, जो अपने समय का अच्छा उपयोग करता है। जो समय को नष्ट करता है, उसकी जिन्दगी बड़ी होने पर भी बहुत छोटी समझी जाती है। कर्ममय जीवन ही दीर्घ जीवन् है। और आलस्य मय जीवन ही मृत्यु है। **'फुलर'**

( ४६ )

यदि जीवन दुःखमय हुआ तो वह बोझ हो जाता है, यदि अधिक सुखमय हुआ, तो सदा उस सुख के नष्ट होने का खटका लगा रहता है। अतः वास्तविक आनन्द सुख और दुःख के बीच में खड़े होकर मुस्कराने में हैं। **'फे-थम'**

( ४७ )

वर्तमान का नाम ही जीवन है—क्योंकि भूतकाल तो बीत गया और भविष्य का कोई विश्वास नहीं। **'एंटोनियस'**

( ४८ )

बड़े लोगों की जीवनी से लाभ उठाना—एक ही जीवन में दो जीवनों का आनन्द लूटने के बराबर है। **'मार्शल'**

( ४९ )

आत्म-सम्मान की रक्षा हमारा सबसे पहिला धर्म है। आत्मा की हत्या करके अगर स्वर्ग भी मिले तो वह नरक है। **'प्रेमचन्द'**

( ५० )

पढ़ो-लिखो-खेलो-कूदो। इनमें एक भी न भूलो। जो न पढ़े न लिखे सो मूर्ख है। जो न खेले न कूदे सो उससे भी मूर्ख। **'गंगानाथझा'**

( ५१ )

आत्मोन्नति के लिये कठिनाइयों से बढ़कर कोई विद्यालय नहीं। कठिनाइयों में ही ईश्वर के दर्शन होते हैं और हमारी उच्चतम शक्तियाँ विकास पाती हैं। जिसने कठिनाइयों का अनुभव नहीं किया, उसका चरित्र बालू की भीत है, जो वर्षा के पहिले ही झोंके में गिर पड़ती है। उस पर विश्वास किया नहीं जाता। **'प्रेमचन्द'**

( ५२ )

संसार में किसी से डरो मत। दुःख को वीरता पूर्ण सहन करने में क्या कम आनन्द है ?

( ५३ )

चाहे जितने वर्ष जिओ-किन्तु याद रखो, पहिला बीस वर्ष जीवन का सबसे कीमती हिस्सा है। **'साउदे'**

( ५४ )

बसन्त आ गया! झाड़ियों और कुंजों में नये नये पत्ते और फूल निकल आये। सभी जीव-जन्तु प्रसन्न हो बसन्ती मज़ा लूट रहे हैं। क्या ईश्वर की सत्ता का अनुभव करने के लिये इससे बढ़कर कोई समय हो सकता है ? पत्तों की हरियाली में फूलों के रंग विरंगे रूप में, कोयल की कूक में, त्योंही मन्द सुगन्ध हवा में क्या ईश्वर स्पष्टरूप में नहीं दीख पड़ता है ? **'हालीसन'**

( ५५ )

प्रकृति उन्हीं प्राणियों को परीक्षा में डालती है, जिनके द्वारा उसे संसार में कोई महान् उद्देश्य पूरा कराना होता है। **'प्रेमचन्द'**

( ५६ )

जो आदमी दूसरी कौम से जितनी ही नफरत करता है, समझ लीजिये कि वह खुदा से उतनी ही दूर है। 'प्रेमचन्द'

( ५७ )

जो अपने घर वालों की सेवा न कर सका, वह जाति की सेवा कभी कर हो नहीं सकता घर ही सेवा की सीढ़ी का पहिला डंडा है। 'प्रेमचन्द'

( ५८ )

कोई निश्चय पूर्वक नहीं कह सकता कि वह ५० वर्ष तक जियेगा। किन्तु वह चाहे तो ३० वर्ष में ही ५० वर्ष के जीवन का आनन्द लूट सकता है। शर्तें केवल दो ही हैं—एक तो सूर्योदय से पहिले उठना, जिसमें वह समूचे दिन का पूरा पूरा उपयोग कर सके, और दूसरी—केवल वैसा ही काम करना जिससे या तो वह कुछ प्राप्त कर सके या कुछ सीख सके। 'काल्टन'

( ५९ )

हँसी हमारे हृदय के आनन्द का बाहरी चिन्ह है। हँसना सभी क़सरतों से अच्छा है, क्योंकि इससे शरीर और आत्मा दोनों आन्दोलित होते हैं। हँसने से पाचन शक्ति बढ़ती है, खून साफ़ होता है, फेफड़े मज़बूत होते हैं प्रत्येक मुख्य अंग में जीवन शक्ति का संचार होता है। 'हकलेण्ड'

( ६० )

तारे केवल देखने में ही सुन्दर नहीं हैं-हमें सुन्दर उपदेश भी देते हैं। वे बतलाते हैं-'छोटे हो' तो क्या हुआ, भलाई करते रहो। भले ही चन्द्रमा न उगे, किन्तु भूले भटके यात्रियों को राह बतलाने को अपने हाथ में मसाल लिये तारे रात भर जगे रहते हैं। ज़रा भी झपकी नहीं लेते। 'यंग'

( ६१ )

स्वर्ग का द्वार उतना ऊँचा और उतना चौड़ा नहीं है कि तुम उसमें ऐंठते, इठलाते प्रवेश कर सको। शरीर को सम्हाल कर, हाथों को आगे बढ़ाकर और शिर झुकाकर ही तुम उसमें प्रवेश कर सकते हो।

**'वेबस्टर'**

( ६२ )

अगर तुम ज्ञान, प्रतिभा, योग्यता, उद्योग और साहस रखते हो और अगर साथही तुम्हारे भीतर एक कण भर भी सहानुभूति का भाव है तो आओ अपने साथियों सहित आओ, और अपनी सेवाओं को उन लोगों को अर्पण करो जिन्हें उनकी सबसे ज्यादा ज़रूरत है और याद रखो कि अगर तुम आते हो तो मालिक बनकर नहीं आते वरन् एक सहयोगी-साथी का भाव लेकर आते हो। तुम हुकूमत करने को नहीं आते वरन् स्वयम् नया जीवन प्राप्त करके अपने भीतर की शक्ति संचय करने को आते हो। तुम दूसरोंको शिक्षा देनेको नहीं आते वरन् दूसरों की आकांक्षाओं को समझकर उनको पवित्र बनाने, उनको प्रत्यक्ष करने, तथा युवावस्थाके उत्साह और प्रौढ़ावस्था के अनुभवके द्वारा उनको व्यावहारिक जीवन में सफल करने के लिये आते हो। केवल ऐसी ही अवस्था में तुम्हारा जीवन पूर्ण, श्रेष्ठ और विवेकसम्पन्न समझा जा सकता है। उस समय तुम देखोगे कि इसमार्ग में तुम्हारा प्रत्येक प्रयत्न बड़ी अच्छी तरह सफलीभूत हो रहा है। जब एक बार तुम्हारे कार्यों और विवेक में इस प्रकार की श्रेष्ठ एकता स्थिर हो जायगी तो उसके फल से तुमको ऐसी शक्तियाँ प्राप्त होंगी, जिनका तुमने स्वप्न में भी विचार न किया होगा और जो अभी तक तुम्हारे भीतर सोई पड़ी हैं। **'प्रिंस क्रोयाटकिन'**

( ६३ )

सचमुच अधिक दया के पात्र वे हैं जो अपनेको अंकुश में नहीं रख सकते, अपनी इच्छाके अनुसार कुछ भी कार्य नहीं कर सकते। यदि वे कुछ सत्कार्य करते भी हैं तो किसी स्वार्थ बुद्धि से या किसी दंड से बचने के अभिप्राय से या लोक निन्दा के भय से करते हैं।

( ६४ )

प्रत्येक मनुष्य अपनी शक्तिके अनुसार ही कार्य करने को वाध्य है।

( ६५ )

जिस समय सद्गुणों के पवित्र कर्तव्य की भावना से अथवा सद्गुण मात्र से व्यवहार होता है उसी सयय सच्ची उच्चता का प्रादुर्भाव होता है। यदि हम इस नीति का अवलम्बन करें तो हमारे प्रत्येक कार्य का उत्तम प्रभाव पड़ सकता है।

( ६६ )

सच पूछो तो प्रेम बहुत ही निराली वस्तु है। वह पूर्ण त्याग रूप है। प्रेम की आत्मा त्याग है। उसका सच्चा अर्थ है- दूसरों के लिये विचार करना, स्वार्थ को छोड़कर परार्थ को आगे रखना।

( ६७ )

जीवन केवल बिताने के लिये नहीं दिया गया है श्रेष्ठ बनने के लिये दिया गया है ॥ 'मार्शल'

( ६८ )

केवल भला आदमी मत बनो किसी काम का आदमी बनो। 'थोरो'

( ६९ )

कुछ बनना बिलकुल कुछ न बनने से लाख दर्जे अच्छा है।

'स्मिथ'

( ७० )

कोई तुमसे प्रेम करेंगे, कोई तुमसे घृणा करेंगे, कोई तुम्हारी प्रशंसा के पुल बाँधेंगे, कोई तुम्हारी निन्दा करते फिरेंगे—संसार का यही नियम है, इस पर ध्यान न दो और ईश्वर पर विश्वास रख अपना कर्तव्य करते जाओ।

( ७१ )

केवल धन जमा करना जीवन का आदर्श नहीं होना चाहिये। जीवों पर दया करना जीवन के महान् उद्देश्यों में प्रधान है। **'जोन्सन'**

( ७२ )

केवल बड़े-बड़े काम करने या त्याग करने से ही जीवन नहीं बनता, वरन् मुस्कुराहट और छोटे-मोटे स्वाभाविक त्याग ही हृदय को जीतते और सुख सौभाग्य प्राप्त करते हैं। **'सर हेम्परे डेवी'**

( ७३ )

यदि तुम सफलता चाहते हो तो अध्यवसाय को अपना मित्र, अनुभव को अपना सलाह कार, सावधानी को अपना बड़ा भाई और आशा को अपना अभिभावक बनाओ। **'एडिसन'**

( ७४ )

ग़रीब और नीच जाति के लोगों के घर-घर जाकर धर्मोपदेश करो। गाँवों में जाकर विद्या पढ़ाया करो। दुखियों के घर-घर फेरे लगाओ। शरीर, मन और वचन तीनों ही संसार के लिये दे दो। दरिद्र अज्ञानी और असमर्थ, इन्हें ही अपना देवता मानो। इन्हीं की सेवा को परमधर्म जानो। मैं न मुक्ति चाहता हूँ न भक्ति। बसन्त की तरह लोक का कल्याण करते फिरना—यही मेरा धर्म है। **'स्वामी विवेकानन्द'**

( ७५ )

एक पर दृढ़ता होनी चाहिये। बिना डुबकी लगाये समुद्र के भीतर के रत्न नहीं मिलते। पानी के ऊपर केवल उतराते रहने से रत्न नहीं मिलता। श्रीरामकृष्ण परमहंस'

( ७६ )

ऐ मेरे मन! समुद्र में तू डूब जा, तलातल और पाताल तक तू अगर उसको खोज करता रहेगा तो वह प्रेम-र॰ तुझे अवश्य ही प्राप्त होगा।

'श्रीरामकृष्ण परमहंस'

( ७७ )

एक साथ काम करके पशु पक्षी भी अपना चारा लाते हैं और शत्रु के सामने अपना बचाव करते हैं; पर तुम तो आदमी हो और इसलिये तुम सब मिलकर अपनी रक्षा और गुज़र करो। इतना ही नहीं तुम्हें तो देश की भलाई और परोपकार के लिये बहुत से काम मिलकर करने चाहिये। ऐसा करने से ही तुम पशुपक्षियों से श्रेष्ठ समझे जाओगे।

'आचार्यध्रुव'

( ७८ )

जो मनुष्य हमारे पास आते हैं उन्हें हम नहीं जान सकते। उन्हें जानने के लिये हमें उनके पास जाना चाहिये। 'पी० पी० वख्शी'

( ७९ )

कोई मनुष्य दूसरों से धोखा नहीं खाता वह अपने आप को धोखा देता है।

( ८० )

महात्माओं के चरित्र में चार बातें ऐसी हैं जिन्हें मैं अभी तक नहीं पा सका हूँ। पहिली बात यह है कि मैं अपने पिता की वैसी ही सेवा

करूँ, जैसी सेवा मैं अपने पुत्र से कराना चाहता हूँ। दूसरी बात मैं अपने स्वामी का कार्य उसी प्रकार करूँ, जिस प्रकार मैं अपने अनुचरों से कराना चाहता हूँ। तीसरी बात—मैं अपने कनिष्ठ भ्राता में जिस प्रकार का आचरण देखना चाहता हूँ वही आचरण मुझे भी ज्येष्ठ भ्राता के सामने प्रदर्शित करना चाहिये। चौथी बात—मैं अपने मित्र से जिस व्यवहार की आशा करता हूँ, वही व्यवहार मैं भी उसके साथ रख सकूँ।

( ८१ )

गुण के अभाव को दोष कहते हैं। दोषों का कोई स्वतन्त्र अस्तित्व नहीं है। अच्छे का न होना ही बुरा है। बुरे का कोई अस्तित्व नहीं है।

( ८२ )

पहाड़ के शिखर पर हम किस प्रकार चढ़ सकते हैं, यह सोचने का विषय नहीं है। चढ़ाई शुरू कर देनी चाहिये।

( ८३ )

हमें विनम्र होना चाहिये। अहंकार से हानि ही होती है और अपकीर्ति भी मिलती है।

( ८४ )

जो अच्छा है, वही करना कार्यकुशल मनुष्यों के लिये उचित है, परन्तु जो अच्छा है वही किया गया है अथवा नहीं—इसकी विवेचना में अपने को क्षुब्ध कर डालने की कोई आवश्यकता नहीं।

( ८५ )

सत्य का सम्बन्ध मनुष्य से है—और भ्रम का काल से। 'सत्य' मनुष्य की वस्तु है और 'भ्रम' काल की।

( ८६ )

सच पूछो तो वही कुछ जानता है, जो यह समझता है कि मेरा ज्ञान अल्प है। ज्ञान के साथ ही संशय की वृद्धि होती है।

( ८७ )

धन से गृह की शोभा है और सद्गुणों से मनुष्य की चित्त वृत्ति उन्नत होती है और शरीर भी स्वस्थ रहता है। अतएव सज्जनों को सदैव अपने विचार निश्छल रखना चाहिये। 'पी० पी० वख्सी 'तीर्थरेणु'

( ८८ )

मूर्ख एक ओर नज़र रखता है और चतुर चारों ओर।

'समर्थ राम दास'

( ८९ )

तुम सादगी से रहना सीखो। पहलवान बनो, वीर बनो और धैर्यवान बनो। 'वास्वानी'

( ९० )

जिसे मेरी सेवा करनी हो, वह रोगियों की सेवा करे।

'गौतम बुद्ध'

( ९१ )

लड़के और लड़कियाँ क्या करें? ग़रीबों पर दया करें, उनको अपनावें और उनकी रक्षा करें। 'महा० गांधी'

( ९२ )

हर एक आदमी का कर्तव्य है कि वह अपने शरीर को तन्दुरुस्त रक्खे। 'ज्यार्ज न्यूमेन'

( ९३ )

प्रसन्न मुख को देखकर बड़े लोग भी खुश हो जाते हैं। 'वर्डसवर्थ'

( ९४ )

अपनी प्रकृति के अनुसार इन्द्रियों का संचालन करके बालक गण जो कुछ सीखते हैं, वही ज्ञान के भांडार में स्थाई रहता है। जिस विषय के सीखने की ओर बालक का स्वाभाविक आकर्षण नहीं रहता, अध्यापक के नाना प्रकार के प्रयत्न करने पर भी उसमें वह स्थायी ज्ञान नहीं प्राप्त कर सकता। 'मांटेसरी'

( ९५ )

हिन्दुस्थान के बालकों के मन में यह गलत भावना भरने से कि अपनी पढ़ाई या रोज़ी के लिये अपने हाथों काम करना अयोग्य है, देश की इतनी बड़ी हानि हो रही है कि वह चाहे जितना कहा जाय, कम ही होगा। मैंने बचपन में अपने पढ़ने के लिये—अपने दिमाग़ शरीर और आत्मा को सुधारने के लिये—बढ़ई खाने में काम कर धन कमाया था। 'महा० गांधी'

( ९६ )

संगति जब करो तब भले ही लोगों की। यदि कोई भला आदमी न मिले तो अकेले ही रहो, बुरे लोगों का सङ्ग न करो—न करो।

( ९७ )

ज्ञान वृद्धि और बुद्धिमान बनने के लिये विद्या पढ़ना चाहिये, धनवान बनने के लिये नहीं। सरस्वती और लक्ष्मी में पुराना बैर है।

( ९८ )

समय को व्यर्थ नष्ट न करो। समय को खोना मानों ज़िन्दगी को खोना है। समय से बढ़ कर कोई धन नहीं। खोया हुआ धन तो परिश्रम और उद्योग से लौट भी सकता है, परन्तु गया हुआ समय कदापि नहीं लौट सकता। 'राजेन्द्र'

( ९९ )

पुस्तकों का आश्रय छोड़कर केवल अङ्ग संचालन की ही सहायता से संसार के सम्बन्ध में वास्तविक ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है ! **'रूसो'**

( १०० )

गुरू की ताड़ना पिता के प्यार से अच्छी है। उपदेश यदि दीवार पर भी लिखा हुआ मिले तो ग्रहण करो। अगर चिउँटियाँ एका कर लें तो शेर की ख़ाल खींच सकती हैं। रोगी विद्वान की अपेक्षा नीरोग मूर्ख अच्छा है। **'माधुरी'**

( १०१ )

महात्मा युसूफ दुर्भिक्ष के दिनों में इसलिये पेट भर न खाते थे कि भूखों की सुध न भूल जाय। विद्या पढ़ कर उस पर विचार न करना वैसा ही है, जैसा खेत जोत कर बीज न डालना। मेहनत की सूखी रोटी दान के रसगुल्लों से हजार गुनी अच्छी है। **'माधुरी'**

( १०२ )

अगर तुम बड़प्पन चाहो तो दानी बनो, क्योंकि बिना दाना छितराये अन्न पैदा नहीं होता। **'शेख़ सादी'**

( १०३ )

प्रकृति कहती है कि 'अपने से प्रेम करो।' गृह शिक्षा कहती है कि 'अपने कुटुम्ब से प्रेम करो।' समाज कहता है कि 'अपने देश से प्रेम करो।' पर सच्चा धर्म कहता है कि बस मनुष्यों को बिना भेद भाव के प्रेम करो।

( १०४ )

मनुष्य स्वयं स्वतंत्र और आत्मावलम्बी बने, यह भी समाज की एक सच्ची और महत्त्वपूर्ण सेवा है।

( १०५ )

संसार को आनन्द पूर्ण हृदय से देखो। यहाँ पर अनेक दुःखी हृदय रहते हैं। तुम्हारे हँसने से किसी को सहायता अवश्य मिलेगी, किसी के जीवन का भार हल्का होगा।

( १०६ )

प्रेम करने से हृदय ख़ाली नहीं हो जाता और न दान करने से रुपयों की थैली में कमी पड़ती है।

( १०७ )

जो आदमी प्रातः काल सत्कार्य करते हैं, उनका समस्त दिन आनंद में व्यतीत होता है। उनको आस पास की हर एक वस्तु शान्ति और प्रसन्नता देती है।

( १०८ )

✓ किसी के दोष के लिये उसे धमकाने की अपेक्षा उसके सद्गुणों को उत्तेजना देने से उसकी ज्यादा भलाई हो सकती है।

( १०९ )

हम दूसरों के साथ जो प्रेम करते हैं, उसी के द्वारा हम अपने आपको पहिचान सकते हैं। हम दूसरों के लिये जो आशीर्वाद देते हैं, वे आशीर्वाद हमारा भी कल्याण करते हैं।

( ११० )

मनुष्य को आत्मावलम्बी बनाना ही सच्ची उदारता है। स्वावलम्बी बनने से मनुष्य को नया जीवन प्राप्त होता है और ऐसा मालूम होता है कि फिर से युवावस्था वापस आ गई।

( १११ )

जीवन का उद्देश्य इसी में है कि हम अपने आस पास के लोगों के साथ प्रेम और शान्ति के साथ रह सकने में प्रवीण हों और उन लोगों की श्रेष्ठ वृत्तियों का विकाश करने में कुशल हों।

( ११२ )

श्रद्धा रखने से नयापन पैदा हो सकता है, आशा रखने से आशीर्वाद मिल सकता है, स्नेह रखने से अद्भुत कार्य किये जा सकते हैं।

( ११३ )

हम स्वयम् अपमान सहकर जब अपने भाइयों को दुःख से मुक्त करते हैं तो हमारी शक्ति दुगुनी हो जाती है।

( ११४ )

अपने से बन सके वहाँ तक सब मनुष्यों का उपकार करना चाहिये, क्योंकि कितनी ही बार हमको भी अपने से छोटे लोगों से सहायता लेने की ज़रूरत पड़ती है।

( ११५ )

संसार में चतुर कहाना हो तो ( १ ) अपना स्थान अपने से बड़ों को छोड़ दो। ( २ ) जब किसी से बातें करो तो उनके सामने देखो। ( ३ ) जब खाँसी आवे तो मुँह फेर लो। ( ४ ) छींक आने को हो तो अपना रूमाल तैयार रक्खो। 'नन्दन'

( ११६ )

हमारी जाति ने अपनी विशेषता गँवा दी है, इसी कारण भारत में इतने दुःख और कष्ट हैं। अब हमें वह उपाय करना है जिससे उस जातीय विशेषता का विकाश हो। इसके लिये हमें नीच जातियों को उठाना होगा। 'स्वामी विवेकानन्द'

( ११७ )

एक हाथ से खूब दृढ़ता से धर्म को पकड़ो, और दूसरा हाथ इसलिये बढ़ाओ कि जो कुछ अन्यान्य जातियों के यहाँ सीखने लायक है, सीख लें। किन्तु याद रखो जो कुछ भी सीखो, उसे हिन्दू-जीवन के मूल आदर्श के अनुरूप बनालो। **'स्वामी विवेकानन्द'**

( ११८ )

मैं सारे देश में घूमा हूं। मुझे सबसे अधिक कष्ट यह देख कर होता था कि हमारे नवयुवक साँस की फूंक से उड़ जाने वाले हैं। जब तक हमारे यहाँ बालकों के ऊपर बाल-विवाह का अभिशाप है, जब तक हमारे समाज में बाल-विवाह से उत्पन्न हुए आदमी हैं, तब तक अधिक शारीरिक परिश्रम असम्भव है। **'म० गांधी'**

( ११९ )

स्त्री प्रकृति की बेटी है। उसकी ओर कोप दृष्टि से मत देख। उसका हृदय कोमल होता है। उसपर विश्वास कर। **'महाभारत'**

( १२० )

जिस घर में स्त्रियों का आदर नहीं होता उस कुल का नाश हो जाता है। **'महाभारत'**

( १२१ )

कोई कहता है, माँ बड़ी है, कोई कहता है बाप बड़ा है। मेरी राय में माँ बड़ी है, क्यों कि वह संतान पालन जैसे कठिन कार्य को करती है और फिर भी प्रसन्नचित्त दिखाई देती है। **'महाभारत'**

( १२२ )

जिस घर में स्त्री नहीं, वह भूतों का घर है। **'तुलसीदास'**

( १२३ )

स्त्री प्रेम सरलता एक ही चीज़ के कई नाम हैं।

**'बालनक'**

( १२४ )

पुरुषों को हजारों काम हैं, परन्तु स्त्रियाँ केवल प्रेम करती हैं और अपनी सारी उमर उसी में लगाये रहती हैं।

**'बायरन'**

( १२५ )

स्त्री की क़िस्मत उसका पति है। यदि वह उससे प्रेम न करे, उसको देख भाल न करे तो उसका वही हाल होता है, जिसको जीत कर जीतने वाला उसकी परवाह न करे। उस हालत में उसकी आँखों की चमक मन्द पड़ जाती है और इस तरह उसके जीवन का नाश हो जाता है, परन्तु खूबी यह है कि इसका किसी को पता नहीं होता कि कौन सा वह रोग है जो भीतर ही भीतर उसको खा डालता है। जिस तरह शरहत कबूतर अपने परों को सँवार कर अपना घाव छिपा लेता है, ठीक उसी प्रकार स्त्री भी अपने शोक और दुर्भाग्य को पुरुष संसार से छिपा कर रखती है। फल यह होता है कि वह इस तरह घुल-घुल कर मर जाती है।

**'शेक्सपियर'**

( १२६ )

ऐ देवी! तू रात का तारा और सुबह का हीरा है। तू ओस की बूँद है जिनसे काँटों का मुँह भी मोतियों से भर जाता है। वह रात फीकी है, वह दिन उदास है, जब तुम्हारी आँखों की चमक हमारा कलेज़ा ठंढा न करे।

**'टाम्सरो'**

( १२७ )

स्त्री पुरुष के पहलू से पैदा हुई है, उसके शिर से नहीं कि उस पर शासन करे। उसकी छाती से निकली है ताकि उससे सदा प्रेम करती रहे। उसकी भुजा के नीचे से निकली है ताकि उसकी रक्षा में रहे।

**'मेथ्यून हेरी'**

( १२८ )

जो स्त्री पतिव्रता होगी उसको अपने ऊपर अभिमान होगा।

**'लार्ड वेकन'**

( १२९ )

सुन्दर और सदाचारिणी स्त्री परमेश्वर की सृष्टि का सर्वोत्तम और बहुमूल्य रत्न है, जिसपर देवता भी गर्व कर सकते हैं। **'हुरमुज'**

( १३० )

स्त्री काँटे दार झाड़ी को फूल बनाती है और ग़रीब से ग़रीब आदमी के घर को सुशीला स्त्री स्वर्ग बना देती है। **'गोल्डस्मिथ'**

( १३१ )

मैंने अक्सर देखा है कि यदि स्त्री शिक्षा प्राप्त करती है तो उसका विश्वास, अध्यवसाय, साहस और भक्ति पुरुषों से कई गुना अधिक होता है। **'लूथर'**

( १३२ )

जब मैं किसी देवी को देखता हूँ तो ऐसा मालूम होता है कि जैसा ईश्वर के सामने खड़ा हूँ। लाखों वर्ष बीत गये जब ईश्वर ने तारे बनाये, लेकिन तू उसकी अन्तिम कारीगरी है। तू चाँद की रोशनी है। उसकी शीतल स्निग्ध चाँदनी है। तू हृदय की शान्ति है। प्यारी लड़की! तू आज ऐसी है बड़ी होकर पता नहीं क्या होगी। **'अलेकजंडरस्मिथ'**

( १३३ )

स्त्री के सामने जाकर हम नेकी और धर्म की मूर्ति बन जाते हैं। उसकी दिव्य ज्योति हमारे हृदय के अवगुणों को दूर भगा देती है।
'आस्कर चार्लीलार्ड'

( १३४ )

स्त्रियों का हृदय कोमल और शान्त होता है, उसमें क्रोध का नाम नहीं होता। 'पोप'

( १३५ )

बड़ी से बड़ी शिक्षा उसके सामने तुच्छ है और बड़े-बड़े विद्वान् पुरुष उसके सामने चूँ चूँ करते हैं। बुद्धि और मान उस के सामने ऐसे मालूम होते हैं। जैसे खरे मोतियों के सामने साधारण पत्थर। उसका हृदय प्रेम और नेकियों का घर है और उस की निगाह से इतना तेज टपकता है, जिसको देखकर स्वर्ग के देवगण भी नतजानु होते हैं। 'मिल्टन'

( १३६ )

कौनसी ऊँचाई है जहाँ स्त्री चढ़ नहीं सकती ? कौनसा ऐसा स्थान है जहाँ वह पहुँच नहीं सकती ? हज़ारों अपराध करो, वह क्षमा कर देती है। जब किसी बात पर अड़ जाय तो संसारकी कोई भी शक्ति उसे रोक नहीं सकती और न उसे किसी की परवाह ही होती है। ऐ देवी ! बिना तेरे संसार के पुरुषों का क्या हाल होता है ? निरासा उदासी दुःख सब मिलकर तेरे हृदय से प्रेम भाव को नहीं छीन सकते। 'कार्लीटन'

( १३७ )

कोई स्त्री वादा नहीं करती, परन्तु आदमी के लिये अपना सब कुछ निछावर करती है। पुरुष बहुत वादे करते हैं, परन्तु समय आने पर साफ़ मुकर जाते हैं। 'अनोताल फ्रांस'

( १३८ )

सुशीला रमणी ईश्वर का सब से उत्तम प्रकाश है, जिसमे वह संसार की शोभा बढ़ा रहा है। **'रवीन्द्रनाथ'**

( १३९ )

किसी दुष्टा स्त्री से विवाह होना संसार में सब से महान् दुःख है, जिस दुःख से ईश्वर पापियोंको धराता और धमकाता है। **'दि्जेन्द्रलाल'**

( १४० )

देवियाँ यदि चाहें तो स्वर्ग को नरक और नरक को स्वर्ग बना सकती हैं। धनी को निर्धन और निर्धन को धनवान् बना सकती हैं।

( १४१ )

स्त्री रूपी पुष्प का प्रेम रूपी सौरभ सारे संसार को सुरभित कर देता है और पुरुष रूपी भौरों को मस्त कर देता है।

( ४४२ )

हे स्त्री ! तू घर की मालिक बन कर जा। वहाँ जितने पुरुष हों, सब के साथ रानी की तरह बात चीत कर। **ऋग्वेद**

( १४३ )

किसी भी स्त्री के स्त्रीत्व को भङ्ग करने के पूर्व मर जाना ही एक उत्तम कर्म है। किसी स्त्री को पाप कर्म से बचा लेना सब से बड़ा काम है। **'म० गांधी'**

( १४४ )

जो पिता, भाई, पति और देवर अपना कल्याण चाहते हैं, उनको अपनी पुत्री ( कन्या ) स्त्री और भौजाई का कभी अपमान न करना चाहिये। जहाँ स्त्रियों का पूजन होता है वहाँ देवता निवास करते हैं। जिस घर में स्त्री पुरुष से और पुरुष स्त्री से सन्तुष्ट रहता है, वहाँ निश्चय नित्य कल्याण होता है। **'मनुस्मृति'**

( १४५ )

स्त्री पुरुष की अर्धाङ्गिनी है, उसका सब से बड़ा मित्र है। धर्म, अर्थ और काम का मूल है। जो उसका अपमान करता है, काल उसका नाश करता है! वह घर का धन और शोभा है। अतः उसकी सदा रक्षा करनी चाहिये। महाभाग्यवती और पुण्यात्मा स्त्री पूजनीय है।

**'महाभारत'**

( १४६ )

कितने ही मन्दबुद्धि कवियों ने स्त्रियों को गिरा दिया। वे कहते हैं कि स्त्री एक भारी बला है। साँप की तरह ज़हर से भरी है। घर को दुःख मय बनाने वाली कालरात्रि है। ये सब नाशवन्त कविता के झूठे कटाक्ष हैं। इस असार संसार में और सब पदार्थ तो परिश्रम से मिल जाते हैं, पर सुलक्षणा स्त्री केवल ईश्वर की कृपा ही से मिलती है। जिसकी स्त्री सुलक्षणा होती है, वह कभी दुःख को दुःख नहीं समझता। मुझे तो पूरा विश्वास है कि संसार अगर स्त्रियों के कहे मुताबिक चले तो दुनियाँ स्वर्ग बन जाय।

**'पोप'**

( १४७ )

सौन्दर्य से स्त्री अभिमानी बनती है। उत्तम गुणों से उसकी प्रशंसा होती है पर लज्जा से वह देवी बन जाती है।

**'शेक्सपियर'**

( १४८ )

सुकुमारी, विधाता ने तुझे पुरुष को ठिकाने लाने के लिये बनाया है। तू न होती तो हम पुरुष पशु जैसे होते। स्वर्ग में कौन-सी ऐसी चीज़ है जो तुझमें नहीं है? अद्भुत तेज, पवित्रता, सत्य, अनन्त आनन्द, और अमर प्रेम सभी तो तुझ में हैं।

**'आट्वे'**

( १४९ )

प्रत्येक देश में प्रत्येक जाति में और हर एक धर्म में मनुष्य को माता ही जैसा बनाती है, वैसा वह बनता है। **'सरएडमण्डवरटो'**

( १५० )

पुरुष की उन्नति और अवनति स्त्री पर अवलम्बित है। अगर वह सुशिक्षिता है तो उसकी उन्नति का कारण होती है, नहीं तो अवनति का। **'ला० ड० वर्ले'**

( १५१ )

स्मरण रक्खो कि तुम्हारा जीवन तुम्हारे विचारों से बनता है। तुम्हारी परिस्थिति तुम्हारे आन्तरिक विचारों का परिणाम है। परिस्थिति हमारे मनःस्थिति के अनुसार संकुचित या विकसित होती है। तुम कमज़ोर नहीं हो निर्बल नहीं हो, किन्तु बलवान हो। शान्त चित्त होकर अपने आन्तरिक बल के ख़जाने को ढूँढो और अपनी परिस्थिति पर अधिकार करो। यह आत्मोन्नति का विजय-मंत्र है।

**'नागर'**

( १५२ )

यह विश्वास होना ही उन्नति का मूलमन्त्र है—ऐसा कोई कार्य नहीं है जो मनुष्य नहीं कर सकता है। असम्भव कुछ नहीं है।

( १५३ )

किसी भी कामको 'मैं नहीं कर सकता' ऐसा कभी मत कहो। कठिन से कठिन काम को "मैं कर सकता हूँ" ऐसा कहो, ऐसा ही मानो और ऐसा ही करो। बस इसी एक उपाय से तुम उन्नति के उच्चतम शिखर पर पहुँच जाओगे।

( १५४ )

आत्मज्ञान, आत्मसम्मान और आत्मसंयम अर्थात् अपने आपको जानना, अपने आपका आदर करना और अपने आपको अधिकार में रखना ( क़ाबू में रखना ) इन तीन उपायों से ही सब सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं और "मैं कर सकता हूँ" (I CAN) इस संकेत का नियम पूर्वक जप करते रहने से यही तीनों गुण प्राप्त होते हैं। 'टेनीसन,

( १५५ )

प्रातःकाल और सायंकाल नेत्र मूँद ध्यान से यह भावना रखो—( १ ) 'मैं ईश्वर स्वरूप हूँ। इस काम के लिए परमेश्वर ने मुझे ही उपयुक्त समझा है, इससे मैं इसे सर्वोत्तम प्रकार से करूँगा।' ( २ ) मैं ईश्वर का एक शस्त्र हूँ। ईश्वर का शस्त्र कभी निष्फल नहीं जाता, इससे इस कार्य में मैं अवश्य सफलता प्राप्त करूँगा। ( ३ ) जिन कार्यों में मैं हाथ डालूँगा उनमें अवश्य विजयी होऊँगा, क्योंकि सफलता मेरा जन्म सिद्ध स्वत्व है। 'थोलंबिया'

( १५६ )

प्रकृति का यह स्वर्णमय उपदेश है कि "जो मनुष्य भाग्यवान् या भाग्यहीन, जैसा कुछ भी अपने आपको मानता है वह वैसा ही बनता रहता है। 'शिवदत्त'

( १५७ )

आनन्द प्राप्ति के चार साधन हैं—( १ ) सत्संग ( २ ) श्रवण और पठन ( ३ ) निदिध्यासन और ( ४ ) परोपकार। 'तारा'

( १५८ )

अपमानित पुरुष सुख से सोता है, सुख से जागता है और सुखपूर्वक संसार में विचरण करता है, परन्तु अपमान करने वाला पुरुष विनाश को प्राप्त हो जाता है। 'मनुस्मृति'

( १५९ )

क्षमा अहिंसा है, क्षमा ही धर्म है और क्षमा ही इन्द्रिय निग्रह है। क्षमाही दया, यज्ञ और धैर्य कहलाती है। क्षमावान पुरुष स्वर्ग को प्राप्त करता है। क्षमावान ही को मोक्ष मिलती है और क्षमावान ही तीर्थ कहलाता है। **'श्रीबुद्धगौतमसंहिता'**

( १६० )

धन होने का अर्थ यह है कि उससे सुख तथा शान्ति मिले, भय रहित हो जाय, स्वतंत्रता पूर्वक जीवन निर्वाह हो और आनन्दमय जीवन व्यतीत हो। यदि यह सब बातें न हुईं तो लोग तुम्हें चाहे कितनाही धनी कहें, किन्तु वास्तविक में तुम दरिद्री हो, महा दरिद्री हो।

( १६१ )

किसी अपकार के लिये बदला लेनेसे बढ़ कर कोई सुगम वस्तु नहीं है, परन्तु साथ ही उसे क्षमा करने से बढ़कर कोई दूसरा उत्तम काम नहीं है।

( १६२ )

अपने मनको जीतने से बढ़ कर कोई जीत नहीं है। अपराध की अवहेलना करना ही अपराध का बदला लेना है।

( १६३ )

मूर्ख मनुष्य ही मृत्यु से डरते हैं और अमर होने की इच्छा करते हैं।

( १६४ )

ऐसा कहा जाता है सफेद बालों का बड़ा आदर होता है। यह बात सच है, परन्तु सद्गुण यौवन का भी मान बढ़ा सकता है। बिना सद्गुणों के बुढ़ापे का प्रभाव आत्मा की अपेक्षा शरीर पर ही अधिक पड़ता है।

( १६५ )

जब तक तुम घास के बिछौने पर लेटे हो तब तक तुम्हें बड़ी गहरी नींद आवेगी, किन्तु जब गुलाब के फूलों का बिछौना सोने को मिलेगा तो काँटो से बचने की चौकसी करनी पड़ेगी।

( १६६ )

प्रेम ही सर्वस्व है। वही जीवन की तालिका है और उसकी ही सत्ता से समस्त जगत चल रहा है।

( १६७ )

द्रव्यवान पुरुष को चाहिये कि वे प्रति दिन द्रव्यका सदुपयोग करे। यही उस द्रव्यका भोग है। एक ऐसा भी समय आवेगा कि अतुल धन अपनी मृत्यु के बाद छोड़ जाना लज्जास्पद होगा।

( १६८ )

ब्रह्मचर्य की अखण्डता से परमात्मा का सहज में लाभ होता है।

**'वलस्यय'**

( १६९ )

हमें ऐसे मनुष्य चाहिये जिनके शरीर की नसें लोहे की भाँति और स्नायु इस्पात की तरह दृढ़ हों। जिनकी देह में ऐसा मन हो, जिसका संगठन बज्र से हुआ हो। हमें चाहिये पराक्रम मनुष्यत्व, क्षात्र वीर्य, और ब्रह्मतेज। यह सब ब्रह्मचर्य से ही हो सकता है।

( १७० )

जिसका वीर्य ब्रह्मतेज के द्वारा वशीभूत है, उसका मन वशीभूत होता है। मन के वशीभूत होने से अन्तःकरण में ब्रह्मज्ञान का स्फुरण होता है। ये ही सब आध्यात्मिक उन्नति होने के प्रमाण हैं।

( १७१ )

इन्द्रियों के विषय में ( भोग विलास में ) सुख को मत ढूँढ़ो। हे इन्द्रियों के दास! अपनी इस निष्फल और बाहिरी खोज को छोड़ दो। अमरत्व का महासागर तुम्हारे भीतर है। स्वर्ग का राज्य तुम्हारे ही भीतर है। वह सब ब्रह्मचर्य से ही सध सकता है।

( १७२ )

जिसके शरीर में वीर्य सुरक्षित रहता है उसे आरोग्य, वृद्धि, बल और पराक्रम बढ़ के अमोघ सुख प्राप्त होता है।

( १७३ )

'ब्रह्मचर्य प्रतिष्ठायां वीर्य लाभः!' यह योग शास्त्र का बड़ा गम्भीर सिद्धान्त है। शरीर की रक्षा और पुष्टि के लिये ब्रह्मचर्य तथा व्यायाम आवश्यक है।

( १७४ )

वृथा गर्व से बढ़कर और कौन सी चीज़ ऐसी है जो मनुष्य को आँखों पर पट्टी बाँधती और उसकी वास्तविक अवस्था को उससे छिपाती है? देख, जब तू अपने आपको नहीं देखता तब दूसरे बहुत अच्छी तरह तेरे गुप्त रहस्यों को देखते हैं।

( १७५ )

जिस प्रकार पोस्ट का फूल देखने में सुन्दर और उज्वल होने पर भी सुगन्ध हीन और निष्प्रयोजन होता है वैसे ही वह मनुष्य है जो कोई उत्तम गुण न होने पर भी अपने आपको सर्व श्रेष्ठ और परम बुद्धिमान समझता है।

( १७६ )

हम यहाँ खेलने के लिए नहीं आये, हमारे आगे कर्मों का बड़ा भारी पर्वत पड़ा है, हमें व्यर्थ में समय को न खोकर अपना काम करने में लग जाना चाहिये।

( १७७ )

काम करने से सदा सुख ही होगा, ऐसा तो कुछ है ही नहीं, लेकिन बिना काम किये सुख नहीं मिलने का यह निश्चयात्मक है।

( १७८ )

अपने दिल में जो विचार आते हैं तदनुसार अपना स्वभाव बनता है इसलिये बुरे विचार अपने दिल में नहीं आवें इस बात की सावधानी अवश्य रखना।

( १७९ )

सुख को बाहिर ढूढ़ने को कोई आवश्यकता नहीं, वह तुम्हारे अन्तः-करण में ही तुम्हें मिलेगा।

( १८० )

स्त्री की परीक्षा करनी हो तो वह दूसरी स्त्रियों के बारे में क्या कहती है उस पर से कर लेना चाहिये।

( १८१ )

गया वक्त, गई उमर, छूटा हुआ बाण और फेंका हुआ पत्थर फिर हाथ नहीं आता है।

( १८२ )

थोड़े हर्फ़्तों में ज्यादह लिखना तथा थोड़ा बोलकर अधिक कार्य कर बताना बुद्धिमानो का चिन्ह है।

( १८३ )

विपत काल जैसा और कोई शिक्षक नहीं है।

( १८४ )

सच्चा ज्ञान, विश्व और मनुष्य जाति इन्हीं के अवलोकन से मिलता है।

( १८५ )

पाप—वृक्ष की शाखाओं को काटकर स्वस्थ नहीं वैठना चाहिये उनका मूल भी नष्ट कर देना चाहिये।

( १८६ )

प्रकृति ने सोच विचार कर निष्पक्षपात से सारे प्राणियों को एक चीज़ दी है-वह है मृत्यु। मनुष्य बुद्धिमान् है, प्यारा है, इसलिये इसको दो वार और गधा, घोड़ों को एक बार मरना, ऐसा पक्षपात नहीं है। प्रकृति पक्षपात नहीं करती।

( १८७ )

मुझे जो चीज प्रिय हो वह यदि नहीं मिल सकी तो जो मुझे मिलेगी उसे मैं प्रिय समझ स्वीकार करलूँगा।

( १८८ )

हमें स्वयं के दुःख में चूर हो जाने से दूसरों के दुःख के बारे में बिचार करने के लिये हमें समय नहीं मिलता। यदि पड़ोसी के दुःख-समय हमने ज़रा-सी सहानुभूति दिखलाई तो उतना ही हमारे दुःख का बोझ कम होगा।

( १८९ )

मानव जीवन के कर्तव्य बहुत ही उच्च और आदर्श होते हैं जो अपने कर्तव्य सदाचार से गिरे हुए हैं तो कहना चाहिये कि अभी सेवा करना अपने को आता नहीं है और अपने अपने कर्तव्यों को नहीं जानते हैं।

( १९० )

पढ़ने से मनुष्य सुधरता नहीं है, किन्तु सदाचार से ही सुधरता है, उन्नति प्राप्त करता है। जितना आपका लक्ष्य पढ़ने में है उससे कई लाख गुण सदाचार की रक्खो। "लाख मन ज्ञान से एक मुट्ठी चरित्र उत्तम है।"

( १९१ )

सदाचार की प्राप्ति शुभ संस्कार और मन वचन कार्य की विशुद्धता पर ही निर्भर है इसलिये धार्मिक नीति का बालकों को सब से पहिले ज्ञान करावो और आपको स्वयं वीर्य विशुद्ध ( जाति-व्यवस्था ) मनविशुद्धि ( सदाचार का पालन ) भोजन विशुद्ध संस्कार विशुद्ध (तनविशुद्धि) वचन विशुद्धि और आत्मज्ञानविशुद्ध ( आगम विशुद्ध ) पर पूर्ण ध्यान देना चाहिये।

( १९२ )

हे मनुष्य ! प्रकृति तुझे चल चित्त होने के लिये बाध्य करती है, इसलिये तू हर वक्त चौकन्ना रह। तू माता के पेट से ही अस्थिर और चलायमान है, तू अपने पिता के वीर्य से ही परिवर्तनशील है, फिर तू दृढ़ कैसे हो सकता है।

( १९३ )

जिन्होंने तुझे शरीर दिया है उन्होंने तुझे निर्बलता दी है, परन्तु जिसने आत्मा दी है उसने तुझे दृढ़ मति भी दी है उसका उपयोग कर और तू बुद्धिमान् बन जावेगा, बुद्धिमान् बन सुखी रहेगा।

( १९४ )

हे मूर्ख ! क्या धन से सद्गुण अधिक मूल्यवान नहीं ? क्या पाप दरिद्रता से अधिक नाच नहीं ? प्रत्येक मनुष्य की शक्ति में उसकी आवश्यकताओं के लिये काफी सामग्री है, तू इसी पर सन्तुष्ट रह, फिर तू देखेगा कि माया के दास के दुःखों पर तेरा आनन्द हँसी उड़ायगा।

( १९५ )

प्रकृति ने सोने को पृथ्वी के नीचे छिपाया है मानो वह देखने के योग्य वस्तु नहीं परन्तु चाँदी तेरे पाँव के नीचे हा पड़ी रहती है, क्या

( २०९ )

मुझे खुश रहना पसन्द है, पर लाख रुपये का मालिक बनकर भी उदास रहना मैं नहीं चाहता। 'ह्यूम'

( २१० )

जो कुछ काम करो उसको पूरे उद्योग और उत्साह से करो उद्योग उत्साह और धीरज बड़ी भारी शक्ति है। 'मदन मो० मा०'

( २११ )

आलस्य ही दरिद्रता का घर है। जो आलस्य नहीं करता लक्ष्मी उसी की मिहनत को सफल बनाती हैं।

( २१२ )

मेरा विचार है कि मेरा जीवन समस्त जाति के लिये है और जब तक मैं जीता रहूं तब तक उसके लिये जो कुछ कर सकूं वह करना मेरा कर्तव्य है। मनुष्य समाज की उन्नति की पहिली शर्त यह है कि पहिले काम करने वाले को दूसरे मनुष्यों की निगाहों में मूर्ख बनने को तैयार रहना चाहिये। मेरी इच्छा है कि मेरी मृत्यु होने से पहिले मैं अपनी पूरी शक्ति इस काम में खर्च कर दूं। क्योंकि जितना सख्त काम मैं करूँगा उतना ही ज़्यादा समय मैं ज़िन्दा रहूँगा। मुझे जीवन, जीवन के ही लिये प्यारा लगता है मुझे अपना जीवन 'कुछ देर जलने वाले दीपक' की तरह नहीं मालूम होता, वरन धधकती हुई मशाल की तरह जान पड़ता है। मैं चाहता हूँ कि जब मेरा जीवन यमदेव के अर्पण हो, उससे पहिले इस मशाल से जगत को जितना प्रकाश दे सकूँ उतना अवश्य देना चाहिये। 'बर्नार्ड शा'

( २१३ )

अपनी जीभ को बन्द और ओठों को सी रखो। ऐसा न हो कि तुम्हारे ही मुँह से निकले शब्द तुम्हारी शान्ति को भंग करदे।

( २१४ )

बहुत बोलने से पश्चात्ताप करना पड़ता है। चुपचाप रहने में ही कल्याण है।

( २१५ )

अपनी बड़ाई अपने मुख से न करो, नहीं तो लोग तुम्हारा तिरस्कार करेंगे। दूसरों का भी उपहास न करो, क्योंकि इसमें तुम्हारी हानि होने की सम्भावना है।

( २१६ )

अपने को अज्ञानी जानना ही ज्ञानी होने की पहिली सीढ़ी है। यदि तुम चाहते हो कि दूसरे तुमको मूर्ख न समझें तो तुम भी अपने को बुद्धिमान् समझना छोड़ दो।

( २१७ )

दूसरों की आलोचना करते समय बहुत ही सावधानी और उदारता रखनी चाहिये। दूसरों के दोषों को ढूँढने की अपेक्षा उनके सद्गुणों को खोजने का प्रयत्न करना चाहिये।

( २१८ )

बुरी लगने वाली हँसी दिल्लगी कभी मत करो, इससे मित्र शत्रु बन जाते हैं जो अपनी जीभ वश में नहीं रख सकता वह संकट में पड़ता है।

( २१९ )

अपने काम पर ध्यान लगाओ, वृथा दूसरों से छेड़-छाड़ करना बुरा है। निकम्मे रहने से काम में लगा रहना कहीं अच्छा है।

( २२० )

बढ़ती होने पर असावधान न रहो, अथवा बहुत-सा धन मिल जाने पर मितव्ययता को तिलांजलि न दे दो। जिसका ध्यान निरुपयोगी बातों की तरफ अधिक रहता है, उसे अन्त में जीवन की आवश्यक बातों के लिये भी शोक करना पड़ता है।

( २२१ )

निर्धन को बहुत वस्तुओं की आवश्यकता रहती है; परन्तु लोभी पुरुष को सब वस्तुओं की इच्छा रहती है। **'सोने'**

( २२२ )

मनो विनोद के जितने काम हैं, उनमें व्यायाम सम्बन्धी क्रीड़ा प्रशंसनीय है। **'सरजेन्सपैगट'**

( २२३ )

यदि तुम गृहस्थ का कर्तव्य पालन भले प्रकार से करते हो तो तुम्हें दूर जाकर जप-तप करने की क्या आवश्यकता है। **'कनफ्यूशस'**

( २२४ )

अपने मित्रों को चुनने में बहुत सावधानी से काम लो। **'सिसरो'**

( २२५ )

तुम किन आदमियों में रहते हो यह मुझे बतला दो, मैं तुम्हें यह बतला दूँगा कि तुम कैसे आदमी हो। **'स्पेन की कहावत'**

( २२६ )

मित्रता मानव जीवन का रत्न है। मित्र हीन मनुष्य बड़ी दया का पात्र है-विशेष कर इसलिये कि ऐसी दशा उसकी अपने ही दोष से हुई है। **'लिली'**

( २२७ )

अच्छी स्त्री से बढ़कर संसार में कोई सुख नहीं। **'साइमोनीडीज'**

( २२८ )

आनन्द दायक विवाह नवजीवन का आरम्भ है सुख और उपयोगिता का सूत्रपात है, गई बीती बातों का, अविवेक दोषों और भूलों का परिशोधक है, नई आशा, नवोत्साह और बल का संचारक है, सुख पूर्ण घर स्वर्ग के तुल्य है।

( २२९ )

एक माता सौ मास्टरों की शक्ति रखती है। **'हरबर्ट'**

( २३० )

धोखा खाने की अपेक्षा धोखा देना बुरा है।

( २३१ )

वीर लोग एक ही बार मृत्यु के ग्रास होते हैं, किन्तु कायर मृत्यु आने के पहिले कई बार मर चुकते हैं। **'शेक्सपियर'**

( २३२ )

जो समझता है कि मैं सब कुछ जानता हूँ, वह कुछ भी नहीं जानता और जो समझता है कि मैं अज्ञान हूँ वह बहुत कुछ जानता है।

**'स्वामी विवेकानन्द'**

( २३३ )

'कर्मक्षेत्र की अच्छी तरह जाँच किये बिना लड़ाई न छेड़ो, न कोई काम शुरू करो। दुश्मन को छोटा मत समझो। **'थिरुक्लुवर'**

( २३४ )

जो पराई स्त्री को पाप की दृष्टि से देखता है वह ईश्वर के कोप को जगाता है और अपने लिये नरक का मार्ग साफ करता है।

**'स्वामी रामतीर्थ'**

( २३५ )

विदेशी राज्य कितना भी दयालु और हितैषी हो, वह हमें विना दबाये न छोड़ेगा। उसका उद्देश्य कितना भी अच्छा हो, किन्तु उससे हमारा अहित छोड़ हित कदापि नहीं हो सकता।

'अरविन्दघोष'

( २३६ )

आध्यात्मिक जीवन के मार्ग को जो ग्रहण करना चाहे, उससे मैं हर एक के सामने यही आदर्श वाक्य रक्खूँगा कि 'चिन्ता मत करो।'

'टी० एल० वास्वानी'

( २३७ )

जिस पुरुष में क्षमा है, उसको कवच से क्या काम ? जिस मनुष्य में क्रोध है, उसको और शत्रु क्या चाहिये ? जिसके मित्र हैं उसको औषधि का क्या काम है जिसके पास विद्या है, उसको और धन की क्या आवश्यकता है ? जिसको लज्जा है, उसको भूषणों से क्या प्रयोजन और जिसमें सुन्दर कविता करने की शक्ति है, उसके सामने राज्य क्या है ?

'भर्तृहरि'

( २३८ )

जो हर्ष के अवसर पर अत्यन्त आल्हादित और विपत्ति में अत्यन्त दुःखित नहीं होता और जो पदार्थों की प्राप्तिकी उत्कट इच्छा नहीं रखता और जिसने कर्मके शुभ और अशुभ फल मन से त्याग दिये हैं, वह भक्तिमान् पुरुष मुझे प्रिय है। 'भगवान् श्रीकृष्ण'

( २३९ )

वही विद्वान् वास्तव में भाग्यवान् है, जो पहिले स्वयम् सुमार्ग पर चलकर पीछे दूसरों को उस पर चलने का उपदेश देता है और क़ानून

वह है जो दूसरों को सिखाता है और आप उल्टी चाल चलता है। वह असल में उपदेशों का खजांची है इसलिये औरों को तो लाभ पहुँचाता है, पर स्वयं नहीं भोग सकता।

'वतली मूस हकीम'

( २४० )

अपने मन पर विजय पाना ही सबसे बड़ी विजय है। जिसने अपने मन पर विजय प्राप्त करली, वह संसार का अधिपति हो चुका। 'लवक'

( २४१ )

रुपये पैसे का लेन देन और अपनी माँगों का हिसाब हाथों हाथ साफ रक्खो।

( २४२ )

कठिनाइयों से भय खाना ही मनुष्यता से च्युत होना है।

( २४३ )

कठिनाइयाँ हमारे साथ अशेष उपकार करती हैं। वे हमारे अन्दर साहस भरती हैं और हमें सब तरह से योग्य बनाती हैं। अतएव वीरो! इनसे डरो नहीं बल्कि इन्हें प्रसन्नता से गले लगाओ। 'तिलक'

( २४४ )

विना विद्या के मनुष्य विना सींग वाला पशु है। 'नीतिशास्त्र'

( २४५ )

जिसके पास 'धैर्य-धन' है, उसके पास समस्त संसार का खजाना है।

'महर्षि पतंजलि'

( २४६ )

१८ पुराण पढ़कर मुझे दो बातें ही हाथ लगी (१) परोपकार करना धर्म है (२) किसी को दुःख देना पाप है। 'मह० व्यास'

( २४७ )

संसार ही महापुरुष को ढूँढ़ता है, न कि महापुरुष संसार को ।

'कवि कालिदास'

( २४८ )

एहसान न मानने वाला प्राणी पृथ्वी पर व्यर्थ का बोझ है ।

'गिरधरदास'

( २४९ )

वास्तविक धर्म यह है कि जिस बात को मनुष्य अपने लिये उचित नहीं समझता, दूसरों के साथ वैसी बात हरगिज़ न करे । 'भीष्मपितामह'

( २५० )

जो मनुष्य दूसरों का धन चुराने में लँगड़ा है, जो पर स्त्री देखने में अँधा है, जो दूसरों की शिकायत करने में गूँगा है, वही संसार का प्यारा है ।

'नीतिशास्त्र'

( २५१ )

सफलता की कुंजी यह है कि असफलता के पश्चात् फिर हम उठ कर उसी प्रकार काम करने लगे, जैसे पहिले करते थे । 'रस्किन'

( २५२ )

दूसरों की सेवा करना अपनी सेवा करना है । 'एमर्सन'

( २५३ )

जहाँ अच्छी बात का आदर न हो वहाँ चुप रहना ही बोलने से अच्छा है । 'अरस्तू'

( २५४ )

संसार में कोई वस्तु बेकार नहीं, सब अपनी अपनी जगह काम देती है । 'लांगफेलो'

( २५५ )

माँगना एक लज्जास्पद कार्य है। प्राप्त करना ही सच्चे मनुष्यों का कर्तव्य है। 'म० गांधी'

( २५६ )

सबसे प्रेम करो और बहुत कम पर भरोसा। परन्तु किसी के साथ बुराई न करो। 'शेक्सपियर'

( २५७ )

जो व्यक्ति अपने भेद को छिपा रखता है, वह अपनी सलामती अपने कब्जे में रखता है। 'हजरत उमर'

( २५८ )

कार्य करो, संसार का सार काम है। कीर्त्ति की प्राप्ति काम करने ही से होती है। 'रेनाल्डस'

( २५९ )

जो बात किसी भी सभ्य पुरुष को अपने मुँह से नहीं निकालनी चाहिये उस बात या उन अपशब्दों का उत्तर देना भी असभ्यता है। 'स्टिफेन डगलास'

( २६० )

मनुष्यों को अपने कृत्यों का दण्ड अवश्य भोगना होगा। जप, तप और यज्ञ हवन करने से अपने किये की सजा से वे मुक्त नहीं हो सकते। 'महा० बुद्ध'

( २६१ )

जब तुम किसी की भलाई कर रहे हो तो यह ख्याल करके करो कि भलाई करना उत्तम है। यह ख्याल करके मत करो कि लोग तुम्हारी

प्रशंसा करेंगी। इसी प्रकार बुराई को इसलिये न छोड़ो कि लोग इसके लिये तुम्हारी निन्दा कर रहे हैं बल्कि यह समझ कर उसका परित्याग करो कि बुराई करना बुरा है।

( २६२ )

जो लोग तुम्हारी निन्दा करते हैं, तुम बदले में उनकी प्रशंसा करो। ऐसा करने से दूसरे लोग तुम्हारे गुणों की प्रशंसा करने लगेंगे और तुम्हारे दोषों पर ध्यान न देंगे।

( २६३ )

जिस पद की योग्यता तुममें न हो उसे स्वीकार न करो। अन्यथा वे लोग, जो इस पद के योग्य हैं तुम्हारा तिरस्कार करेंगे।

( २६४ )

जिस विषय का तुम्हें स्वयं ज्ञान नहीं है उसका उपदेश दूसरों को न करो। नहीं तो तुम्हारी पोल मालूम होने पर सब तुम्हारा उपहास करेंगे।

( २६५ )

जिसने तुम्हें हानि पहुँचाई है उससे मित्रता की आशा न करो जिसको हानि पहुँचाई गई है वह चाहे क्षमा भी करदे, पर जो हानि पहुँचाता है वह कभी क्षमा नहीं कर सकता।

( २६६ )

जो अपना ऋण अदा नहीं कर सकता वह उसके स्मरण मात्र से झेंप जाता है और जो दूसरों को हानि पहुँचाता है वह उस मनुष्य को देखकर लज्जित होता है।

( २६७ )

दूसरों की बढ़ती देखकर खेद न करो और न अपने शत्रु की आपत्ति देख कर खुशी मनाओ। यदि तुम ऐसा करोगे तो अवसर पड़ने पर दूसरे भी तुम्हारी नकल करेंगे।

( २६८ )

कोई साधारण मनुष्य जब दूसरों की कीर्ति सुनता है तो आश्चर्य करने लगता है, परन्तु जिसका हृदय विशाल है उसको इससे सुख मिलता है।

( २६९ )

चाहे कोई काम धूम-धड़ाके और गाजे-बाजे से किया गया हो, केवल इसलिये उसकी प्रशंसा न करो। महात्मा लोग बड़े-बड़े काम करते हैं पर उसके लिये ढोल पीटते नहीं फिरते।

( २७० )

अपने को नुकसान पहुँचाये बिना तुम दूसरे को सुखी नहीं कर सकते।

( २७१ )

जो मनुष्य परिश्रम करके आजीविका कर सकते हैं ऐसे मनुष्यों के लिये भिक्षा देना, सदाव्रत खोलना अधिक हानिकारक है, चाहे इस तरह का प्रबन्ध सरकार द्वारा हुआ हो, चाहे किसी समिति या संस्था द्वारा और चाहे किसी सेठ साहुकार के द्वारा। इसमें कुछ भी सन्देह नहीं कि ऐसी प्रथा नैतिक शक्ति का नाश करती है और दया के रूप में अत्यन्त क्रूरता का काम करती है।

( २७२ )

जो मनुष्य निरर्थक दान करते हैं, या अपनी तबियत को खुश करने के लिये दान करते हैं. या प्रशंसात्मक शब्दों को सुनकर दान करते हैं,

या माँगने वाले के दीन वचनों को सुनकर दान करते हैं, तो इस अनीति के बुरे फलों के ज़िम्मेदार वे ही हैं। पात्र अपात्र की परीक्षा किये विना और विना विचार किये दान करने की पद्धति को एकदम बन्द कर देना चाहिये। क्योंकि ऐसा दान सदा अपात्र को ही दिया जाता है और इससे लोग अधम और स्वार्थी बनते हैं।

( २७३ )

जो मनुष्य वृद्धावस्था या किसी और कारण से अशक्त हो गये हैं, अंध, अपंग, रोगी और काम करने के लिये बिलकुल असमर्थ हो गये हैं और जो अपनी स्थिति को किसी भी प्रकार सुधार नहीं सकते उनकी सहायता अवश्य करनी चाहिये। यह मनुष्य का धर्म है। वृद्धों की सेवा करनी होगी, अनाथों का रक्षण करना होगा, रोगियों की शुश्रूषा करनी पड़ेगी। पर इन प्रत्यक्ष बातों के लिये नियम बनाना या दान की व्यवस्था रचना अपने विवेक और वुद्धि को निरुपयोगी बनाने के समान है।

( २७४ )

जो ज्यादा से ज़्यादा देता है उसका देना सबसे अच्छा नहीं समझा जा सकता वरन जो अच्छे से अच्छा देता है वही ज्यादा से ज्यादा देता है। अगर हम बहुत ज़्यादा नहीं दे सकते तो उसकी कोई चिन्ता नहीं, पर जो हम दें उसे भाव पूर्वक देना चाहिये। जो भाव से देता है वही ज़्यादा देता है।

( २७५ )

चैक या बैंक की हुंडी ही में दान भरा हुआ है, ऐसा समझना भूल है। ग़रीब से ग़रीब मनुष्य भी धैर्य समभाव, विचार और युक्ति पूर्ण सलाह का दान कर सकता है। मानवजाति की उत्तम प्रकार की सेवा

करने के लिये द्रव्य की कुछ आवश्यकता नहीं है। मनुष्य चाहे निर्धन हो या धनवान, अगर उसमें दान करने की इच्छा हो, तो वह उसका मार्ग अवश्य निकाल लेगा।

( २७६ )

अपने हर रोज की आवश्यकताओं का बोझ हलका करना यह अपना काम है। यह ईश्वर का निर्माण किया हुआ पवित्र काम है और यही स्वर्गीय सन्देश है।

( २७७ )

भौतिक, मानसिक, नैतिक, किसी प्रकार की सम्पत्ति हो, उसे जनता के हित के लिये काम में लाना चाहिये। क्योंकि सब चीजों का मालिक केवल ईश्वर ही है।

( २७८ )

अगर तुम्हारी पुकार कोई नहीं सुनता तो तुम अपने रास्ते पर अकेले ही चलते जाओ। अगर सब लोग तुमसे डरते हैं और तुमसे कोई बात नहीं करना चाहता—तो, ओ अभागे, अपने दुःख की कहानी तू आप ही कह और जंगल के दरख्तों को सुना। अगर बियाबान में सफर करते हुए तेरा साथ सब छोड़ दें—या सब तेरे ख़िलाफ़ हो जायँ—तो उनकी कुछ परवाह मत कर, चला चल, काँटों को रौंदता हुआ अपने पैरों को अपने खून से निन्हाले, जिससे चुभने वाले काँटे तेरे खून की नमी से नरम हो जाँय। अगर रात भयानक अँधेरी है और सबने अपने घर के दरवाज़े बन्द कर लिये हैं, तो अपने दिल को छोटा न कर, बल्कि अपने सीने की हड्डी निकाल कर उसे बिजली की आग से जला और उस रोशनी में चला जा। 'रवीन्द्र'

( २७९ )

उत्कर्ष होने के लिये धैर्य की आवश्यकता है। 'सिसिरो'

( २८० )

संसार में सत्य के सिवाय संग्रह करने योग्य और कोई चीज़ नहीं है। 'चौसर'

( २८१ )

प्रसन्नचित्त या हर्षयुक्त स्वभाव सर्वश्रेष्ठ शक्तिवर्धक औषधि है। 'मारिस'

( २८२ )

सहिष्णुता दैव को भी जीत लेती है। 'कम्पवेल'

( २८३ )

नेत्रों को संकटों को देखने की आदत हो जाय तो बहुत सा भय कम हो जाता है। 'वर्क'

( २८४ )

जो कार्य हम करते हैं उनसे आदत बनती है, आदत से स्वभाव, स्वभाव से भवितव्यता बनती है। 'बोर्डमन'

( २८५ )

किसी में बुद्धि मांद्यता का दोष हो तो वह उद्योग से दूर हो जाता है। 'मार्कस ओरलियस'

( २८६ )

सुखों का त्याग करने से वे आप ही पीछे पीछे चले आते हैं। 'फ्रांकलिन'

( २८७ )

क्रोध के आदि में मूर्खता व अन्त में पश्चाताप है। 'मोन्डर'

( २८८ )

स्वावलम्बन का भाव ही प्रत्येक मनुष्य की उन्नति का मुख्य कारण है। 'इस्माइल्ड'

( २८९ )

वह मनुष्य स्वतंत्र नहीं है जो अपने आप को क़ाबू में नहीं रखता। 'पीथागोरस'

( २९० )

मै ऐसे मनुष्य को नहा चाहता जो झूठ से घृणा नहीं करता। 'पार्थिस'

( २९१ )

तुच्छ से तुच्छ फूल भी हमारे लिये शिक्षा और नीति का भंडार है। 'वर्डस वर्थ'

( २९२ )

तुम्हारा शरीर पवित्रात्मा का मन्दिर है उसको मनमानी हानि करने का तुम्हें कोई अधिकार नहीं है। 'सेन्टपाल'

( २९३ )

जो मूर्ख है उसे अपना मुँह बन्द करने नहीं आता। 'सालोमन'

( २९४ )

बहमी को काम पर नहीं लगाना, यदि लगाया तो वहम नहीं रखना चाहिये। 'कानफ्ल्युशस'

( २९५ )

सब बुरी बातों का बीज अज्ञान है। 'माँटेन'

( २९६ )

हरएक की प्रकृति में दया, करुणा और कुकर्म से अरुचि के अंकुर है। चाहे वह उन्हें सींच कर बढ़ाये चाहे सुखा दे। यह सब गुण केवल अभ्यास से पुष्ट हो सकते हैं। 'मेनसियस'

( २९७ )

बिना पुरुषार्थ के धन नहीं मिलता। लक्ष्मी सदा पुरुषार्थ के वश में रहती है। 'एबल थाट्स'

( २९८ )

सन्तोष रूपी अमृत से तृप्त लोगों को जो शान्ति और सुख होता है, वह धन के लोभियों को, जो, इधर उधर दौड़ा करते हैं, कदापि प्राप्त नहीं होता। 'चाणक्य'

( २९९ )

जो लोग विधिवत् ब्रह्मचर्य का पालन करते हैं, वे चिरायु सुन्दर शरीर, दृढ़-कर्तव्य, तेजस्विता पूर्ण और बड़े पराक्रमी होते हैं।

'हेमचन्द्रसूरि'

( ३०० )

जो इष्ट की प्राप्ति और अनिष्ट के नाश करने का सदुपाय बताये, उसे वेद कहते हैं। 'शंकराचार्य'

( ३०१ )

सुख चाहनेवाला विद्या को और विद्या का प्रेमी सुखको छोड़ दें, क्योंकि सुखार्थी को विद्या नहीं आती और विद्यार्थी को सुख नहीं मिलता।

'विदुर नीति'

( ३०२ )

ब्रह्मज्ञान के प्राप्त हो जाने पर मनुष्य शीघ्र ही परमानन्द का अधिकारी होता है। 'कृष्ण'

( ३०३ )

यदि कोई मुझसे कहे कि किस देश के आकाश के नीचे मनुष्य के अन्तः करण की पूर्णता प्राप्त हुई, तो मैं कहूँगी कि वह देश भारत वर्ष है। 'मिसेज एनीबेसेन्ट'

( ३०४ )

सच्चरित्रता और सत्यता के लिये आर्य जाति चिरकाल से विश्व में प्रसिद्ध है। 'मेगेस्थनीज़'

( ३०५ )

धर्म तथा सभ्यता के प्राचीनत्व के विचार से पृथ्वी की कोई भी जाति आर्य जाति के समकक्ष नहीं। 'ह्यूनसांग'

( ३०६ )

कोमल स्वभाव मनुष्य के लिये भारी पूंजी है। 'मुहम्मद'

( ३०७ )

जो मूर्ख अपनी मूर्खता को जानता है, वह धीरे धीरे सीख सकता है, पर जो मूर्ख अपने को बुद्धिमान समझता है, उसका रोग असाध्य है। 'अफलातून'

( ३०८ )

कर्म से केवल मन की ही शुद्धि होती है, तत्त्व वस्तु नहीं प्राप्त हो सकती। वह तो उपासना से ही मिलती है और उसके लिये मुख्य उपाय ध्यान है। शंकराचार्य'

( ३०९ )

हर एक को चाहिये कि जैसा दूसरे को उपदेश करता है, वैसा पहिले अपने को बना ले; क्योंकि जिसने अपना मन और इन्द्रियों को वश में कर लिया, वह दूसरों को भी वश में कर सकता है। कठिन काम अपने आपको जीतना है। 'कानफ्यूसियस'

( ३१० )

जब तक बात तुम्हारे मुँह से नहीं निकली है, तब तक वह तुम्हारे वश में है। ज्योंही वह मुँह से निकल गई कि तुम उसके वश में हो गये। 'सुकुरात'

( ३११ )

विद्या के सिवाय और कोई श्रेष्ठ दान नहीं है। 'फुलर'

( ३१२ )

इस विश्व में सर्वांग सुन्दर परिपूर्ण ऐसी क्या वस्तु है? विद्या। 'प्लेटो'

( ३१३ )

अपने बच्चों को कुमार्ग पर पहुँचाना या ऐसा अवसर देना, उसकी अपेक्षा उनकी कमर में पत्थर बाँधकर समुद्र में डाल देना अच्छा है। 'सेन्टन्यूक'

( ३१४ )

पुस्तक पढ़ने से जो सुख प्राप्त होता है उसके आगे सब सुख तुच्छ है। 'मे काले'

( ३१५ )

दूसरों के दोष निकालने की आवश्यकता हो तो उस समय बहुत प्रेम से बोलना और दोष देना हो तो खानगी में, किन्तु प्रशंसा करना हो तो जाहिर में करना। 'शेक्सपिअर'

( ३१६ )

मनुष्य को कभी निकम्मा नहीं रहना चाहिये; क्योंकि शरीर और मन निकम्में पाये गये कि कामादि शत्रु चढ़ाई करने के लिये तैयार रहते हैं। मानसिक स्वास्थ, शरीर सम्पत्ति निकम्मापन, यह होने से मनुष्य को पापाचरण का मोह उत्पन्न होता है। कुवासना उत्पन्न न होने के लिये श्रम का बड़ा भारी उपयोग है। **'मिचेल एजंलो'**

( ३१७ )

तरुणावस्था में मनुष्य थक जाते हैं, उनका उत्साह कम होकर उनके हाथ से जैसा चाहिये, वैसा काम नहीं हो सकता, इसका कारण यह है कि उन्हें ज्यादा खाने की आदत लगी रहती है परन्तु वे व्यायाम मानो करते ही नहीं। **'एडिसन'**

( ३१८ )

अखिल विश्व का धर्म एक ही है, उस धर्म का आदि मध्य और अन्त प्रेम ही है, सर्वत्र प्रेम, सिवाय प्रेम के और कुछ नहीं। सच्चे भाव से अंतः करण पूर्वक परमेश्वर पर प्रेम करो, वैसा ही उनके प्रत्येक पुत्रों पर करो। इतना किया तो स्वर्ग की चावी मानो तुम्हारे ही हाथ में है। **'बिशप बरोकस'**

( ३१९ )

जिस मनुष्य को बच्चों से प्रेम नहीं, जिसका हृदय बच्चों के मीठे स्वर से गद्‌गद नहीं हो जाता वह मनुष्य कहलाने योग्य नहीं है। **'ईसा'**

( ३२० )

स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन से बढ़कर कोई आनन्द नहीं है, जिसका शरीर निरोगी व मन स्वस्थ है वह अवश्य सुखी है। **'लार्ड वेकन'**

( ३२१ )

यदि झूठ बोलकर तुम्हें लाख रुपये भी मिलें तो तुम उन्हें ख़ाक समझो। यदि किसी की बेजा खुशामद करके तुम्हें उच्चपद मिलता हो तो ऐसे पद से पद-हीन रहना अच्छा समझो। धर्म और न्याय से कमाया हुआ एक पैसा चोरी और पापाचार के एक रुपये से अच्छा है; परन्तु बेईमानी दारी से दूध तक के खाने को धिक्कार है। **'कावेट'**

( ३२२ )

नैतिक ग्रंथों का पठन, अध्यात्म ग्रंथों का मनन, सदाचार की प्रवृत्ति शुभ संस्कार सत्संगति और आत्मज्ञान मानव जीवन में विकाश कर सकते हैं। मानव जीवन की यथार्थ उन्नति उक्त कारण कलापों से ही होगी।

( ३२३ )

मनुष्य कोई चीज़ नहीं। नेपोलियन ने क्या-क्या मनसूबे बाँधे, पर अन्त में उसे सेंट हेलीना में एक कैदी बनकर रहना पड़ा। जर्मन-सम्राट कैसर ने यूरोप के तख्त पर अपनी नज़र गड़ाई, आज वह एक मामूली आदमी है। ईश्वर को यही मंजूर था। हमको चाहिये कि हम ऐसे उदाहरणों पर विचार करें और नम्र बनें। **'म० गांधी'**

( ३२४ )

जो कुछ काम करो, पूरे उद्योग और उत्साह से करो। उद्योग, उत्साह और धीरज बड़ी भारी शक्ति है। **'मदनमोहन'**

( ३२५ )

जंगल के सुनसान में कोई पाप करो तुम देखोगे कि थोड़ी देर में तुम्हारी नीचे की घास उठ कर तुम्हारे ऊपर अभियोग चलायेगी। पत्थर निर्जीव पत्थर, और हरे भरे वृक्षों को जबान लग जायेंगी। वे तुम्हारे विरुद्ध आवाज़ उठायेंगे। तुम प्रकृति को, ईश्वर को धोखा नहीं दे सकते। **'रामतीर्थ'**

( ३२६ )

जो बारम्बार प्रेम करता है, वह प्रेम करना नहीं जानता। 'तुलसीदास'

( ३२७ )

साहस के बिना विद्या उस मोम के पुतले के समान है, जो देखने में तो सुन्दर लगता है, मगर किसी चीज़ के छू जाते ही पानी २ हो बहने लगता है। 'म० गांधी'

( ३२८ )

नम्रता से मनुष्य तो क्या देवता भी तुम्हारे वश में हो सकते हैं। 'लो० तिलक'

( ३२९ )

अमर वही है जो स्वदेश, जाति और धर्म पर मरते हैं। 'दयानंद'

( ३३० )

कोई काम कल पर मत छोड़ो। 'लार्ड ब्राउंस'

( ३३१ )

जो उपकार जताने का इच्छुक है, वह द्वार खट-खटाता है। जिसे प्रेम है उसके लिये द्वार खुला है। 'रवीन्द्रनाथ'

( ३३२ )

झूठ बोलना सबसे अवगुण है। 'इस्माइल्स'

( ३३३ )

यदि तुम्हें किसी चीज़ के पाने की इच्छा हो तो चोरी न करो। मेहनत से उसे प्राप्त करो। 'प्रो० ऐडीसन चार्ली'

( ३३४ )

मन की शान्ति अवस्था सद्गुणों के मधुर परिणामों से सदा उज्वल और प्रकाशमान रहती है। 'बीटी'

( ३३५ )

जो निरुत्साही, दीन और शोकाकुल बना रहता है, उसके सब कार्य नष्ट हो जाते हैं। **'म० बालमीकि'**

( ३३६ )

जो मनुष्य मन में उठे हुए क्रोध को दौड़ते हुए रथ के समान शीघ्र रोक लेता है, उसी को मैं सारथी कहता हूँ। क्रोध के अनुसार चलने वाले को केवल लगाम रखने वाला कहा जा सकता है। **'गौतम बुद्ध'**

( ३३७ )

स्त्रियाँ व्यवहार–चतुर तथा अपना मतलब साधने में बहुत तेज़ होती हैं। स्त्री को जिस चीज़ की ज़रूरत होती है, उसे देख कर वह सीधी वहीं पहुँचती है। जब स्त्री संसार में किसी चीज़ के पाने का निश्चय कर लेती है तो वह उसे प्राप्त करके ही छोड़ती है। यदि वह प्राप्य वस्तु पुरुष हो, तो कुछ न कहो। **'चार्ली चेपलिन'**

( ३३८ )

संसार की शान्ति काल्पनिक है और तब तक सदा ऐसी ही रहेगी, जब तक कि इन्द्रिय परायणता हो प्रधान वस्तु समझी जायेगी। शान्तिक आशा व्यर्थ है। यदि यहाँ ऐसी जातियाँ और ऐसे मनुष्य वर्तमान हों, जो दूसरों की अपेक्षा अपने को सर्वोपरि समझते हों, और जो अपने बड़प्पन को सिद्ध करने के लिये अन्याय, अत्याचार और शक्ति से काम लेने को तैयार रहते हों। **'क्राउण्ट ओक्रमा'**

( ३३९ )

सर्व श्रेष्ठ पुरस्कार वह है जो अधिकारियों को बिना माँगे मिले, और सर्वोत्तम प्रशंसा का अधिकारी वह है, जो उदार हृदय हो एवम् जो क्रोध की अग्नि को क्षमा के जल से बुझावे।

( ३४० )

हे मनुष्यो ! मुट्ठी भर भिक्षा के क्षुद्र दान से ही न घबरा जाओ। स्मरण रखो, कि तुम्हारा यह तुच्छ अपव्यय एक मानव सन्तान को, अपकर्म से बचा सकता है। आश्चर्य नहीं, कि वह उसे मृत्यु के मुख से भी बचा ले। **'रूसो'**

( ३४१ )

सर्वदा परमेश्वर से प्रार्थना करो और उसकी इच्छा को पूर्ण करने का प्रयत्न करो। लोभ और द्वेष से दूर रहो जिनके वशीभूत होकर योग्य पुरुष भी डाँवाडोल हो जाते हैं। संसार की माया में फँस कर अनेक शुद्ध आत्माएँ सत्य की पहिचान से विमुख हो जाती हैं। **अकबर'**

( ३४२ )

मनुष्य तुम्हारे विषय में चाहे जो कुछ कहें, परन्तु तुम जिस को सत्कार्य समझते हो, उसको अवश्य करो। निन्दा का विचार मत करो और न प्रशंसा की चाह करो। **'पेथागोरस'**

( ३४३ )

जो व्यक्ति ज्ञान का मार्ग अवलम्बन करता है, स्वयं भगवान् उसके लिये स्वर्ग का पथ निर्धारित कर देते हैं। **'मुहम्मद साहब'**

( ३४४ )

चालाकी से कोई महान् कार्य नहीं होता है। प्रेम सत्यानुराग और उत्साह की सहायता से सारे कार्य सम्पन्न होते हैं। अतएव पुरुषार्थ प्रगट करो। **'स्वामी विवेकानन्द'**

( ३४५ )

चाहे धन, मान, कुटुम्ब और प्राणों का त्याग हो जाय; परन्तु सत्य और अहिंसा का त्याग कभी न किया जाय, यही सब धर्मों का सार है। **'महात्मा गांधी'**

( ३४६ )

हे सौन्दर्य तू अपने को प्रेम के अन्दर ढूँढ, अपने दर्पण की मिथ्या प्रशंसा में नहीं। 'रवीन्द्र'

( ३४७ )

काम करने में मुस्तैद रहो, तुम अवश्य सफलता पाओगे। 'अज्ञात'

( ३४८ )

यदि तुम अपने ऊपर संसार को मोहित करना चाहते हो, यदि तुम्हें जगत के लोगों को अपने वश में करना है, तो तुम अपनी एक कुटेव को छोड़ दो। वह कुटेव एक मात्र कटु सम्भाषण है।

'गोस्वामी तुलसीदास'

( ३४९ )

जो मनुष्य समस्त भूतात्माओं के कल्याण में तत्पर है, वही मेरा परमप्रिय है। जो प्राणी मात्र की सेवा करता है; प्रेम करता है; वही मेरा भक्त और उपासक है। 'भगवान् श्रीकृष्ण'

( ३५० )

जो वीरता से भरा हुआ है जिसका नाम लोग बड़े गोरव से लेते हैं, शत्रु भी जिसके गुणों की प्रशंसा करता है, वही पुरुष वास्तव में पुरुष है। 'अज्ञात'

( ३५१ )

यदि किसी बाहिरी कारण से तुम्हें क्लेश पहुँचता हो, तो इस बात पर ध्यान दो कि वह वस्तु तुम्हें स्वयम् दुःख नहीं दे रही है; वरन् उस वस्तु की ओर तुम्हारी वैसी कल्पना है, जो तुम्हें भयभीत करती है। यदि तुम चाहो तो उस कल्पना को मन से अलग कर सकते हो।

'माकस आरलियस'

( ३५२ )

देश अथवा काल के प्रभाव से अपने मन का दृढ़ निश्चय बदलना ठीक नहीं। मन की स्थिरता ही उसका स्थान है। मन अपने भीतर ही स्वर्ग को नरक और नरक को स्वर्ग बना सकता है। 'मिल्टन'

( ३५३ )

मैत्री आत्माओं के विवाह का नाम है। 'वाल्टेयर'

( ३५४ )

यदि तुम पर बहुत विपत्ति आ जाय तो तुम हाथ पर हाथ धर कर मत बैठ रहो। ऐसे समय में भी दोस्तों के कपड़े और दुश्मनों की खाल उतार लो।

( ३५५ )

हे मनुष्य! मनुष्य बनो यही तुम्हारा प्रथम कर्तव्य है। चाहे कोई दीन हो या धनी, वृद्ध हो या बालक--सभी के साथ मनुष्य के समान व्यवहार करो। 'रूसो'

( ३५६ )

यदि आत्माभिमान सहित जीना सम्भव नहीं है, तो आत्माभिमान सहित मर जाना अच्छा है। जो अपने मान का मूल्य समझते हैं, वे ऐसा ही करते हैं। 'नाटशे'

( ३५७ )

जो कर्तव्य परायण हैं, जिनमें कर्तव्य शक्ति है, वे किसी दूसरे का मुँह नहीं ताकते। वे अवसर नहीं ढूँढ़ते, सिर्फ अवस्था देखते हैं और जैसी स्थिति रहती है, उसी की गुरुता के अनुसार वे व्यवस्था करते हैं। 'नेपोलियन'

( ३५८ )

जिसमें सत्य और सेवा, पूर्ण रूप से प्रकट हो, वह संसार के हृदयों का साम्राज्य अवश्य भोगेगा और अपनी मनोभिलाषा पूरी करेगा।

'महात्मा गांधी'

( ३५९ )

मन को हमेशा शान्त रखो। पवित्र विचारों को अपने हृदय में स्थान दो। फिर संसार में तुम्हारा कोई विरोध नहीं कर सकता।

'स्वामी रामतीर्थ'

( ३६० )

मृत्यु में अनेक एक हो जाता है, जीवन में एक अनेक रहता है।

रवीन्द्रनाथ टायगोर'

( ३६१ )

जो मनुष्य सांसारिक बातों से शिक्षा नहीं ग्रहण करता उसे बुद्धिमानों की शिक्षा कुछ लाभ नहीं पहुँचा सकती।

जो मनुष्य साहस और पुरुषार्थ से दैव ( भाग्य ) को पराजित कर देते हैं, वही इस लोक और परलोक के सम्पूर्ण सुखों को प्राप्त करते हैं।

'व्यास भगवान्'

( ३६२ )

उत्साह एक ऐसी वस्तु है, जिसके आगे बड़ी-बड़ी बलवती शक्तियाँ भी हार मानती हैं। उत्साही के सामने तरह तरह की बाधाएँ और कार्यावरोधक विपत्तियाँ सदा आज्ञापालिका दासियों की भाँति उपस्थित रहती हैं।

'टालस्टाय'

( ३६३ )

एकता का एक मात्र उपाय स्वाधीनता है। 'टामसपेन'

( ३६४ )

जो उन्नति हमारे इस मनुष्य शरीर से सम्भव है, उसके लिये मन और शरीर दोनों को काम करने की आवश्यकता है। **'जानसन'**

( ३६५ )

ईश्वर की सृष्टि में मनुष्य सब से श्रेष्ठ क्यों है ? इसलिये कि उसे विचार शक्ति दी गई है। **'अनवरसहेली'**

( ३६६ )

विलास प्रियता महापाप है। कर्तव्य पथ का सदा ध्यान रखो, चाहे सुअवसर हो अथवा कुअवसर। **'अकबर'**

( ३६७ )

शरीर जल से पवित्र होता है, मन सत्य से, आत्मा धर्म भक्ति से और बुद्धि ज्ञान से पवित्र होती है। **'मनु'**

( ३६८ )

जिसके हृदय में दया नहीं है, भगवान् उस पर दया नहीं करता। सब जीव भगवान् के परिवार हैं। जो व्यक्ति जीव मात्र की मंगल कामना के लिये सब से अधिक चेष्टा करता है, वही भगवान् का प्रियतम सेवक और श्रेष्ठ भक्त है। **'हजरत मुहम्मद'**

( ३६९ )

जहाँ विश्वास है, वहाँ प्रेम है, जहाँ प्रेम है, वहाँ शान्ति है; जहाँ शान्ति है, वहाँ ईश्वर हैं। जहाँ ईश्वर हैं, वहाँ कोई इच्छा नहीं।

( ३७० )

किसी भी राष्ट्र को उन्नत बनाने के लिये राष्ट्र में वीर माताओं की आवश्यकता है। **'नेपोलियन बोनापार्ट'**

( ३७१ )

सेवा धर्म परम गहन है, योगी लोग भी उसका पार नहीं पा सकते।

'भर्तृहरि'

( ३७२ )

संसार स्वप्न की तरह है, जिस प्रकार जागने पर स्वप्न झूठा प्रतीत होता है, उसी प्रकार आत्मा का ज्ञान होने पर यह संसार मिथ्या मालूम होता है।

'याज्ञवल्क'

( ३७३ )

व्यभिचार ही मनुष्य के पतन का मूल कारण है। जिस मनुष्य ने धोखे से भी पर स्त्री की तरफ अभिलाषा भरी दृष्टि से देख लिया है, उसने अपने मन में व्यभिचार कर लिया।

'महात्मा ईसा'

( ३७४ )

जो धोखे से धर्म की आड़ में पाप करता रहता है और मिथ्या मत प्रचार कर लोगों को ठगता है, उसके समान दूसरा पातकी नहीं हो सकता।

'जैन महामुनि जवाहरलाल'

( ३७५ )

ग़रीब को कभी नहीं सताना चाहिये, क्योंकि यद्यपि वह निर्बल है तो भी जैसे मरी हुई खाल की धोंकनी लोहे को भस्म कर देती है, वैसेही उसकी आह एक सम्राट् तक को भस्म कर देती है।

'रहीम खानखाना'

( ३७६ )

जो मङ्गलाचार युक्त है, निरन्तर जितेन्द्रिय है, जप, होम करते है, उनका विनिपात कभी नहीं होता।

'स्वायम्भुवमनु'

( ३७७ )

जिसने गर्व किया, उसका अवश्य पतन हुआ, इसके लाखों उदाहरण हैं। 'महर्षि दयानन्द'

( ३७८ )

मेरा हिन्दू धर्म पर सदा से ही विश्वास है, मुझे परम हर्ष है कि आज मैं उसी महान् धर्म की शरण में आ रही हूँ। मुझे विश्वास है कि संसार का यही हिन्दू धर्म अनादि है।

'मिस मिलर ( शर्मिष्ठा देवी )'

( ३७९ )

अपने धर्म-कर्म में ही कल्याण है। दूसरे के धर्म कर्म के प्रति ईर्षा करने और कराने वालों को भयंकर गति का सामना करना पड़ता है।

'भगवान् श्रीकृष्ण'

( ३८० )

प्रेम व्यवहार संसार का प्रत्यक्ष अमृत रस है। जिसको दो, वही प्रसन्न होकर पक्षपाती बन जाता है। 'मिस रोज'

( ३८१ )

उचित कामों को जहाँ तक हो सके, शीघ्र कर डालना चाहिये, किसी शुभ मुहूर्त की प्रतीक्षा नहीं करनी चाहिये, क्योंकि शुभ कामों का मुहूर्त शीघ्रता ही है। 'कार्लाइल'

( ३८२ )

जीवन संग्राम में विजय प्राप्त कर लेना कोई आसान काम नहीं है। उसके लिये अत्यन्त कठोर साधना की आवश्यकता है।

'सर आर्थर हेल्पस'

( ३८३ )

समस्त सांसारिक वासनाओं के पूर्ण होने के अतिरिक्त जो व्यक्ति पारलौकिक मुख वासनाओं की भी पूर्ति की अभिलाषा रखते हैं, वे सर्व प्रथम उदारता, कर्तव्य निष्ठा और परोपकारिता का अनुसरण करें ।

**'रस्किन'**

( ३८४ )

प्रत्येक प्राणी अपने विचार और कार्य को ओर सदैव ध्यान से देखें। विचारावलि प्रत्येक कार्य को जननी है, एवं चित्त की एकाग्रता या चित्त संयम उसका स्वामी है । **'आर्थर हेल्पस'**

( ३८५ )

बिना वेदनाओं के विजय नहीं मिलती । विजय गौरव विष पान की भाँति है । जो लोग जनता से अपने मस्तक पर यश का मुकुट रखवाना चाहते है, वे प्रत्येक कार्य को सोच विचार और अध्यवसाय के साथ करते है । **'कवीन्द्र रवीन्द्र'**

( ३८६ )

जो लोग गिरते है, खड़े होने की प्रकृति शक्ति उन्हीं में होती है । अतः गिरने के भय से अग्रगामी बनने के गौरव से वंचित न रहो ।

**'जोज़ेफ'**

( ३८७ )

सत्कार्य, आदर्श या शुभ समय को नहीं खोजता । **'ग्लाडस्टोन'**

( ३८८ )

कभी भूलकर भी अप्रिय व्यवहार मत करो । अप्रिय व्यवहार पशुत्व का द्योतक है । **'रहीम'**

( ३८९ )

यदि तुम्हारी इच्छा फूलों से सजे सिंहासन पर बैठने की है, तो वहाँ तक पहुँचने के लिये मार्ग में जितने भी कांटे मिलें, सबको अपने पैरों से रौंद डालो। रास्ते के समस्त रोड़ों को पार कर विजय प्राप्त करो।

'लिंकन'

( ३९० )

जो लोग अत्यन्त दुर्बल हैं, वे भी एक काम पर अपनी शक्ति को लगाकर कुछ न कुछ सिद्धि प्राप्त कर सकते हैं। 'कार्लाइल'

( ३९१ )

जो मनुष्य किसी आदर्श की खोज में सदा प्रयत्न किये जाता है, उसकी शक्ति की सीमा का पता पाना असम्भव है। 'जेनकिन'

( ३९२ )

पराजय ही उच्च शिक्षा है। जिन्हें उत्कर्ष प्राप्ति की इच्छा हो, वे सबसे प्रथम ऐसे कार्य करें जिससे पराजय का मूल्य ज्ञात हो सके, क्योंकि पराजय ही तो उन्नत होने का प्रथम सोपान है। 'वेण्डेल फ़िलिप्स'

( ३९३ )

यह कोई गौरव की बात नहीं है कि हमारा कभी पतन ही नहीं हुआ, जितनी बार पतन हो उतनी बार उठ सकने में ही गौरव है। 'गोल्डस्मिथ'

( ३९४ )

क्या आप जीवन को प्यार करते हैं ? यदि करते है, तो समय का अपव्यय क्यों करते हैं ? क्या आपको नहीं मालूम कि उसी के द्वारा आपके जीवन का गठन हुआ करता है। 'फ्रेंकलिन'

( ३९५ )

काम करो। संसार का सार काम है। कीर्ति की प्राप्ति काम करने से ही होती है। 'डेविल विम्की'

( ३९६ )

जो लोग बल शून्य हैं और इसके इच्छुक भी हैं, वे अपने सब ऐबों को दूर करें। इससे उन्हें आत्मिक बल प्राप्त होगा, जिससे वे बड़े से बड़े सामर्थ्यशाली अधिकारी वर्ग, साम्राज्य और प्रतापी लोगों को भी सहज ही में पछाड़ सकेंगे। 'महात्मा गांधी'

( ३९७ )

सत्य के साथ एक सौन्दर्य की पुट मिला दो घर भर तुम्हें दिल से प्यार करेगा। 'ग्लाडस्टोन'

( ३९८ )

कोई कितना ही करे, परन्तु जो स्वदेशी राज्य होता है, वह सर्वोपरि उत्तम होता है। 'दयानन्द सरस्वती'

( ३९९ )

हम लोग शरीर के सम्बन्ध में जितने ही संयम से काम लेंगे, उतनी ही हमारी और देश की भलाई होगी। 'महात्मा गांधी'

( ४०० )

हे स्त्री, तू घर की स्वामिनी बनकर जा। वहाँ जितने पुरुष हों, सब से रानी की तरह बात कर। 'ऋग्वेद'

( ४०१ )

पराजय क्या है ? सिर्फ शिक्षा। किसी उत्तम तर वस्तु की ओर प्रथम पदार्पण मात्र। 'डबल्यू० फिलिप्स'

( ४०२ )

वीरत्व का वास्तविक अर्थ पुरुषार्थ और इसमें सब गुणों का समावेश है, जो मनुष्योचित है—जिसके कारण मनुष्य वास्तविक मनुष्य है।

**'प्रोफे० बद्रीनाथ बर्मा'**

( ४०३ )

मनुष्य उसी को कहना चाहिये, जो मनन शील होकर स्वात्मवत् दूसरों के सुख-दुःख और हानि लाभ को समझे। **'म० दयानन्द'**

( ४०४ )

तारागण आकाश की कविता हैं, तो स्त्रियाँ पृथ्वी की कविता हैं। दुनिया के भाग्य की रक्षा इन्हीं के हाथ है। **'हारग्नेव'**

( ४०५ )

किसी महान वस्तु को ही अपना लक्ष्य बनाओ।

**'जानस्टुअट मिश्र'**

( ४०६ )

कार्य क्षेत्रकी अच्छी तरह जाँच किये बिना न लड़ाई छेड़ो और न कोई कार्य करो। दुश्मन को छोटा न समझो।

**'महात्मा तिरुवल्लुवर'**

( ४०७ )

तुम अपनी विषयेच्छा काँ इतना तो संयम ज़रूर करलो कि १६ वर्ष की कम उम्र की लड़की से विवाह नहीं करंगे। **'म० गांधी'**

( ४०८ )

यदि भारत के युवक जागृत होकर अपने कर्त्तव्य पालन में जुट पड़ें तो अपनी मातृभूमि को स्वतंत्र बनाने में क्या देर है। **'साधु वास्वानी'**

( ४०९ )

स्त्री, पुरुष की अर्द्धांगिनी और उसकी सबसे बड़ा मित्र है और धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की जड़ है। जो इसका अपमान करता है, काल उसका नाश करता है। जैसे द्रौपदी का अपमान करने से दुर्योधनका नाश हुआ।
**'महाभारत'**

( ४१० )

आज कल बहुत से विद्वान प्रत्येक मतों में हैं। वे पक्षपात छोड़ कर सर्व तंत्र सिद्धान्त, अर्थात् जो जो बातें सब के अनुकूल हैं, सब में सत्य है, उनका ग्रहण और जो एक दूसरे के विरुद्ध हैं, उनका त्याग कर परस्पर प्रीति से बर्ताव करें, तो जगत का पूर्ण हित हो। **'दयानन्द'**

( ४११ )

प्रत्येक देश में प्रत्येक जाति में और हर एक धर्म में माता ही जैसा बनाती है, मनुष्य वैसा ही बनता है। **'सर एडमण्ड बर्टो'**

( ४१२ )

अपनी इच्छाओं को अपने वश में रख अपने शरीर पर पूर्ण अधिकार रखो। **'एक महात्मा'**

( ४१३ )

अपने घातक को भी क्षमा करनी चाहिये। **'दयानन्द'**

( ४१४ )

दुसरों को अछूत कहने के पहिले अपने शरीर को विचार कर देख लो।
**'महात्मा कबीर'**

( ४१५ )

अछूत पन ही देश को पराधीनता की बेड़ी में जकड़ रखता है।
**'महात्मा गांधी'**

( ४१६ )

आध्यात्मिक जीवन के मार्ग को जो ग्रहण करना चाहे, उस हर एक के सामने मैं तो वही आदर्श वाक्य रक्खूँगा कि 'चिन्ता मत करो'।

'टी० एल० वास्वानी'

( ४१७ )

भारतवर्ष में प्रजोत्पत्ति का काम होना ही श्रेयस्कर है और कम करने का एक ही इलाज मुझे मान्य है–संयम। पाश्चात्य शास्त्रियों के कृत्रिम इलाज राक्षसी और हानि कारक है। विवाहित स्त्री-पुरुष भी इन्द्रिय लोलुपता मार कर सरलता से ब्रह्मचर्य का पालन कर सकते हैं।

'महात्मा गान्धी'

( ४१८ )

सम्पत्ति की उत्पत्ति ही मनुष्य का जीवन, उसकी आवश्यकताओं को तृप्ति और उसकी शारीरिक, मानसिक तथा नैतिक उन्नति का एक साधन है, परन्तु वह सम्पत्ति अन्त में मनुष्य के ही काम आने वाली है और उसके उत्पन्न करने का मुख्य साधन मनुष्य ही है। 'मार्शल'

( ४१९ )

मनुष्य के भाग्य को योग्य स्थिति में लाने के लिये अभी तक जो जो बातें मालूम हुई हैं या हो रही हैं, उनमें से प्राकृतिक नियमों को जानने या उनका रहस्य समझने के समान श्रेष्ठ और कोई बात नहीं समझ पड़ती और मनुष्यों के लिये सृष्टि के भव्य रूप का निरीक्षण करने की अपेक्षा और कोई दूसरी बात ही अधिक प्रिय नहीं है। 'विवेकानन्द'

( ४२० )

दरिद्रता से लज्जा उत्पन्न होती है, लज्जा के कारण मनुष्य अधिकार से गिर जाता है। अधिकार से गिरे हुए का अपमान होता है, शोक से

बुद्धि हीन होती है और निर्बुद्धि नाश को प्राप्त होता है। इस प्रकार देखा जाता है कि दरिद्रता ही सारी आपत्तियों की जड़ है और इससे जन-संख्या का नाश होता है। 'एक विद्वान्'

( ४२१ )

भारतभूमि धन की खान है, इसमें नाना प्रकारकी खेती, खनिज और उद्योग के लिये प्राकृतिक सामान हैं—उत्तम कोयला है, उम्दा मिट्टी का तेल है, लोहे और लकड़ी की उत्तमता से इंग्लेंड वालों के मुँह में पानी आ जाता है, सोना, चाँदी, ताँबा, टीन तथा अन्य अनेक रत्नों की भी कमी नहीं, उस पर भी भारत भूखों मरे! बड़े शोक की बात है !!

'प्रिन्स वर्थ'

( ४२२ )

बिना कारण के कार्य स्वयं नहीं उपस्थित हो सकता। परम वस्तु कारण है और कार्य कारण का फल है। 'विवेकानन्द'

( ४२३ )

स्मरण, कीर्तन, केलि, प्रेक्षण, गुह्यभाषण, संकल्प, अध्यवसाय, क्रिया और निर्वृति ये आठ प्रकार के मैथुन हैं। इन सभी से निर्वृत होना मैथुन है। 'महाभारत'

( ४२४ )

विद्या के समान नेत्र नहीं हैं, सत्य के समान कोई तप नहीं है और त्याग के समान कोई सुख नहीं है। 'महाभारत'

( ४२५ )

मनुष्य का धर्म क्या है ? अपने बाँधवों की सदा सहायता करना, अपनी दैवी सम्पत्ति की उन्नति करना, प्रत्येक रीति तथा शक्ति से लोक कल्याण करना, प्रकृति के विषयों का ज्ञान प्राप्त करना और ईश्वर के इच्छानुसार चलना। 'ओलिवरलाज'

( ४२६ )

परमार्थ के लिये किये गये कार्यों से जो आनन्द मिलता है, उसके सामने समस्त ऐहिक सुखों की कुछ भी गिन्ती नहीं है। 'जार्ज हर्बर्ट'

( ४२७ )

"निष्फलता" और "असम्भव" शब्द मूर्खों और पागलों के शब्द-कोष के शब्द हैं। 'नेपोलियन'

( ४२८ )

स्वाभिमान, आत्मज्ञान और आत्मनिग्रह इन तीन गुणों से मनुष्य जीवन सर्वोपरि सत्ता प्राप्त कर सकता है। 'टेनीसन'

( ४२९ )

समुद्र में एक गोता लगाने पर यदि मोती हाथ न लगे तो यह न कहो कि समुद्र में मोती नहीं है। बार बार गोते लगा कर मोती ढूँढो अवश्य सफलता मिलेगी। ईश्वर प्राप्ति के सम्बन्ध में भी यही बात कही जा सकती है। यदि तुम्हारा प्रथम प्रयास निष्फल हो तो अधीर न हो जाओ। निरन्तर प्रयत्न करते रहो, अंत में तुम पर ईश्वरीय कृपा अवश्य होगी। 'श्रीरामकृष्ण परमहंस'

( ४३० )

पहिले अपने घर में दीपक जला कर मन्दिर में दीपक जलाने की फ़िक्र करो। घरही में चिराग़ जला कर बैठ न जाओ। आगे बढ़ो और अपने कुटुम्बियों के घर में भी प्रकाश करो, फिर अपने मित्र के यहाँ, तब अपने पड़ोसियों के घर में। इसी प्रकार से गाँव से ज़िले तक, ज़िले से प्रान्त तक, प्रान्त से सारे देश, उससे समस्त संसार तक में अपनी उदारता की ज्योतिका अवलोक करदो। 'हेनरी मार्टिन'

( ४३१ )

क्रोध को कभी पास न फटकने दो। क्रोधी मनुष्य से सब लोग घृणा करते हैं। क्रोध के आवेश में ही प्रायः कठोर शब्द निकल जाया करते है और क्रोध ही बड़े-बड़े अनर्थों का मूल कारण हो जाता है। **'महा० शादी'**

( ४३२ )

अगर कोई तुम्हारे साथ उपकार करे, तो उसे जीवन भर याद रखो, किन्तु तुम स्वयं किसी का उपकार करो तो उसे भूल जाओ। **'बेकन'**

( ४३३ )

अगर राजा कभी प्रजा के बाग के सेब तोड़ कर खाले तो उसके नौकर उस पेड़ की जड़ तक खोद कर खा जावेंगे। **'महा० शादी'**

( ४३४ )

अगर पेट की फिक्र न होती तो कोई चिड़िया जाल में न फसती और न कोई बहेलिया जाल ही बिछाता। **'म० शादी'**

( ४३५ )

ऐ अमीरो! अगर तुममें न्याय और दया होती और हम में संतोष और शान्ति, तो संसार से भीख की प्रथा ही उठ जाती। **'म० शादी'**

( ४३६ )

बालक के कोमल कंठ से निकला हुआ गाना अत्यंत प्रभावशाली और रोमांचकारी होता है—वह सीधे दिल पर चोट करता है। यद्यपि उसमें किसी कला का विकास नहीं रहता, फिर भी वह आश्चर्य जनक रीति से हृदय में चुभ जाता है। बालक के निष्कलंक हृदय और निर्मल होठों से निकले हुए स्वर में स्वर्गीय मधुरता और पवित्रता होती है। वह बंशी की तान अथवा झरने के झरझर शब्द की तरह मनोरह होता है। **'लॉगफेलो'**

( ४३७ )

विपत्ति काल में जीवन को निंद्य और तुच्छ समझ लेना बड़ा सहज है। सच्चा वीर वही है जो दुःखमय जीवन को सन्तोष पूर्वक सहन करता है। 'मार्शल'

( ४३८ )

संसार में उच्च कोटि का पुरुष वही है जिसे लोभ और सांसारिक माया नहीं व्यापती और जो अव्याहतरूप से अपने कार्य का सम्पादन धर्मानुसार करता है। वही सच्चा वीर है, जो दम्भी मनुष्यों द्वारा अनेक प्रकार से कपट जाल में फँसाये जाने पर भी नहीं फँसता। 'जो० हर्बर्ट'

( ४३९ )

प्रेमसे उतर कर सहानुभूति मानव हृदय का सबसे बड़ा दिव्य भाव है। 'वर्क'

( ४४० )

मनुष्य को अपने भावी जीवनपर कदापि भूल कर भी विश्वास नहीं करना चाहिये चाहे वह कितना ही आनन्दमय क्यों न मालूम होता हो, इसके अतिरिक्त वर्तमान समय में ईश्वर पर भरोसा रख कर साहस पूर्वक कार्य में दत्तचित्तसे जुट जाना चाहिये, इसी में मनुष्य का दोनों लोको में कल्याण है। 'एच० डब्ल्यू० लाँगफेलो'

( ४४१ )

परीक्षा नहीं तो जीवन व्यर्थ है। 'सुकरात'

( ४४२ )

इस परिवर्तन शील संसार में मर कर कौन पैदा नहीं होता किन्तु पैदा हुआ उसी को समझना चाहिये, जिससे वंश की उन्नति और वृद्धि हो। 'भर्तृहरि'

( ४४३ )

अग्नि के सदृश गुण भी शतशः आरणों को भेद कर प्रकट होता है।

**'विचार कुसुमोद्यान'**

( ४४४ )

संसार में न कोई किसी का शत्रु है और न कोई किसी का मित्र है, समय पड़ने पर किसी कारण वश शत्रु और मित्र की परीक्षा होती है।

**'चाणक्य'**

( ४४५ )

परिवर्तन से अधिक निश्चित संसार में कोई वस्तु नहीं है। जो पुरुष विद्या, दान, गुण, धर्म और ज्ञान से हीन है, वह इस मृत्यु लोक में पृथ्वी का भार है और मनुष्य के रूप में साक्षात् पशुओं की नाईं विचरता फिरता है।

**'भर्तृहरि'**

( ४४६ )

नाशवान् शरीर की चिन्ता करना व्यर्थ है। चिन्ता तो सर्व स्थिर रहने वाले यशकी करनी चाहिये, क्योंकि नाश हुए शरीर वाला मनुष्य यशरूपी शरीर द्वारा संसार में जीवित ही रहता है।

**'भोजप्रबन्ध'**

( ४४७ )

दूसरों के उपदेश में चातुर्य छौंकना सब पुरुषों के लिये सहज है, किन्तु स्वयं उत्साह शील बन कर कार्य करना अत्यन्त दुष्कर है।

**'हितोपदेश'**

( ४४८ )

अपनी इच्छाओं को दमन करना ही सबसे बड़ा पुण्य है और निरपराध को सताना सब से बड़ा पाप है।

**'महावीर'**

( ४४९ )

सांसारिक कार्यों में हाथ बँटाने वाला और समयानुसार यथोचित मंत्रणा देने वाला पुरुष मित्र है, घरमें स्त्री मित्र है, रोगी के लिये औषधि मित्र है और मरते हुए व्यक्तिके लिये दान सबसे बड़ा मित्र है। 'महाभारत'

( ४५०

पति के प्रति एकान्त चिन्ता ही सती का मार्मिक लक्ष्य है।

'विचार कुसुमोद्यान'

( ४५१ )

धर्म, जीवन की आशा है। वही आत्मरक्षा का अवलम्ब है। उसी के द्वारा दूषित वृत्तियां से मुक्ति होती है। 'नेपोलियन'

( ४५२ )

धार्मिक जीवन धारण करो; ताकि मरते समय तुम्हें शान्ति प्राप्त हो सके। 'सर वाल्टर स्काट'

( ४५३ )

तुमलोग हमारे झूठे गौरव की वृद्धि न करना। हम भगवान् के सेवक हैं, हमको भगवान् का सेवक अथवा दूत ही कह कर पुकारना।

'मुहम्मद साहिब'

( ४५४ )

मनुष्य के उस मन के लिये जो सौन्दर्य के पथ का पथिक है, जो ईश्वर की ओर स्थिर भाव से प्रवण है, जो सत्य की छुरी पर घूम रहा है, उसे भूमंडल ही स्वर्ग लोक है। 'बेकन'

( ४५५ )

क्रोध, द्वेष, दुष्टभाव और बदला लेने की इच्छा आदि दुर्गुण बुद्धि को भ्रष्टकर देते हैं। 'टिलोट सन'

( ४५६ )

मेहनती की क़दर बादशाह भी करेगा। 'अज्ञान'

( ४५७ )

हल्का मन कोई तुच्छ वस्तु पाकर ही प्रसन्न हो जाता है। 'आबिद'

( ४५८ )

मस्तिष्क के अति गुप्त स्थान में कोई एक श्रेष्ठ न्यायाधीश रहता है, जिसका अधिकार सर्व व्यापी है और जिसे मनुष्य मात्र एक स्वर से 'विवेक' नाम से पुकारता है। एक महात्मा

( ४५९ )

मनुष्य को चाहिये कि दो अवसरों पर अपने आप को अवश्य सावधान रक्खे - एक भोजन करते समय और दूसरे बात करते समय। 'एक फ़ारसी विद्वान्'

( ४६०

यदि तुम को बंध स्थान से मुक्त होने की आशा नहीं है, तो उस स्थान पर हँसते हुए प्राण देने ही में बहादुरी है।

'एम० डब्ल्यु० रावर्टसन्'

( ४६१ )

जिसके मन में सदा शंका और सन्देह लगा रहता है, उसको शंका करने का एक न एक कारण मिल ही जाता है। 'सिसिरो'

( ४६२ )

पात्र में रखा हुआ जल चमकता है, समुद्र का जल तिमिरावृत है। स्वल्प सत्य शब्दों द्वारा प्रगट हो जाता है, गहन सत्य मौन है।

'रवीन्द्रनाथ'

( ४६३ )

मन परवेरू इन्द्रियों के सुखों में तब तक उड़ता फिरता है, जब तक ईश्वरीय आध्यात्मिक ज्ञान बाज सदृश उस पर आ नहीं टूटता और उसे अपने पंजे में दबा न लेता। **'कबीर'**

( ४६४ )

जीवात्मा का परमात्मा के साथ ऐक्य होना ही शांति है। **'हाइन'**

( ४६५ )

छोटे लोगों का मन खाली नहीं रहता। यदि तुम उसमें किसी बात का प्रवेश न कर सको, तो वह बुराई ही का उपयोग करेगा। **'वर्क'**

( ४६६ )

इस संसार में पुनीत मूर्खतामय विश्वास अपने स्थान पर ठहर नहीं सकता यदि मनुष्य शंका करने वाले बच्चे का मुंह बन्द न कर देता। **'मिचलेट'**

( ४६७ )

सब से बड़ा उपकार जो हम दूसरों का कर सकते हैं, वह यह है कि हम उनके उदाहरण उपस्थित करें। **'अज्ञात'**

( ४६८ )

किसी के साथ विवाद की आवश्यकता नहीं, तुम्हारे पास सिखलाने के लिये जो कुछ है, वह सिखलाओ, दूसरे को अपने अपने भाव लेकर रहने दो। सत्य की ही विजय होती है, मिथ्या की हर्गिज़ नहीं, तो फिर विवाद की ज़रूरत ही क्या है। **'विवेकानन्द'**

( ४६९ )

निर्बल के साथ कभी वैर-विवाद नहीं करना चाहिये, क्योंकि जीतने से शोभा नहीं होती और हारने से निन्दा होती है। **'नीतिकार'**

( ४७० )

मनुष्य की इच्छा ही उसके पुनर्जन्म का कारण होती है। 'मीराबाई'

( ४७१ )

अपने शत्रुको कभी छोटा नहीं समझना चाहिये; क्योंकि तृण के ढेर को छोटा सा अंगारा भी जलाकर भस्मकर देता है। 'वृन्दकवि'

( ४७२ )

जो गरीब पर दया दिखलाते हैं, वे ही धन्य हैं। श्रीकृष्ण और सुदामा की मित्रता ही इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है। 'रहीम'

( ४७३ )

उस धन से क्या लाभ है, जो न दिया जाता है और न खाया जाता है? उस बल से क्या लाभ है, जिससे शत्रु न मारा जाता हो? उस सुनने से क्या लाभ है, जो धर्म का आचरण न करें। उस आत्मा से क्या लाभ जो जितेन्द्रिय न हो। 'नीतिकार'

( ४७४ )

चाहे नीतिज्ञ लोग निन्दा करें या स्तुति, चाहे लक्ष्मी आये या न आये, चाहे आजही मरण हो अथवा युगान्तर में हो, परन्तु न्याय मार्ग से विवेकी जन एक इंच भी नहीं हटते। 'भर्तृहरि'

( ४७५ )

हराम के धन से ऐश्वर्य भोगने से तो दरिद्रता की "नून-रोटी" खाना ही बेहतर है। 'महादाजी'

( ४७६ )

विपत्ति में धैर्य, अभ्युदय में क्षमा, सभा में वाक्-चातुर्य, युद्ध में विक्रम, यश में रुचि और श्रुति में व्यसन, ये महात्माओं के स्वभाव-सिद्ध गुण हैं। 'चाणक्य'

( ४७७ )

सम्पत्ति प्राप्त करके सपने में भी अभिमान नहीं करना चाहिये, जैसे चंचल जल में बर्तन स्थिर नहीं रह सकता, वैसेही सम्पत्ति भी कभी स्थिर नहीं रहती। 'गिरधरदास'

( ४७८ )

आप सर्वदा अपने शत्रुओं से मित्रता रखिये। जो शत्रु आप पर अत्याचार करें, उनके कल्याणार्थ परमात्मा से प्रार्थना करिये, बस इसी से आप परमात्मा के पुत्र कहे जायेंगे। 'म० ईसा'

( ४७९ )

प्रत्येक मनुष्य को समाज हितकारी नियम पालन में परतंत्र रहना चाहिये और हर एक स्वहितकारी नियम में स्वतंत्र रहना चाहिये।

'म० दयानन्द'

( ४८० )

वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है। वेद का पढ़ना पढ़ाना सुनना-सुनाना आर्यों का परमधर्म है। 'म० दयानन्द'

( ४८१ )

उत्तम उपदेश ग्रहण करो और वृद्धों का सब से अधिक सम्मान करो। 'गोथे'

( ४८२ )

माता पिता की आज्ञा का पालन कर, अपने वचन को पूरा कर, कसम न खा। 'शेक्सपियर'

( ४८३ )

उपकारी के प्रति उपकार करना चाहिये, मारने पर मारना अपराध नहीं। दुष्टता करने पर दुष्टता करना अनुचित नहीं। 'चाणक्य'

( ४८४ )

कमीना अच्छा व्यवहार करने से नहीं सम्हलता। जो तुम्हारे साथ अपकार करे, तुम उसकी आँखों में धूल झोंक दो। धूर्त के साथ सभ्यता से बातें मत करो। 'गुलिस्ताँ'

( ४८५ )

बुद्धिमानों की झिड़कियाँ सुनना भला, पर मूर्खों के गीत सुनना अच्छा नहीं। 'इंजील'

( ४८६ )

प्रतिष्ठान्वित जीवन का सर्वोत्तम आभूषण लज्जा और नम्रता है। 'नेपोलियन'

( ४८७ )

कार्य में सफलता न होने से चेष्टा का परित्याग कर देना महा मूर्खता है। चरित्र विकास में असफलताएँ अद्भुत उपादान की सामग्रियाँ हैं। 'एजन'

( ४८८ )

मूर्ख दूसरों के दोष पकड़ सकते हैं, पर वे स्वयं उनसे अच्छा कार्य नहीं कर सकते। 'लंकबीन'

( ४८९ )

युवकों और युवतियों की शिक्षा प्रणाली आदर्श चरित्रों पर रखनी चाहिये। 'एक विद्वान'

( ४९० )

मूर्खों की संगति आरम्भ में हमें हँसा भी दे, तो भी अन्त में वह हमें ग़मग़ीन बनाये बिना न रहेगी। 'गोल्ड स्मिथ'

( ४९१ )

अपना मन पवित्र रखो। समस्त धर्मों का सार इसी एक उपदेश में समाया हुआ है, बाक़ी और सब बातें कुछ नहीं, केवल शब्दाडम्बर मात्र हैं। 'तामिल वेद'

( ४९२ )

दुःख सुख, शीत उष्ण, शोक हर्ष इन सब को समान समझना और कभी धैर्य-च्युत न होने देना ही प्राज्ञ का स्वभाव है। 'भगवद्गीता'

( ४९३ )

चित्त की वृत्तियों का निरोध करना ही योग कहलाता है।

'पातंजलयोगसूत्रम्'

( ४९४ )

मनुष्य अमर तो नहीं हो सकता, परन्तु उसके जीवन के दिन स्वाभाविक मृत्यु के दिनों से बढ़ सकते हैं और फिर यह कोई नहीं कह सकता कि अमुक पुरुष की अवस्था इतने ही दिनों की होगी।

'एम० फौनडारेक्टस्'

( ४९५ )

जन संख्या की निःसीम वृद्धि अनन्त दैवी कारणों से रुकती है। जिस किसी कारण से मनुष्य के स्वाभाविक दीर्घायु होने में बाधा पड़े—बाधा का कारण चाहे दरिद्रता हो चाहे बुरे रीति-रिवाज़ अथवा व्यभिचार व्यसन उसकी गणना दैवी कारणों में की जायेगी।

'मागल्स'

( ४९६ )

जब दुर्भिक्ष पड़ता है तब प्रायः सदा ही उसका कारण पानी का न बरसना बताया जाता है, पर यदि शान्त भाव से हम इसका ख़ास कारण

खोजें, तो हमें स्वीकार करना पड़ेगा कि इधर जो अकाल पड़े हैं, उनका कारण किसानों का सम्पूर्ण निर्धन होना है। किसान दुनियाँ भर में सबसे अधिक निर्धन और विपत्ति ग्रस्त हैं। 'सर रमेशचन्द्र दत्त'

( ४९७ )

शान्ति का आन्दोलन विषमय होता है। यदि स्वार्थ वश दूसरे का अधिकार छीनने के लिये नहीं, तो अपने देश और राष्ट्र का अधिकार बचा रखने के लिये ही प्रत्येक राष्ट्र को युद्ध के लिये तैयार रहना चाहिये।

'फर्वेल हार्डी'

( ४९८ )

भूमण्डल के किसी देश में, संसार की किसी जाति में, किसी धर्म में, विवाह संस्कार का महत्त्व ऐसा गम्भीर, ऐसा अपूर्व तथा ऐसा पवित्र नहीं है, जैसा कि प्राचीन आर्य ग्रन्थों में पाया जाता है।

( ४९९ )

हमारे यहाँ के ( भारत के ) आधे से अधिक किसान साल के अन्त तक यह नहीं जानते कि पेट भर खाना किसे कहते हैं।

'सी० ए० एलियट'

( ५०० )

ऐश्वर्य चाहने वाले पुरुष को छः दोष छोड़ने चाहियें—नींद, ऊँघना, भय, क्रोध, काहिलपन और काम में विलम्ब करना। 'हितोपदेश'

( ५०१ )

सच्चा और अक्षय सुख केवल परमेश्वर की प्राप्ति में ही है। अन्य किसी पदार्थ में नहीं। 'श्रीमद्भगवद्गीता'

( ५०२ )

जिसका स्वभाव नम्र चित्त शांत और समदर्शी है वही सब कुछ है।

**'एक महात्मा'**

( ५०३ )

हम लोग शरीर को जितने ही संयम से रक्खेंगे, उतनी ही अपनी और देश की भलाई कर सकेंगे। **'म० गांधी'**

( ५०४ )

यदि माता-पिता की आज्ञा पालन करो या अपने वचन का पूरा करो तो कसम न खाओ। **'शेक्सपियर'**

( ५०५ )

सज्जनों के साथ बैठना चाहिये, सज्जनों की संगति में रहना चाहिये और सज्जनों के साथ ही मैत्री या विवाद करना चाहिये। दुर्जनों से किसी प्रकार का सम्पर्क नहीं रखना चाहिये। **'चरित्र गठन'**

( ५०६ )

बूँद बूँद पानी से जैसे घड़ा भरता है, वैसे ही विद्या, धर्म और धन भी धीरे धीरे पूर्णता को प्राप्त होते हैं। **'नीति'**

( ५०७ )

अपार धनशाली कुबेर भी यदि आमदनी से अधिक खर्च करे तो वह भी एक दिन भिखारी हो जावेगा। **'नीति'**

( ५०८ )

यदि कोई दुर्बल मनुष्य तुम्हारा अपमान करे तो उस पर क्रोध न करो, बल्कि उसे क्षमा कर दो, क्योंकि क्षमा करना ही वीरों का धर्म है, किन्तु अपमान करने वाला यदि बलवान हो तो उसे अवश्य दण्ड दो।

**'गुरु गोविन्दसिंह'**

( ५०९ )

जो तुम स्वयं नहीं चाहते, वह काम दूसरों के लिये मत करो। इसी तरह जब तुम किसी दूसरे का काम उठाओ तो उसे वैसे ही उत्साह से करो जैसे अपना काम करते हो। 'कान्फ्यूसियस'

( ५१० )

जो यशस्वी है उसके लिये अवश्य ही मृत्यु बढ़कर है। 'गीता'

( ५११ )

अच्छे गुण उत्तम सुगन्धियों के सदृश होते हैं। जब जलाओ या कुचलो, मनोहर सुगन्धि पैदा होगी। कारण सुख दुर्गुणों का बढ़ाना है और दुःख अच्छे गुणों को। 'बेकन'

( ५१२ )

प्राचीन लोगों का मत है कि अपना काम अपने ही हाथ से होता है। 'अज्ञात'

( ५१३ )

जो सत्य को जानता है, जो मन बचन और शरीर से सत्य का ही आचरण करता है, वही परमेश्वर को पहिचानता है। इस कारण वह त्रिकालदर्शी होता है। उसे इसी जन्म में इसी देह से मोक्ष प्राप्त होता है। 'म० गांधी'

( ५१४ )

सत्य बचन बोलना, क्रोध न करना, यदि कोई कुछ याचना करे तो उसे वही वस्तु दे देना अर्थात् विमुख न जाने देना--इन तीन धर्मों में से एक से भी देव लोक प्राप्त होता है और सब धर्मों का पालन करने वालों का कहना ही क्या है? उन्हें तो परम गति मिली ही होती है। 'गौतमबुद्ध'

( ५१५ )

अगर संसार में तीस करोड़ ईसा, मुहम्मद, बुद्ध, या राम जन्म लें तो भी तुम्हारा उद्धार नहीं हो सकता। जब तक तुम स्वयं अपने अज्ञान को दूर करने के लिये बद्ध-परिकर नहीं होते, तब तक कोई तुम्हारा उद्धार नहीं कर सकता, इसलिये दूसरों का भरोसा मत करो। **'स्वा० रामतीर्थ'**

( ५१६ )

परमात्मा पूजा का नहीं, वरन प्रेम का भूखा है। **'स्वा० दयानन्द'**

( ५१७ )

जिस मनुष्य के चित्त में किसी तरह की कामना उठती ही नहीं और स्वयं आनन्दमय हो जाता है, जिसके चित्त को कड़ी से कड़ी विपत्ति में भी खेद नहीं पहुँचता, जो सुख या अभ्युदय में अपने को परम सुखी नहीं मानता है, जिसके पास से भय, प्रीति और क्रोध दूर हट गये हैं, वह मनुष्य स्थितप्रज्ञ कहा जाता है। **'भगवान् श्रीकृष्ण'**

( ५१८ )

जिस मनुष्य के मनमें शान्ति-सुखका अभाव है, वह किसी अवस्था में रहे दुःख पाता रहेगा। जिसका मन चंचल है वह अपनी रहन-सहन में परिवर्तन की सदा इच्छा करता है। यदि हम सच्चे सुख की कदर जानते हैं तो हमें उसके लिये दूर जाने की कोई आवश्यकता नहीं है, क्योंकि वह सन्तोष महारत्न हमारे अंतःकरण के भीतर ही है। वे मूर्ख हैं, जो सुखकी खोज में इधर-उधर भटकते फिरते हैं। **'काटन'**

( ५१९ )

ईश्वर का भरोसा ही सब कुछ है। वह जो चाहता है, वही होता है। उसी पर विश्वास रखने से, उसी पर भक्ति और प्रेम रखने से मनुष्य सुखी हो सकता है। **'तुलसीदास'**

( ५२० )

मुसलमान मस्जिद में जाते हैं और हिन्दू मन्दिर में यदि खुदा मस्जिद में ही है तो बाह्य जगत् किसका मुल्क है, यदि राम मन्दिर की मूर्ति में आबद्ध है, तो संसार की रक्षा कौन करता है ? पूर्व दिशा हरिको हो गई और पश्चिम दिशा अल्लाह की। अपने हृदय के भीतर तो एक बार खोज कर देखो ! वहां राम हैं और वही रहीम। जितने स्त्री पुरुष हैं, वे सबही देव हैं—तुम्हारे ही रूप हैं। मैं उसी अल्लाह-रामकी सन्तान हूँ। वही मेरा गुरु है और वही मेरा पीर। **'कबीर'**

( ५२१ )

दूसरे को दुःख देने के लिये जो औरों की सहायता के लिये प्रार्थना करता है उससे हमारा कोई सम्बन्ध नहीं। स्वजाति को अन्याय युद्ध में प्रवृत्त देखकर जो स्वजाति का पक्ष लेकर युद्ध करता है: उसके साथ हमारा कुछ सम्बन्ध नहीं। अन्याय की प्रतिष्ठा करके अधम-युद्ध में जो प्राण गंवाता है, मुहम्मद अपने दिल में उसकी गणना न करेगा।

**'हजरत मुहम्मद'**

( ५२२ )

विश्वास की शिथिलता से मनुष्य की आशा क्षीण हो जाती है।

**'टेनीसन'**

( ५२३ )

कोई कृति प्राचीन होने के कारण आदरणीय नहीं हो सकती है और न नवीन होने के कारण निन्द्य ही हो सकती है। जो विद्वान् होते हैं वे उसकी उत्तमता की परीक्षा करके उसे ग्रहण करते हैं। जो मूढ़ है, वे ही दूसरों के विश्वास पर चलते हैं। **'कालिदास'**

( ५२४ )

मनुष्य के जीवन में कभी एक ऐसी लहर उठती है जो उसे सफलता के सिरे पर पहुँचाती है और फिर निष्फलता के खन्दक में गिरा देती है। **'शेक्सपियर'**

( ५२५ )

मनुष्य की मुख-मुद्रा उसके हृदय का दर्पण है। प्रकृति की ऐसी लीला है कि मानव हृदय के भले या बुरे विचारों का प्रतिबिम्ब-रूप ध्यान-पूर्वक देखने से उसके मुख पर दिखाई देता है। **'एक संन्यासी'**

( ५२६ )

चाहे कोई चित्र हो, चाहे फोटो और चाहे कोई मूर्ति, जिसके द्वारा हमारे हृदय में किसी उदार विचार का संचार होता है जो किसी वीर कृत्यको प्रदर्शित करती है अथवा हमें प्रकृति के किसी गम्भीर तथ्य का प्रदर्शन कराती अथवा जो सामाजिक जीवन की एक झलक हमारे सामने खींच देती है, वह वास्तव में हमारी शिक्षयित्री है, उससे हम शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं। आत्म-शिक्षा का इससे बढ़कर और कोई दूसरा साधन नहीं। ऐसे चित्रों और मूर्तियों को अवश्य घर में रखना चाहिये। गृह उनके कारण अधिक सुखप्रद और चित्ताकर्षक मालूम देता है। **'स्माइल्स'**

( ५२७ )

हे अर्जुन! विवेकी पुरुषों को इन्द्रियों के दमन की चेष्टा करते रहने पर भी मोह में डालनेवाली इंद्रियाँ उनके मनको अपनी ओर खींच ही लेती है। **'गीता'**

( ५२८ )

आत्मोन्नति पर ही मनुष्य की सारी उन्नति और नैतिक वृद्धि अवलम्बित है। **'जेम्सऐलन'**

( ५२९ )

बुरे और हानि कारक कार्य, करने में सहज होते हैं, परन्तु लाभका विचार उत्तम अतिकठिन है। 'गौ० बुद्ध'

( ५३० )

विद्वान कहता है कि अपने ऊपर सबसे अधिक प्रेम करो, क्योंकि संसार स्वार्थ पर ही चल रहा है। यदि तुम इस सिद्धान्त पर ही चलोगे तो सदा प्रसन्न रहोगे। 'डास्टायफिस्की'

( ५३१ )

भगवान को उसी दृष्टि से देखना होगा, जिससे भगवान संसार को देखते हैं। 'दान्ते'

( ५३२ )

मैंने निश्चय समझ लिया कि यह अस्थायी संसार दर्पण के समान है। इसमें ईश्वर का एक रूप असंख्य रूपों में प्रतिबिम्बित होता है। 'बिहारी'

( ५३३ )

मनुष्य बिना ब्रह्मचर्य धारण किये हुए कदापि पूर्ण आयुवाले नहीं हो सकते। 'ऋग्वेद'

( ५३४ )

चारों आश्रमों के यथावत् पूर्ण होने के लिये ब्रह्मचर्याश्रम का पालन करना चाहिये। 'यजुर्वेद'

( ५३५ )

सब पुराणी प्राचीन संस्कृति और धर्म की रक्षा ब्रह्मचर्य-व्रत से होती है। 'अथर्ववेद'

( ५३६ )

ब्रह्मचर्य सर्वोत्तम तप है। अखण्ड ब्रह्मचर्य व्रत का व्रती पुरुष, देवता है, उसे मनुष्य न समझना चाहिये। 'शंकर'

( ५३७ )

हे जीव! ब्रह्मचर्य रूपी सुधानिधि तेरे पास है, उसकी प्रतिष्ठा से अमर बन। निराश मत हो। मनुष्यता को सार्थक बनाने का उद्योग कर।
'श्रुति'

( ५३८ )

ब्रह्मचर्य-व्रत का पालन करते हुए वेदादि शास्त्रों का अध्ययन योग्य है। अधिकारी पुरुष ही अपनी सम्पत्ति की रक्षा कर सकता है।
'महर्षि अंगिरा'

( ५३९ )

हे निष्पाप! ब्रह्मचर्य से ही संसार की स्थिति है। मूलाधार के नष्ट होने पर ही पदार्थ का नाश होता है, अन्यथा नहीं। 'महर्षि वशिष्ठ'

( ५४० )

मुनिवर! तुम्हारा शाप अङ्गीकार करता हूँ। विवाह करने से तुम्हारा ब्रह्मचर्य-व्रत खंडित हो जाता और लोक कल्याण में बाधा उपस्थित होती, इससे माया करनी पड़ी। 'भग० विष्णु'

( ५४१ )

ब्रह्मचर्य से मनुष्य दिव्यता को प्राप्त होता है। शरीर के त्यागने पर सद्गति मिलती है। 'मुनीन्द्रगर्ग'

( ५४२ )

ब्रह्मचर्य के संरक्षण से मनुष्य को सब लोकों में सुख देने वाली सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं। 'अत्रि'

( ५४३ )

जीवात्मा ब्रह्मचर्य से ही परमात्मा में लीन होता है। आप्त धर्म ही चारों फल की प्राप्ति का साधन है। 'व्यास'

( ५४४ )

हे राजन्! ब्रह्मचारी को कहीं भी दुःख नहीं होता, उसे सब कुछ प्राप्य है। ब्रह्मचर्य के प्रभाव से अनेक ऋषि ब्रह्मलोक में स्थिति हैं।
'देवव्रत भीष्म'

( ५४५ )

ब्रह्मचारी को सब कुछ सम्भव है। उत्साह से ही सब कार्य सिद्ध होते हैं। वे ही पुरुष रत्न हैं, जो अपने व्रत का सदा पालन करते हैं।
'महावीर हनूमान्'

( ५४६ )

ब्रह्मचर्य का पालन कर लेने पर मनुष्य किसी भी आश्रम ( गृहस्थ, वान प्रस्थ और संन्यास ) म प्रविष्ट हो सकता है। 'जाबालि'

( ५४७ )

हे जनक जी! जिसने ब्रह्मचर्य में चित्तकी शुद्धि की है, उसीको अन्य आश्रमों ( गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास ) में आनन्द मिलता है।
'शुकदेव'

( ५४८ )

विना ब्रह्मचर्य के ( विषय-भोग से ) आयुष्य, तेज, बल, वीर्य, बुद्धि लक्ष्मी, महत्त्वाकांक्षा, पुण्यतप और स्वाभिमान का नाश हो जाता है।
'गौतममुनि'

( ५४९ )

ब्रह्मचर्य के पालन से आत्मबल प्राप्त होता है।

**'पतंजलि'**

( ५५० )

ब्रह्मचर्य के बल से ही मनुष्य ऋषि-लोक को जाता है।

**'कपिलमुनि'**

( ५५१ )

जो मनुष्य ब्रह्मचारी नहीं उसको कभी सिद्धि नहीं होती। वह जन्म—मरणादि क्लेशों को बारबार भोगता रहता है। **'अमृतसिद्ध'**

( ५५२ )

काम, क्रोध, लोभ, स्वाद, शृङ्गार, कौतुक, अतिनिद्रा और अति-सेवा—ये आठ कर्म विद्यार्थी के लिये वर्जित हैं। **'चाणक्य'**

( ५५३ )

आलस्य, मद, मोह, चपलता, व्यर्थ बातचीत करना, चुप रहना, अभिमान करना और स्वार्थी होना—ये सात अवगुण विद्यार्थियों के माने गये हैं। **'विदुर'**

( ५५४ )

जो परमात्मा को सर्वदर्शी और अपने हृदय में रहने वाला समझता है, वह पाप नहीं करता।

( ५५५ )

अभिमान करने वाला पुरुष बहुत थोड़े दिनों में नाश को प्राप्त होता है।

( ५५६ )

ईश्वर केवल हमारे सुकर्मों में सहायता करता है, वह किसी के कुकर्म का संगी नहीं।

( ५५७ )

वह परमेश्वर सब निराशों का आशा है, इसलिये उसे किसी भी अवस्था में भूलना उचित नहीं।

( ५५८ )

जिसके हृदय में सद्भावना है वह पुरुष कभी दुःखी नहीं हो सकता।

( ५५९ )

जो कार्य जितनी ही दृढ़ता और सुचारुता से किया जाता है उसमें उतनी सफलता भी मिलती है।

( ५६० )

एक कर्तव्य शील मूढ़ भी एक अकर्तव्य शील विद्वान् से श्रेष्ठ है।

( ५६१ )

मनुष्य अपने उन्नत स्वभाव से ही अपने को उच्च पद पर नियुक्त करा सकता है।

( ५६२ )

धन और स्वास्थ्य से भी सदाचार का मूल्य अधिक माना गया है।

( ५६३ )

सज्जनता का चिह्न उस मनुष्य के सद्व्यवहार से प्रगट होता है।

( ५६४ )

अपनी मानसिक सद्वृत्तियों को उन्नत तथा सुदृढ़ बनाने के लिये सदा चेष्टा करनी चाहिये।

( ५६५ )

अपने गुणों के प्रभाव से पुरुष सर्वत्र पूजित होता है। वास्तव में गुण ही पूजा का स्थान है।

( ५६६ )

मनुष्य जीवन का उद्देश्य सुख और स्वतंत्रता है। इसी के लिये अनेक साधन किये जाते हैं।

( ५६७ )

जीवन में उसी को अच्छी सफलता मिलती है, जो पुरुष बाल्यावस्था से ही अच्छे नियमों का अभ्यास करता है।

( ५६८ )

जो पुरुष अपने सच्चरित्र से जनता को उपदेश देकर ऊपर उठाता है, वही महापुरुष कहलाने योग्य है।

( ५६९ )

विद्या के साथ साथ नम्रता और सरलता होने से सोने में सुगन्धित हो जाती है।

( ५७० )

वही विद्वान पुरुष है जो दूसरों का अविद्या से छुड़ाने का उद्योग करे।

( ५७१ )

सत्यता और स्पष्टवादिता से मनुष्य की स्वाधीनता का ज्ञान होता है।

( ५७२ )

जो अपने मानसिक विचारों का स्वयं दास है, वह कभी उदार और उच्च नहीं हो सकता।

( ५७३ )

बहुत विचार करने पर थोड़ा कार्य करना उचित है।

( ५७४ )

नर रत्नों को अपने सिद्धान्त से यमराज भी नहीं डिगा सकते।

( ५७५ )

अपनी प्रतिज्ञा और रीति को सदैव निभाने का प्रयत्न करना चाहिये।

( ५९२ )

अपनी सत्कीर्ति को कभी मैला न होने देने वाला ही पुरुष कुल का रत्न है।

( ५९३ )

पुरुषार्थी उत्साही पुरुष कभी दरिद्र नहीं हो सकता और आलस निरुत्साही पुरुष कभी धनी नहीं हो सकता।

( ५९४ )

किसी प्रकार का अभ्यास करने से वह बढ़ता है और न करने घटता है। अभ्यासी शिष्य निरभ्यासी गुरु से बढ़ जाता है।

( ५९५ )

यदि परमात्मा ने विद्या, शक्ति और धन दिया है तो अज्ञानी निर्ब और दीन के लिये लगा दो।

( ५९६ )

जो बाल्यावस्था में विद्या और युवा अवस्था में धन नहीं एकत्र क लेता, वह वार्द्धक्य में बड़ा दुःख पाता है।

( ५९७ )

विचार शील और उत्तम पुरुष का नियम होता है कि वे सब सौ सुनते हैं, पर अपनी एकही करते हैं।

( ५९८ )

अपने अवगुणों पर कड़ा ध्यान रखना चाहिये। असावधानी मे बढ़ जाते हैं और मनुष्य को पतित कर देते हैं।

( ५९९ )

जो लोग हठ वश उचित बातों को नहीं मानते वे अन्त में क बिगाड़ कर पछताते हैं।

( ६०० )

अप्रिय वचन कहने वाला पुरुष, सबके हृदय का काटा बन जाता है।

( ६०१ )

मेरा तो यह धारणा है कि मेरा समस्त जीवन जाति के लिए है। जब तक मै जीवित हूं—यथाशक्ति उसकी सेवा करने का मेरा अधिकार है। मनुष्य की उन्नति का प्रथम मार्ग यही है कि उन्नति के इच्छुक का दूसरों की दृष्टि में मूर्ख बनने के लिए सदा तैयार रहना चाहिये। मै अपनी मृत्यु के पूर्व ही अपनी सर्व शक्तियों का उपयोग देखना चाहता हूं, क्योंकि मैं जितना अधिक कठिन काम करूंगा उतना ही अधिक जीवित रहूंगा। मुझे मेरा जीवन, जीवन होने के लिये ही प्रिय लगता है। अल्प समय के दीपक की भांति नहीं मालूम पड़ता किन्तु प्रत्येक क्षण, मुझे इक हाथ में आई हुई मशाल के माफिक मालूम पड़ता है। 'जार्ज बर्नार्डशा'

( ६०२ )

यह आत्मा सच्ची और स्वावलम्बी बने, यह भी एक महान और भारी सेवा है। 'ग्लेडस्टन'

( ६०३ )

तुमको इस प्रकार जीवन व्यतीत करना चाहिये कि जब जीवन का सूर्य मृत्यु के अन्धकार में अस्त हो जाय, तब तुम्हारे दया भरे कृत्यों का स्मरण भविष्य के तेजस्वी पट पर चमकता रहे और तुम्हारे सत्कार्य बीज भविष्य में अपरिमित विकास को प्राप्त होते रहें। 'सर जान बाव्रिंजा'

( ६०४ )

बुद्धिमान् पुरुष अजर और अमर की तरह विद्या और धन का संग्रह करे तथा धर्म का संग्रह इस आतुरता और फुर्ती से करे मानों मृत्यु अपने सिर पर सवार है। 'विष्णुगुप्त'

( ५९२ )

अपनी सत्कीर्ति को कभी मैली न होने देने वाला ही पुरुष कुल का रत्न है।

( ५९३ )

पुरुषार्थी उत्साही पुरुष कभी दरिद्र नहीं हो सकता और आलसी निरुत्साही पुरुष कभी धनी नहीं हो सकता।

( ५९४ )

किसी प्रकार का अभ्यास करने से वह बढ़ता है और न करने से घटता है। अभ्यासी शिष्य निरभ्यासी गुरु से बढ़ जाता है।

( ५९५ )

यदि परमात्मा ने विद्या, शक्ति और धन दिया है तो अज्ञानी निर्बल और दीन के लिये लगा दो।

( ५९६ )

जो बाल्यावस्था में विद्या और युवा अवस्था में धन नहीं एकत्र कर लेता, वह वार्द्धक्य में बड़ा दुःख पाता है।

( ५९७ )

विचार शील और उत्तम पुरुष का नियम होता है कि वे सब की सौ सुनते हैं, पर अपनी एकही करते हैं।

( ५९८ )

अपने अवगुणों पर कड़ा ध्यान रखना चाहिये। असावधानी से ये बढ़ जाते हैं और मनुष्य को पतित कर देते हैं।

( ५९९ )

जो लोग हठ वश उचित बातों को नहीं मानते वे अन्त में काम बिगाड़ कर पछताते हैं।

( ६०० )

अप्रिय वचन कहने वाला पुरुष, सबके हृदय का काँटा बन जाता है।

( ६०१ )

मेरा तो यह धारणा है कि मेरा समस्त जीवन जाति के लिये है। जब तक मैं जीवित हूं—यथाशक्ति उसकी सेवा करने का मेरा अधिकार है। मनुष्य की उन्नति का प्रथम मार्ग यही है कि उन्नति के इच्छुक को दूसरों की दृष्टि में मूर्ख बनने के लिए सदा तैयार रहना चाहिये। मैं अपनी मृत्यु के पूर्व ही अपनी सर्व शक्तियों का उपयोग देखना चाहता हूं, क्योंकि मैं जितना अधिक कठिन काम करूंगा उतना ही अधिक जीवित रहूंगा। मुझे मेरा जीवन, जीवन होने के लिये ही प्रिय लगता है। अल्प समय के दीपक की भांति नहीं मालूम पड़ता किन्तु प्रत्येक क्षण, मुझे एक हाथ में आई हुई मशाल के माफिक मालूम पड़ता है। 'जार्ज बर्नार्डशा'

( ६०२ )

यह आत्मा सच्ची और स्वावलम्बी बने, यह भी एक महान और भारी सेवा है। 'ग्लेडस्टन'

( ६०३ )

तुमको इस प्रकार जीवन व्यतीत करना चाहिये कि जब जीवन का सूर्य मृत्यु के अन्धकार में अस्त हो जाय, तब तुम्हारे दया भरे कृत्यों का स्मरण भविष्य के तेजस्वी पट पर चमकता रहे और तुम्हारे सत्कार्य बीज भविष्य में अपरिमित विकास को प्राप्त होते रहें। 'सर जान बाउरिंग'

( ६०४ )

बुद्धिमान् पुरुष अजर और अमर की तरह विद्या और धन का संग्रह करे तथा धर्म का संग्रह इस आतुरता और फुर्ती से करे मानों मृत्यु अपने सिर पर सवार है। 'विष्णुगुप्त'

( ६०५ )

दुःखी भाई को सुखी भाई की दया पर हक़ है। 'एडिसन'

( ६०६ )

बिना अपनी हानि किए तुम दूसरों को सुखी न कर सकोगे।

'डा० आर्टोन,

( ६०७ )

विश्वास और निर्दोषिता सिवाय शिशु के और किसी में नहीं पायी जाती।

'हण्ट'

( ६०८ )

जिस समय वृक्ष नरम हो, उसी समय उसको झुका देना चाहिये।

'मैचियामैली'

( ६०९ )

एक ईमानदार मनुष्य सर्वदा ही बच्चा है। 'मारशियल'

( ६१० )

जीवन का बड़ा अन्त बुद्धि नहीं है, कर्म है। 'हक्सले'

( ६११ )

मैं एक आलसी होने के बदले बीमार हो जाता। 'सेनेका'

( ६१२ )

परिश्रम स्वयं ही आनन्द है। 'लूक्रेशियस'

( ६१३ )

जीवन बिना कठिन परिश्रम के मनुष्य को कुछ नहीं देता। 'होरेक'

( ६१४ )

पहिले अपनी परीक्षा कर, फिर ईश्वर को पुकार, क्योंकि ईश्वर उद्योगी की सहायता करता है। 'ग्रीकोक्ति'

( ६१५ )

रथ केवल एक पहिए से नहीं चलता, उसी प्रकार भाग्य भी बिना मनुष्य के उद्योग के काम नहीं देता। 'हितोपदेश'

( ६१६ )

सिवाय तुम्हारे तुमको और कोई भी शान्ति नहीं प्रदान कर सकता। 'एमरसन'

( ६१७ )

ग़लत रास्ता सदा ठीक मालूम पड़ता है। 'जा० मोर'

( ६१८ )

शान्ति स्थापन के लिये हमें युद्ध के लिये प्रस्तुत रहना चाहिये। 'बिस्मार्क'

( ६१९ )

तुम कितने ही शक्तिशाली क्यों न हो, चाहे तुम एक मनुष्य हो अथवा राष्ट्र, किन्तु एक सीमा है जिससे अधिक तुम्हारी शक्ति नहीं जायगी। 'लार्ड मेलिसबेरी'

( ६२० )

मनुष्य के लिये यह असम्भव है कि वह प्रत्येक कार्य को अच्छा करने की पूर्ण चेष्टा करे। 'ऐक्सेनाफौन'

( ६२१ )

जागृत मनुष्य के लिये आशा महत्त्व पूर्ण है। आशा मनुष्य के दुर्दिन में रक्षा करती है। 'मेनाण्डर'

( ६२२ )

किसी बात को गुप्त रखने से बढ़कर और कोई कठिन कार्य नहीं है। स्त्रियों के लिये यह बहुत कठिन है कि अधिक समय तक ऐसा कर सकें और ऐसे अनेक पुरुषों को भी मैं जानता हूँ, जो स्त्री हैं। 'लाफौनरेन'

( ६२३ )

मनुष्यों की आवाज ईश्वर की आवाज़ है। 'हौफमन'

( ६२४ )

जब तक मनुष्य से हमारा काम चलता है चाहे वह हमारा पुत्र हो, पिता हो, स्त्री हो या पति हो, तब तक हम उसे प्यार करते हैं। जब काम निकल जाता है तब उसे त्यागने में हमें कोई संकोच नहीं होता।

'स्वा० रामतीर्थ'

( ६२५ )

प्रेम मनुष्य को निर्बलता भी है और हथियार भी। 'नीशे'

( ६२६ )

यदि स्त्री कुछ अपराध करती है तो वह क्षमा माँगने के लिये एक पैर पर तैयार रहती है, किन्तु यदि वही अपराध पुरुष से होता है तो स्त्री उसे तुरन्त भूल जाती है। 'बुलवर'

( ६२७ )

जो स्त्री अपने पति और पुत्रों को सदैव सानन्द रखती है, उसके आगे जगत की महारानी का वैभव भी तुच्छ है। 'गोल्डस्मिथ'

( ६२८ )

संसार में सफल मनोरथ होना अपनी शक्ति, अपने पराक्रम अपने मानसिक बल पर ही निर्भर है।

( ६२९ )

विद्वत्ता से मैंने यही लाभ उठाया कि मुझे अपने मूर्खत्व का ज्ञान हो गया। 'लुकमान'

( ६३० )

जो कर्त्तव्य परायण है, जिनमें कर्त्तव्य शक्ति है, वे किसी दूसरे का मुंह नहीं ताकते। वे अवतार नहीं ढूंढ़ते सिर्फ अवस्था देखते हैं और जैसी स्थिति रहती है उसी की गुरुता के अनुसार व्यवस्था करते हैं।

**'नेपोलियन'**

( ६३१ )

हे मनुष्य! मनुष्य बनो!! यही तुम्हारा प्रथम कर्त्तव्य है, चाहे कोई दीन हो या धनी, वृद्ध हो या बाल—सभी के साथ मनुष्य के समान व्यवहार करो। **'रूसो'**

( ६३२ )

नया प्रभात हो रहा है। नई नई आशाओं का तुममें संचार हो रहा है, नये नये कर्त्तव्य तुम्हें सम्बोधन कर रहे हैं। सोने वाले, जागो! जागने वालों, खड़े हो जाओ! खड़े होने वालों, अपना कर्त्तव्य करने लग जाओ। मातृभूमि अपने प्रत्येक पुत्र से भेंट चाहती है।

**'एक देशभक्त'**

( ६३३ )

स्त्रियों को मान हम देते हैं, वह केवल उनके सौन्दर्य के लिये नहीं है, वरन स्वाभाविक गुणों के लिये भी उनका मान किया जाता है

**'एडिसन'**

( ६३४ )

मनुष्य को मांस भक्षण की ऐसी चाट पड़ गई है कि यदि दर्द न होता तो वे अपने ही शरीर पर टूट पड़ते। **'अकबर'**

( ६३५ )

जहाँ मन भय ग्रसित नहीं है, जहाँ मनुष्य शीश उठाये हुए हैं,

जहाँ ज्ञान स्वतंत्र है, जहाँ संसार तंगघरेलू दीवारों के कारण छोटे २ भागों में बटा हुआ नहीं है, जहाँ आत्मविचार हृदय की गहराई से उत्पन्न होते हैं, जहाँ सर्वोच्च शिखर पर पहुंचने के लिये पुरुषार्थ बाहु फैलाये रहता है, जहां बुद्धि का स्वच्छ नदी का मार्ग मृतवत स्वभाव के बियाबान में लोप नहीं हो जाता, जहाँ मन तेरी अधीनता स्वीकार कर विस्तृत होने वाले विचार और कर्म के मैदान में पहुंचता है, ऐ पिता ! स्वतंत्रता के उस उच्चतर शिखर पर मेरा देश पहुंचे । **'रवीन्द्रनाथ'**

( ६३६ )

उचित कामों को जहां तक हो सके शीघ्र कर डालना चाहिये, किसी शुभ मुहूर्त की प्रतीक्षा नहीं करनी चाहिये, क्योंकि शुभ कामों का मुहूर्त शीघ्रता ही है । **'कार्लाईल'**

( ६३७ )

इस संसार के सदा बदलते हुए नाना नाम-रूपों में जो केवल एक-- अद्वितीय एक को देखते हैं उन्हीं को सनातन सत्य के दर्शन होते हैं, और किसी को नहीं । **'जगदीशचन्द्रवसु'**

( ६३८ )

ग़रीब को आश्वासन दो, निर्बल को सहायता और आश्रय दो और अपने पूर्ण बल से दुष्टता को निर्मूल कर दो । इसमें ही तुम अपना भाग्य विकसित कर सकोगे और वह भी तुम्हें उसका बदला अवश्य देगा। **'अलफ्रेडदी ग्रेट'**

( ६३९ )

सत्कार्य हृदय मन्दिर में बँधे हुए कीर्तिस्तम्भ हैं ।

( ६४० )

पात्र अपात्र की परीक्षा किये बिना और बिना विचार किये दान देने की पद्धति भगवान् की अखंड धन राशि का सबसे बड़ा दुरुपयोग है।

( ६४१ )

इस विशाल संसार में जो कुछ हम भलाई करते हैं वह अत्यन्त अल्प है। थोड़ा सा परोपकार कर निश्चिन्त हो मत बैठो। अभी तुम्हारा मार्ग बहुत लम्बा है।

( ६४२ )

समभाव का उच्च और सबल स्वरूप, अश्रुमोचन, दृष्टिक्षेप और अनुकम्पा प्रदर्शन में ही नहीं है, किन्तु प्रत्यक्ष सहायता द्वारा उसकी साक्षात् मूर्ति देखी जाती है।

( ६४३ )

छोटी से छोटी सेवा भी उपयोगी सेवा है। ग़रीब मित्रों तथा तेजस्वी आत्मा को किसी भी प्रकार धिक्कार मत दो। अपनी शरण में आये हुए ओस-बिन्दु को मालती पत्र सूर्य के प्रखर ताप से बचा कर रक्षा करता है।

( ६४४ )

प्रेम बहुत ही प्यारा है और बहुत समय पर्यन्त वह टिक सकता है। वह नम्र है उसके लिये द्रव्य की आवश्यकता कुछ नहीं है, और उसे अनिष्ट का विचार तो कभी पैदा ही नहीं होता। यथार्थ प्रेम मृत्यु से भी अधिक बलवान है। अतः हमें प्रेम सिर्फ प्रेम ही चाहिये।

( ६४५ )

जिसको हम कर सकें ऐसे प्रत्यक्ष कर्म की एक बूँद कोरे बकवाद से बहुत अच्छी है।

( ६४६ )

अपने प्रिय जनों की मृत्यु के बाद उन पर फूल चढ़ाना और उनके गुणों की प्रशंसा करने की अपेक्षा उनके उद्देश्य को अपना उद्देश्य बनाकर उसे पूर्ण करना ही उनके प्रति सच्चा स्नेह प्रदर्शन है।

( ६४७ )

जिस जिस प्रकार जन समूह की सेवा की जाती है, उसी उसी प्रकार अधिक मिष्ट फल लगते जाते है।

( ६४८ )

ओस जिस तरह अपना कार्य गुप्त रीति से करती है उसी प्रकार तुम भी अपना कार्य गुप्त रीति से करो। जनता का ध्यान अपनी तरफ आकर्षित करने का विशेष प्रयत्न मत करो।

( ६४९ )

निराशा रूपी शीत से थरथराती हुई आत्मा में उत्साह को कूट-कूट-कर भर दो, जिससे शोक के काले दुर्दिन आत्मज्योति के प्रशस्त तेज से क्षणमात्र में नष्ट हो जाय और आशा, सफेद बरफ के समान चमकता हुई, जीवन में आनन्द संचार करे।

( ६५० )

सेवाव्रती पुरुष पृथ्वी को सींचने वाले अनन्त स्रोत के समान हैं।

( ६५१ )

अरे, दूसरों के सुख में भाग लेने और उनके दुःख में रोने से मिलने वाला आनन्द अपने दयालु हृदय को दो तो कैसा अच्छा है।

( ६५२ )

जिनके हृदय अतिशय विशुद्ध हैं, कोमल हैं—मधुर हैं प्रेम युक्त हैं—वे ही सहृदय हैं। उनका ही जीवन धन्य है सफल है। तुम भी व्यर्थ के झगड़ों में न पड़कर ऐसे पवित्र और उपयोगी बनो।

( ६५३ )

प्रेम हम सबको आश्वासन देता है, सहायता प्रदान करता है, बल देता है और हमारा उद्धार करता है। जीवन । मधुर और सुन्दर बनाने वाले कल्याणकारी असंख्य प्रसंग प्रेम में से ही मिलते हैं।

( ६५४ )

हम प्रत्येक प्रकार की अनुकम्पा कर सकते है, परन्तु अनुकम्पा को पूर्ण रीति से समझना ही कठिन बात है जो मनुष्य निस्स्वार्थ होकर अनुकम्पा करता है, स्वार्थ को लात मार देता है, दिखावटी ढोंग नहीं करता, वही श्रेष्ठ है।

( ६५५ )

तुम अपने दुःखों को भूलकर मित्रों की सहायता करो। सुवर्ण को सेवक बनाओ, तुम स्वयं उसके दास होकर मत रहो। भिक्षुक की झोली में खुले हाथ से भिक्षा दो। उनको सुखरूपी प्रकाश में लाओ।

( ६५६ )

प्यारे मीठे वचनों को वातावरण में उड़ने दो। उनका असर कितना पहुँचता है यह किसी को मालूम नहीं। **'डि० डब्ल्यू टेल मेज'**

( ६५७ )

दूसरों के नेत्रों से निकलते हुए अश्रुओं को पोंछने का प्रयत्न करना ही यथार्थ कीर्ति है। **'हेनरीसटन'**

( ६५८ )

चलने में जल्दी न करो; क्योंकि यह लक्षण क्रोध का है। देरी या सुस्ती करके न चलो; क्योंकि यह लक्षण आलस्य का है। कमर और हाथ हिलाते हुए भी मत चलो, क्योंकि यह लक्षण नपुंसकों का है। चलने के समय पीछे की ओर मुड़कर न देखा करो, क्योंकि यह लक्षण

निर्बुद्धियों का है। शिर झुका कर भी न चलो, क्योंकि यह लक्षण शोक का है और अकड़ कर तो कभी चलो ही नहीं, क्योंकि यह लक्षण घमंडियों का है। हर हालत में शान्त भाव से प्रसन्न मन से, सावधानी के साथ चलो। **'नीति'**

( ६५९ )

धन ख़र्च करने में ऐसा कोताही न करो कि लोग कृपण कहने लगें और ऐसा हाथ भी न खोल दो कि फ़ज़ूल ख़र्ची बन जाओ। लोगों को दिखाने या नामवरी लूटने के लिये धन को पानी की तरह न बहाओ। आमदनी से ख़र्च कम होना चाहिये, ताकि बचत आमदनी से शादी, ग़मी, अकाल और अचानक आई हुई आफ़त में सहारा मिले। **'नीति'**

( ६६० )

धन संचय में केवल द्रव्य ही नहीं है, वरन घर की चीजें अन्न, खेत, मकान, बगीचा, माल-मवेशी आदि हैं, इन सबका संचय होना चाहिये ताकि एक में कमी हो तो दूसरे से मदद पहुँचे।

( ६६१ )

दिन भर ऐसा काम करना चाहिये कि रात में निश्चिन्त नींद आवे, सालभर में आठ महीने ऐसा उद्योग करना चाहिये कि चौमासा सुख से घर बैठे कटे, जवानी में ऐसा सम्हल कर रहना चाहिये कि बुढ़ापे में दूसरे का मुँह न ताकना पड़े और जब तक जिन्दगी रहे तब तक ऐसा ही काम करते रहना चाहिये, जिससे मरने के बाद सुख शान्ति मिले। **'विदुर'**

( ६६२ )

जो कुछ करो जी लगा करो और देखो तुम्हारी आत्मा तुम्हारे काम से सन्तुष्ट है या नहीं। यदि तुम अपने आपको ही सन्तोष न दे सके तो

विश्वास रखो तुम किसी को भी सन्तुष्ट नहीं कर सकोगे। सच्चा आत्म सन्तोष ही औरों को सन्तुष्ट कर सकने की कुंजी है।

( ६६३ )

यदि तुम उन्नतिशील हुआ चाहते हो, तो नित्य प्रातःकाल उठकर अपनी दुर्बलताओं और त्रुटियों पर विचार करने का अभ्यास करो। बीते दिन जो तुमने असत्य बोलना, दूसरे का दिल दुखाना, किसी जीव को सताना आदि पाप किये हो, उनके लिये हृदयसे पछताओ। इससे निस्सन्देह तुममें अच्छे गुणों का वास होगा।

( ६६४ )

कभी बुराई के पास मत जाओ। यदि संयोग वश बुराई ही तुम्हारा पीछा पकड़ना चाहे, तो बस चटपट वहाँ से भाग खड़े हो। कभी भूल कर भी यह न सोचो कि हमें उसका सामना करना है। नहीं तो निस्सन्देह पतन के भयानक गढ़े में जा गिरोगे।

( ६६५ )

जो कुछ करो कर्तव्य समझ कर ही करो, यश या पुरस्कार के लोभ में मत पड़ो, बस कर्तव्य करते चले जाओ। कर्तव्य पर अटल होने से सूर्य की भांति चमक उठोगे।

( ६६६ )

सदा सत्य बोलो, क्योंकि असत्य रूपी काठ की हाँड़ी दूसरी बार नहीं चढ़ता। सत्य बोलने वालों की आत्मा सदा बलवान, निर्भीक और सदा उज्ज्वल बनी रहती है। सच बोलने वाले से सब प्रसन्न रहते हैं।

( ६६७ )

यदि किसी को अपनी प्रशंसा करानी हो तो उसे चाहिये कि वह सत्य बोला करे।

( ६६८ )

अपनी सुशीलता से सबको सन्तुष्ट रक्खो। कभी किसी से बुरा शब्द मत कहो। मिठ बोलिया बनने का प्रयत्न करो।

( ६६९ )

क्रोध को अपने पास कभी मत फटकने दो। क्रोधी लोगों से सब लोग घृणा करते हैं। क्रोध से ही खराब शब्द मुँह से निकलते हैं और सब अनर्थों की जड़ क्रोध ही है।

( ६७० )

मनुष्य को सदा हंसमुख रहना चाहिये। इसका असर इतना अच्छा पड़ता है कि तुम खुद आश्चर्य करने लगोगे।

( ६७१ )

अपने मन में सब से मिलनसारी का भाव रखो। दीन दुखियों और पशु-पक्षियों से दया का व्यवहार करो। जैसा बोवोगे वैसा काटोगे।

( ६७२ )

यदि तुम सब लोगों से दया का बर्ताव करते हो तो याद रखो, तुमसे भी कोई निर्दयता का व्यवहार न करेगा।

( ६७३ )

क्षमाशील बनने का उद्योग करो। अपने शत्रु से भी प्रेम-भाव निबाहो। क्षमा करने का गुण तुम्हें बहुत ऊँचा उठा देगा।

( ६७४ )

खूब परिश्रम कर विद्या पढ़ो। विद्या ही सब उन्नति का मूल है। खूब विद्या पढ़ा हुआ बालक ही अपना, अपने कुटुम्ब का, अपनी जाति का और अपने देश का मस्तक ऊँचा करता है।

( ६७५ )

जब तक विद्या पढ़ो, फैशन- बनठन-से बिलकुल दूर रहो। लच्छेदार बाल, पान, सिगरेट, सेंट–लवेण्डर —यही सब आजकल के बालकों के सिंगार हो रहे हैं। ये सभी वस्तुएँ त्यागने योग्य हैं। विद्या पढ़ने के शौक़ीनों को एकान्त में, सादगी और सफाई से रहना चाहिये।

( ६७६ )

सदा उस देश का ध्यान रखो, जिसमें तुम्हारा जन्म हुआ है। जिसके मिट्टी और जल से तुम्हारा शरीर पल कर इतना बड़ा हुआ है। उसके प्रति तुम्हारा विशेष कर्तव्य है- याद रखो- जिसने अपनी मातृभूमि की सेवा न की उसका जीवन वृथा है।

( ६७७ )

जो आदमी स्वच्छ सुथरे भाई के हाथ की रोटी नहीं खायेगा, वह अवश्य ही परायों के पैर की गहरी ठोकर और मैली जूती खायेगा। जो भाई को बेगाना समझेगा, उसे निश्चय ही बेगाने का गुलाम बनना पड़ेगा। दो में से एक चीज़ तो खानी ही पड़ेगी स्वदेशी भाई के स्वच्छ हाथ की रोटी, या विदेशी भाई के मैले पैर की जूती।

'भगवानदास एम० ए०'

( ६७८ )

दान, उदारता और अतिथि सत्कार की शिक्षा मैंने अपनी माता से प्राप्त की है, उनका जीवन, दान और अतिथि सत्कार के सम्बन्ध में बड़ा प्रभावशाली था। उससे मुझे बहुत सी शिक्षायें प्राप्त हुई थीं।

'लालालाजपतराय'

( ६७९ )

पोथी-पतरा, क्रिया-किया, योग-जप, ज्ञान ध्यान-प्रेम के आगे सब धूल समान है। प्रेम ही भक्ति है, प्रेम ही ज्ञान है और प्रेम ही मुक्ति है। यही पूजा पाठ है। **'स्वामी विवेकानंद'**

( ६८० )

तुम्हारे ऊपर बड़ी जिम्मेदारी है। अपने कर्तव्य का पालन करना-कभी किसी के डर, लाभ, लालच आदि में अथवा अपने प्राण की रक्षा के लिये धर्म न छोड़ना-धर्म से न डिगना। नित्य सत्य का पालन करना व्यायाम करना और सेवा तथा योग्यता से अपने को मान का पात्र बनाना। **'पं० मदनमोहन मालवीय'**

( ६८१ )

हम लोग श्याम सुन्दर कृष्ण के सेवक हैं। वही हमारे इष्टदेव हैं, और हम चाहते हैं कि श्रीकृष्ण के सन्देश से हमारे नवयुवकों का हृदय भर जाय। **'साधु वा स्वामी'**

( ६८२ )

यदि पेट की चिन्ता न होती तो कोई चिड़िया जाल में न फँसती, बल्कि कोई बहेलिया जाल ही न बिछाता। **'शेखसादी'**

( ६८३ )

ऐ अमीरो अगर तुममें न्याय और दया होती और हममें सन्तोष और शान्ति, तो संसार से माँगने की प्रथा ही उठ जाती। **'शेखसादी'**

( ६८४ )

अगर राजा कभी प्रजा के बगीचे से एक सेव तोड़ कर खाले तो उसके नौकर लोग उस पेड़ की जड़ तक खोद कर खा जायँगे। **'शेखसादी'**

( ६८५ )

परिश्रमी मनुष्य के लिये परिश्रम कर चुकने के बाद या अवकाश के समय, मनोरंजन का सबसे सुन्दर साधन है, कोई अच्छी पुस्तक पढ़ना जिससे चित्त प्रसन्न हो खेद-ग्लानि दूर हो। 'हरशेल'

( ६८६ )

जीते-जागते मनुष्य को सिवा पुस्तक से बढ़कर और कोई आश्चर्य-जनक वस्तु नहीं है। पुस्तक ही उन मरे हुए महापुरुषों का सन्देश है जिन्हें हमने कभी देखा नहीं ( जो शायद जीवित भी है तो )।

( ६८७ )

यह सिद्धान्त है कि उदार बनने के प्रथम न्याय के सिद्धान्त को स्वीकार करो और स्वयं न्यायी बनो। यही सिद्धान्त सत्य है, क्योंकि मनुष्य अपने कर्तव्य का ख्याल न रखे तो वह परोपकार में चाहे जितनी शक्ति लगावे तो भी उसे उदार नहीं कहा जा सकता।

( ६८८ )

मनुष्य का प्रथम कर्तव्य न्याय है और दूसरा अपने पड़ोसियों को न्याय परायण बनने में सहायता देना। जो उदार मनुष्य ऐसा करना भूल जाता है वह केवल दम्भी और उड़ाऊ है। उसके द्वारा किसी का सच्चा हित नहीं हो सकता।

( ६८९ )

भाग्य देवी प्रसन्न होकर दयालु हृदय के मनुष्य पर जो स्वर्ण वृष्टि करती है तो वह खुले हाथ से ग़रीबों को दान करता है और निराधारों का पोषण करता है। जो मनुष्य स्वभाव से सदाचारी, न्यायी और परोपकारी होता है, वही इस प्रकार जीवन के उद्देश्य को सिद्ध करता है और उसको मिला हुआ धन आम कार्य में व्यय होता है।

( ६६० )

सच्चे ज्ञानी में अज्ञानी की अपेक्षा उद्दंडता कम होती है। चतुर मनुष्य के मन में बारंबार शंकाएँ आती रहती हैं जिनका परख कर वह अपने विचारों को अपने अनुकूल स्वरूप देता रहता है, परन्तु मूर्ख मनुष्य सदा हठी होता। उसके मनमें किसी प्रकार की शंका नहीं होती, वह सब कुछ जानता है-हाँ, अज्ञानी रहता है तो सिर्फ अपनी मूर्खता के विषय में।

( ६६१ )

चतुर मनुष्य को अपने दोष मालूम होते रहते हैं अतएव वह नम्र बनकर रहता है, परन्तु मूर्ख अपने मन प्रवाह की हलकी कंकड़ियों को देखकर ही प्रसन्न होता है। वह उनको निकाल निकाल कर मोती की तरह दिखाता है और जब दूसरे लोग उसकी प्रशंसा कर देते हैं तो वह बहुत ही खुश होता है।

( ६६२ )

बुद्धिमान मनुष्य जितने ख़र्च से जितनी सफलता और प्रशंसा प्राप्त कर सकता है, मूर्ख उससे १०० गुना ख़र्च करके भी उतनी सफलता या प्रशंसा नहीं पा सकता।

( ६६३ )

दुःख का ढोंग करके तुम अनुदार मत बनो। किसी किसी समय तो उदार बनो जब कोई ग़रीब मनुष्य बाहर से आकर सहायता की प्रार्थना करे तो अवश्य यह मालूम करो कि उसका कहना यथार्थ है या नहीं। दो पैसे बचाने के अभिप्राय से अप्रिय और कड़वे शब्दों में उसकी तर्जना मत करो, वरन् सत्य शोधन के लिये प्रयास करो।

( ६९४ )

'सहायता करो' 'सहायता करो' इस प्रकार की ज़ोर शोर की पुकार जो चारों तरफ से सुनने में आती हैं, उसे दूर करना चाहिये। लोगों के दुःखों की कमी और सुखों की बढ़ती का प्रयत्न करना चाहिये।

( ६९५ )

दुःखी मनुष्यों को प्रेम युक्त सत्य वचनों से आश्वासन दो, उनके हृदय में उत्साह की बिजली दौड़ाओ। परिश्रम हो तो भी उनकी सहायता करो, अत्याचार और अज्ञान के पंजे में पड़े हुए मनुष्योंको छुड़ाओ।

( ६९६ )

यह निश्चय समझना चाहिये कि जिसमें वास्तविक प्रेम है उसका कभी नाश नहीं होता और वह निरुपयोगी नहीं हो सकता।

( ६९७ )

कितने ही मनुष्य ऐसे होते हैं जिनकी आवश्यकतायें उनके मित्र पूरी करते हैं और उनको इच्छाएँ उनसे सन्तुष्ट होती हैं, परन्तु उन मित्रों के लिये वह क्या करता है? क्या इसका विचार कभी आता है? ऐसा करने की अपेक्षा मित्र बनना और सहायता लेने की अपेक्षा सहायता करना उत्तम है।

( ६९८ )

हमको कुछ मिलता नहीं, इसकी अपेक्षा क्या दे सकते है यही विचार करना आवश्यक है।

( ६९९ )

सदा स्मरण रखना चाहिये कि छोटे से छोटे तुच्छ मनुष्य स्वाभाविक मधुर और हितकर बचन, प्रेमी हृदय और आनन्दप्रद हास्य से संसार को विशेष सुख कर, मधुर और उपयोगी बना सकता है।

( ७०० )

कितने ही मनुष्य इस प्रकार का विचार करके कि हम दूसरों की क्या सहायता कर सकते है, अपने जीवन को बिलकुल व्यर्थ समझकर निराशा के अधीन हो जाते हैं। वे अपने पीछे संसार में सुख की सन्तान को क़ायम नहीं रख सकते। दूसरों को पिघला सकें ऐसे शब्द भी नहीं बोल सकते।

( ७०१ )

मनुष्य केवल रोटी से ही नहीं जीता, उसकी उन्नति के लिये उसे दिमाग के लिये भी भोजन मिलना चाहिये। **'आचार्य ध्रुव'**

( ७०२ )

मैंने कभी कोई ऐसी कार्यवाही नहीं की जिसे खुले तौर पर बयान करने पर मुझे ज़रा भी शर्म या डर हो।

( ७०३ )

सत्य को इस तरह पकड़ रहो जैसे कोई दीपक को पकड़ता है और आगे बढ़ते जाओ। **'भगवान् बुद्ध'**

( ७०४ )

केवल सत्य की ही जय होती है, झूठ की कभी नहीं होती। सत्य की सहायता से ही ऋषिगण देवयान मार्ग से परमात्मा के परमधाम तक पहुँचते है। **'उपनिषद्'**

( ७०५ )

कल्याणकारी कर्म करने वाले की न इसलोक में दुर्गति होती है न उस लोक में। **'गीता'**

( ७०६ )

जैसा परम-ज्ञान महापुरुषों के चरण-रज-सेवन से मिलता है वैसा वैदिक कर्म दान, गृहस्थ धर्म पालन, वेदाध्ययन, जल, अग्नि या सूर्य की उपासना आदि कर्मों से कभी नहीं मिलता। 'भागवत'

( ७०७ )

क्रोध, दुष्कर्म, कृपणता तथा असत्य को जीतने के शस्त्र क्रम से क्षमा, सुकर्म, उदारता और सत्य हैं। 'महाभारत'

( ७०८ )

मूर्ख कौन है ? जो बकवाद करता है। मूर्ख को चाहिये कि सभा में मुँह न खोले और बुद्धिमान् केवल प्रश्न का उत्तर देने के लिये ही बोले। बहुत सुनना और थोड़ा बोलना ही बुद्धिमान् का लक्षण है।

'बुजुर चिमिहर'

( ७०९ )

जो ज्ञान की बड़ी-बड़ी बातें बनाते हैं, पर जिनके हृदय में दया नहीं है वे ज़रूर नरक में जायँगे। 'कबीर'

( ७१० )

वह मनुष्य धन्य हैं जो दयाशील हैं, क्योंकि परमपिता की अपनी दया के वे ही भागी हैं। 'ईसा'

( ७११ )

शूर-वीर वही है जिसका हृदय हरि से भरपूर है। 'नानक'

( ७१२ )

जो दूसरे के अवगुण की चर्चा करता है वह अपना अवगुण प्रकट करता है। 'बुद्ध'

( ७१३ )

मनुष्य को चाहिये कि अपना मित्र आपही बने, बाहरी मित्र की खोज में न भटके। **'जैन सूत्र'**

( ७१४ )

जो सच्चे हृदय के साधु होते हैं वे मन को पीसकर चाले हुए मैदे की भाँति कर देते हैं, जिसमें मान या गर्व की किरकिरी नहीं रह जाती। **'पारसभाग'**

( ७१५ )

भक्त वह है जो अपने मन को पृथ्वी के समान सहिष्णु और परोपकारी बना ले, जिसमें लोग खाद डालते हैं, परन्तु वह अन्न ही देती है। **'जगजीवनसाहिब'**

( ७१६ )

जिस बात से समाज को सुख पहुँचे उससे यदि तुम्हें कुछ दुःख भी पहुंचे तो नाराज़ मत हो। **'मारकस आरीलियस'**

( ७१७ )

जो बाहिर से सुन्दर है पर जिसका मन मैला है उससे तो कौवा अच्छा है जो बाहर भीतर एक रंग है। **'दरिया साहिब'**

( ७१८ )

संसार में तीन बातें बड़ी उपकार करने वाली हैं, परन्तु धारण करने में कठिन हैं–( १ ) निर्धनता में उदारता, ( २ ) एकान्त में इन्द्रिय निग्रह और ( ३ ) भय में सत्य।

( ७१९ )

अच्छे गुणों को सीखने में तुम्हारी यह धारणा होनी चाहिये कि तुम्हारा अभिप्राय अपने सुधार का है न कि लोक में बड़ाई पाने का। **'चीनी महात्मा'**

( ७२० )

सत्य से बढ़ कर संसार में अन्य कोई धर्म नहीं है और मिथ्या भाषण से बढ़ कर कोई दूसरा पाप नहीं है, अतः ऐसी दशा में सत्य की अर्चना करो, उसे मत छोड़ो । **'व्यास'**

( ७२१ )

सत्यवादी मनुष्य यद्यपि आर्थिक दृष्टि से दरिद्र है, किन्तु वह मनुष्यों का वास्तविक राजा है। **'बर्न्स'**

( ७२२ )

प्रत्येक मनुष्य को चाहिये कि वह जैसा दूसरे को उपदेश करता है। वैसा पहिले अपने को बना ले। जिसने अपने मन इन्द्रियों को अपने वश किया वह दूसरों को भी वश में कर सकता है। **'धर्मपद'**

( ७२३ )

यदि तुम क्रोध से विक्षुब्ध होने पर दाँत को पीस पीस पैर पटक तथा शरीर को कम्पित कर अपनी आत्मा को शान्त करने के लिये प्रयास करते हो तो वह शान्ति नहीं है, शांति प्रशान्तसागर के सदृश है जो कि मनुष्यों द्वारा फेंके हुए अशुद्ध जल को भी अपने सदृश शुद्ध कर ही देता है। **'महात्मा एकनाथ'**

( ७२४ )

पाप-कर्म क्षेत्र में बोये हुये बीज की भाँति शीघ्र ही फल नहीं देते, किन्तु समय चक्र से वे उस कर्म के कर्ता को समूल नष्ट कर देते हैं। **'मनु'**

( ७२५ )

कर्म-पथ में प्रभु पर विश्वास कर बढ़ते जाओ। सर्वदा अपनी दृष्टि को उसके शब्दों पर बद्ध रखो, तब तुम्हें आशातीत सफलता होगी। **'लूथर'**

( ७२६ )

भाग्यवान वह है जिसका कि धन गुलाम हो और अभागा वह है जो धन का गुलाम हो। **'हसन वसरी'**

( ७२७ )

अच्छे कर्मों का सम्पादन करो, स्वप्नमय वातावरण में लीन मत रहो। इस प्रकार करने से तुम जीवन, मरण एवम् अनन्त विस्तृत काल को एक महान् तथा मधुर संगीत के रूप में परिवर्तित कर दोगे। **'चार्स किंग्स्ले'**

( ७२८ )

शिक्षा प्राप्त करते समय ऐसा ध्यान रखो कि मानों तुम्हें सर्वदा के लिये संसार में जीवित रहना है, किन्तु संसार में जीवित रहने का ध्यान करते हुये यह सोचो कि मानों तुम्हें कल ही मृत्यु का ग्रास बनना है।

**'अनसेलस दे इनसूलिस'**

( ७२९ )

आदर्श-मनुष्य मृत्यु के पश्चात् भी शताब्दियों तक ऐसा प्रकाश छोड़ जाता है जो मनुष्य के पथ को सर्वदा आलोकित करता रहता है।

**'लांगफेलो'**

( ७३० )

दयालु पुरुष दूसरों के दुःख से पीड़ित हो जाते है, यह भावना ईश्वर के प्रति सर्वोत्कृष्ट पूजा के समान है। **'भागवत'**

( ७३१ )

अपने शत्रुओं को प्यार करो, जो तुम्हें शाप दे उन्हें तुम आशीर्वाद दो। जो तुमसे घृणा करे उनके प्रति भलाई करो और उनके लिये भी प्रभु से शुभ प्रार्थना करो जो तुम्हारे साथ तिरस्कार पूर्ण व्यवहार करते हों। **'ईसा'**

( ७३२ )

इस बात को अपने मस्तिष्क से निकाल दो कि तुम स्त्रियों से गौरव शाली हो। स्त्रियाँ तुम्हारी इच्छाओं और महत्ताकांक्षाओं की संगिनी हैं। वे तुम्हें सुख-दुःख में सहायता देती हैं। —**'मेजनी'**

( ७३३ )

इस संसार में स्त्रियों का राज्य है, ये ही माताओं, पुत्रियों और पत्नियों के रूप में इस जीवन के संकुचित मार्ग को विस्तृत बनाती हैं। **'मार्टगुमरी'**

( ७३४ )

सदाचार का पालन करने से मनुष्य को दीर्घायु मनचाही सन्तान और अमित धन मिलता है। सदाचार से अनेक दुर्गुण भी नष्ट हो जाते हैं। **'मनु'**

( ७३५ )

जिस गृह में मूर्खों का आदर नहीं होता, जहाँ अन्न संचित रहता है, और जहाँ पति-पत्नि में कलह नहीं होता, वहाँ लक्ष्मी स्वयं आती हैं। **'चाणक्य'**

( ७३६ )

समाज के आचार को बनाना, गृह का प्रबन्ध करना तथा कोमलता प्रेम और सहन शीलता से जीवन की कठिन और विषम यात्रा को सरल तथा सुखद बनाना स्त्री का ही कार्य है। **'टामसन्'**

( ७३७ )

विचार से बढ़ कर कोई राजा नहीं, न्याय से बढ़ कर कोई रक्षक नहीं, यथार्थ से बढ़ कर कोई खड्ग नहीं और सत्य से बढ़ कर कोई सन्धि नहीं। **'सुकरात'**

( ७३८ )

जो सुमार्ग से भटके हुए हैं, उनको प्यार से समझा कर उचित मार्ग पर लाओ। दुर्जनों के सुधार के लिए भी कोमल बात कठोर बात से बढ़ कर उपयोगी होती है। **'दान्ते'**

( ७३९ )

नौकर से अपना गुप्त भेद कहना, उसे नौकर से स्वामी बना लेना है। **'अरस्तू'**

( ७४० )

भाई, यह संसार किसी के साथ नहीं जाता। इसलिये इसके साथ दिल मत लगाओ—लगाओ इसके बनाने वाले के साथ। उसके साथ सम्बन्ध जोड़ने से तुम्हारा भला होगा।

( ७४१ )

प्राण-वायु के निकल जाने पर चाहे लाश तख्त पर पड़ी रहे या खाक पर दोनों पर एक-सी है। मरने पर राजा और रङ्क में कोई फ़र्क़ नहीं रहता।

( ७४२ )

दूसरे की भलाई या परायी जान बचाने के लिये अगर झूठ भी बोलना पड़े तो कोई दोष नहीं है। वह सच खराब है जिससे दूसरे की हानि हो या किसी की जान जावे।

( ७४३ )

जो दिन जिन्दा है उसको ग़नीमत समझ—और इससे पहिले कि लोग तुझे मुर्दा कहें नेकी कर जा।

( ७४४ )

सुन्दरता और बड़े-डील डौल से किसी का मान नहीं हो सकता। मान गुणों से होता है। बुद्धिमानी एवं शूरवीरता का ख़ूबसूरती और बद-सूरती से कोई सम्बन्ध नहीं है।

( ७४५ )

परायी उन्नति देख कर जलने वाले पुरुष वृथा जला कर अपनी काया को ख़ाक करते हैं। जब मालिक मिहरवान है और सौभाग्य सूर्य के अस्त होने का समय नहीं आया है तब तक वे उसके नाश करने की हज़ारों कोशिशें करके भी सफल मनोरथ नहीं हो सकते।

( ७४६ )

आवश्यकता के समय ही हर चीज़ की क़दर होती है। भूख में गूलर भी पकवान होते हैं।

( ७४७ )

दुःख भोगने से ही सुख की कदर मालूम होती है। नीम चबाने के बाद ही मिठाई का सच्चा स्वाद आता है।

( ७४८ )

जो तुझ से डरता है उससे तू भी डर—यह—दूसरी बात है कि वैसे तू सौ आदमियों को लड़ाई में हरा सकते हो।

( ७४९ )

जो तुम पर विश्वास न रखते हों, तुम्हारी बातों को संदेह की दृष्टि से देखते हों, तुमसे भय भीत रहते हों, उन लोगों का विश्वास मत करो।

( ७५० )

मैंने अपना जीवन मूर्खता में काटा, मैं कर्तव्य पालन न कर सका—भाईयो, तुम मेरे जीवन से शिक्षा लाभ करो, उसका अनुकरण मत करो।

( ७५१ )

अमीर गरीब सभी ज़रूरतें रखते हैं। इस लिये दीन हैं—अमीरों की ज़रूरतें ज्यादा हैं—इसलिये औरों की अपेक्षा वे दीन भी ज़्यादा हैं।

( ७५२ )

ए ज़बरदस्त, ए पीड़क! तू कब तक दूसरे को तकलीफ़ देगा। तेरा धन सम्पदा किस काम आवेगा। तू मनुष्य-पीड़क है, अतएव तू जितनी जल्द मर जाय, अच्छा है।

( ७५३ )

जो अत्याचारी है उसका सोना जागने से अच्छा है, सच तो यह है कि उसके जीवन से उसका मरण ही अच्छा है।

( ७५४ )

जो मूर्ख दिन दहाड़े क़ाफ़ूर की बत्ती जलाता है, उसको एक दिन ऐसा आयेगा जो रात को जलाने के लिये तैल भी न मिलेगा। उसकी फ़जूल खर्ची एक दिन विषमय फल लायेगी ही।

( ७५५ )

जो लोग एकान्त वास करते हैं, उनको कोई हानि नहीं पहुँचता। कुत्तों के दाँत और आदमियों का मुँह उनके लिये बेकार हो जाता है।

( ७५६ )

राजसेवा करना और नङ्गी तलवार की धार पर चलना एक ही बात है। राज-सेवा से बहुधा मनुष्य मालामाल हो जाता है सही, किन्तु उसके चित्त में शान्ति नहीं रहती और मौक़ा पड़ने पर उसे अपनी जान से भी हाथ धोना पड़ता है।

( ७५७ )

ग़रीब का रईस के घर गुज़ारा नहीं, वहाँ उसको दो शत्रुओं से लड़ना पड़ता है। एक द्वारपाल से और दूसरे--कुत्ते से। इसलिये वहाँ किसी वसीले बिना जाना उचित नहीं है।

( ७५८ )

धन को संचित रखना उचित नहीं। मनुष्य को चाहिए कि अपने सुख और पराये सुख के लिये ख़र्च करे।

( ७५९ )

गधा बेशक बहूदा जानवर है, मगर हमारा बोझ ढोता है, इसी से हमें प्यारा है। मतलब यह कि सब को 'काम' प्यारा है।

( ७६० )

लोहे के पंजे से अपना पंजा लड़ाने वाला आदमी अपनी कलाई को ही तोड़ लेता है।

( ७६१ )

तुम्हारे पाँव के नीचे दबी चींटी का वही हाल होता है जो यदि तुम हाथी के पाँव के नीचे दब जाओ तो तुम्हारा हो। दूसरे के दुःख को अपने दुःख से तुलना किये बिना हम उसकी प्रकृत अवस्था का ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकते।

( ७६२ )

दुश्मन को खुश रखने की सबसे बड़ी युक्ति यह है कि जब जब वह तेरी परोक्षा में बुराई करे तभी तभी तू उसके प्रत्यक्ष में उसकी प्रशंसा कर।

( ७६३ )

अमीरों की सेवा में एक बार जाकर ही निराश मत हो जाओ। यदि तुम दो बार भी उनके पास से ख़ाली लौट आओ तो भी तीसरी बार जाओ। उनकी दया दृष्टि जरूर उस बार तुम पर पड़ेगी।

( ७६४ )

जहाँ तक हो किसी के मन को मत दुखाओ। याद रखो—ग़रीब की आह से संसार उलट पुलट हो सकता है।

( ७६५ )

मुझ से जिस जिस ने बाण विद्या सीखी—सीख चुकने पर अन्त में उसी उसने मुझी पर बाण सीधा किया। हा—कृतघ्नता!

( ७६६ )

ज़िन्दगी भी हवा के झोंके की तरह गुज़र जाती है, उसी समय कटुता, मधुरता, अच्छा, बुरा सभी का ख़ात्मा हो जाता है।

( ७६७ )

राजा की सम्मति के प्रतिकूल अपनी सम्मति प्रगट करना अपने ही खून से अपने हाथ धोने की चेष्टा करना है।

( ७६८ )

यह बात सच है कि बहुदर्शी पुरुष ही बहुत झूठ बोला करते हैं। मूर्ख आदमी का झूठ भी मामूली ही होता है।

( ७६९ )

बड़ा आदमी वह है जो गुस्से में भी आत्म संयम किये रहता है।

( ७७० )

ज़रूरतमन्दों की ज़रूरतें पूरी कर, आख़िर तू भी ज़रूरतें रखता है।

( ७७१ )

स्वतंत्रता पूर्वक परिश्रम कर के रोटी कमाना और पर्णकुटी में रहना अच्छा, किन्तु पराई ताबेदारी कर के महलों में रहना और सब तरह के ऐशो आराम करना भला नहीं है। सोने के पिंजरे में कैद हो कर मोती

चुनने वाली चिड़िया से जङ्गल में आजादी से घूम फिर कर अपनी जीविका उपार्जन करने वाली चिड़िया हज़ार दर्जे अच्छी हैं।

( ७७२ )

दुश्मन के मरने की खुशी मत कर, आख़िर तू स्वयं भी अमर नहीं है।

( ७७३ )

बिना बोले ही यदि मेरा काम हो जाये तो मुझे फ़िजूल बात बनाने की क्या ज़रूरत है।

( ७७४ )

मेरा यह दावा नहीं है कि मैंने तेरी सेवा की है—इसलिये तुझे प्रसन्न होना चाहिये। मेरी तो यह प्रार्थना है कि तू मेरे पापों को क्षमा कर दे। मेरा कोई अधिकार नहीं है बल्कि मैं भिक्षा माँगता हूँ।

( ७७५ )

दूसरे की बड़ाई करने वाले से तू यह आशा मत रख कि वह दूसरे के सामने तेरी प्रशंसा करेगा। जो औरों की तेरे सामने बुराई करता है, वह तेरी भी औरों के सामने बुराई करेगा।

( ७७६ )

जाति का कोई भी व्यक्ति यदि ग़ल्ती करता है तो उस जाति के छोटे बड़े सभी आदमियों की अप्रतिष्ठा हो जाती है—उनकी बुराई होती है।

( ७७७ )

अभिमानी मनुष्य अपने तईं जगत् में सबसे बड़ा सबसे गुणवान और दोष हीन समझता है, किन्तु सच्चा महात्मा वही है, जिसे ज़रा भी अभिमान नहीं है।

( ७७८ )

मेरे बाहिरी ठाट से लोग मुझे नेक समझते हैं, परन्तु अपनी भीतरी नीचता के कारण मैं अपना सिर झुकाये हुए हूँ।

( ७७९ )

जब सुनने वाले में समझने की योग्यता नहीं होती तब कहने वाले की बात का उस पर कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ता। पहिले समझने की योग्यता पैदा करो, फिर तुम कहने वाले की बात से लाभ उठा सकोगे।

( ७८० )

सफ़र से फूल वाले पेड़ के नीचे सड़क के किनारे सोना निस्सन्देह बहुत अच्छा है, पर उसमें जान जाने का भी डर है।

( ७८१ )

वही आराम अच्छा है, जिसका परिणाम अच्छा हो।

( ७८२ )

विपत्ति के समय हाथ पर हाथ रख कर निराश हो कर मत बैठ जा-दुश्मनों की खाल और दोस्तों के कपड़े तक उतार ले।

( ७८३ )

ईश्वर जिसको अपने द्वार से भगा देते हैं वह घर घर टुकड़े माँगता फिरता है, परन्तु जिसे वह अपने पास बुला लेते हैं उसे किसी के द्वार जाने की ज़रूरत नहीं रहती।

( ७८४ )

न तो मै घोड़े पर सवार हूँ—न ऊँट की तरह बोझ से लदा हुआ हूँ। न किसी का मालिक हूं न किसी का सेवक। मैं अगले पिछले झगड़ों को छोड़ कर सुख पूर्वक साँस लेता हूं और मौज़ में अपना जीवन व्यतीत करता हूँ।

( ७८५ )

जो अपने को ईश्वर भक्त समझता है, उसे चाहिये कि वह ईश्वर के सिवा और किसी से सम्बन्ध न रखे।

( ७८६ )

दीन-दुखियों की सहायता करने से आफत टलती है। जो दुखियों को दान नहीं देते उनका धन अत्याचारी उनसे ज़बरदस्ती छीन लेते हैं।

( ७८७ )

बुद्धिमान खेल से भी शिक्षा प्राप्त कर लेता है। मूर्ख आदमी तर्क शास्त्र के सौ अध्याय सुन लेने पर भी खेल और मूर्खता ही सीखता है।

( ७८८ )

यदि मनुष्य कम भोजन करे तो उसको ईश्वरीय ज्योति के दर्शन हों। जो नाक तक भोजन से भरे रहते हैं वे बुद्धि से खाली होते हैं।

( ७८९ )

प्रातःकाल के समय चिड़ियाँ चह चहा कर ईश्वरगुण गान करती हैं। उस समय यदि कोई मनुष्य ईश्वराराधन न करे तो कैसी शर्म की बात है।

( ७९० )

संसार परिवर्त्तनशील है। फूल कभी मुर्झाता है कभी खिलता है। वृक्ष के पत्ते कभी गिर जाते हैं और कभी हरे-भरे पत्तों से उसकी शोभा होती है।

( ७९१ )

अगर तुम्हें धन की अभिलाषा हो तो सन्तोष की खोज करो, क्योंकि वह अमूल्य धन है।

( ७९२ )

यदि तू अपनी निन्दा स्वयं करता रहेगा अर्थात् अपने ऐबों पर नज़र रखेगा तो दूसरों को तेरी निन्दा करने का अवसर न मिलेगा।

( ७९३ )

अपरिचित मनुष्यों के साथ बाग़ में रहने से मित्रों के साथ बेड़ियाँ पहिन कर रहना अच्छा है।

( ७९४ )

भक्त पुरुष भजन के लिये ही रोटी खाता है वह रोटी खाने के लिये भजन का ढोंग नहीं करता।

( ७९५ )

भूखे मनुष्य के लिये हलुआ पूरी की ज़रूरत नहीं, उसके लिये रूखी रोटा ही सब से अधिक स्वादिष्ठ भोजन है।

( ७९६ )

मनुष्य खाक से बना है यदि उसमें नम्रता नहीं है तो फिर वह आदमी नहीं है।

( ७९७ )

अच्छे कपड़े बदसुरती को दूर नहीं कर सकते।

( ७९८ )

दान करने से धन घटता नहीं—बढ़ता है। अंगूरों की शाखायें काटने से और ज़्यादा अंगूर आते हैं। दान से धन तो बढ़ता ही है और चित्त की शुद्धि नफे में हो जाती है।

( ७९९ )

मैं उस चींटी के समान हूँ जो पाँव तले रौंदो जाती है किन्तु वह बर्र नहीं हूँ, जिसके डंक की तकलीफ से लोग रोते हैं।

( ८०० )

ऐ सन्तोष ! मुझे दौलतमन्द बना दे—क्योंकि संसार की कोई दौलत तुझ से बढ़ कर नहीं है ।

( ८०१ )

मैं सूखी रोटी और थेगड़ो दार गुदड़ी में खुश हूं। मैं मनुष्यों के एहसान के भार से अपने दुःख का भार हलका समझता हूं ।

( ८०२ )

भोजन सिर्फ ज़िन्दा रहने के लिए और ईश्वर भजन करने के लिए किया जाता है, पर तू मूर्ख, खाने के लिए ज़िन्दगी को समझता है ।

( ८०३ )

अल्पाहारी आसानी से तकलीफों का सामना कर लेता है, पर जिसने सिवाय शरीर पालने के और कुछ किया ही नहीं उस पर सख्ती की जाती है तो वह मर ही जाता है ।

( ८०४ )

निःसन्देह भोजन से प्राणरक्षा होती है, पर ज़्यादा खाने से हानि भी पहुँच जाती है । अतएव भूख देख कर ही भोजन करना चाहिए ।

( ८०५ )

दुष्ट के हाथ से मिठाई खाने की अपेक्षा सज्जन के हाथ से इन्द्रायण का कड़वा फल खाना अच्छा है ।

( ८०६ )

यदि किसी रोज़ी से इज़्ज़त घटती हो तो वैसी रोज़ी से ग़रीबी ही अच्छी है ।

( ८०७ )

दुष्ट स्वभाव वाले मनुष्य के सामने अपनी आवश्यकताओं को कहने से दुःख के सिवा तुम्हें और कुछ न मिलेगा ।

( ८०८ )

विपत्ति के समय धीरज न छोड़ें। ज़्यादा से ज़्यादा तंगी में भी जिस तिस के सामने हाथ ओट कर अपना मान न गँवावे।

( ८०९ )

यदि बिल्ली के पर होते तो संसार में चिड़ियों का नाम भी न छोड़ती।

( ८१० )

झुलसते हुए गर्म रेत के मैदान में प्यासे मुसाफ़िर के मुँह में मोती या सीपी व्यर्थ है। जब कि खाने पीने की चीज़ों के बिना मनुष्य थक कर गिर जाता है, उस समय उसके कमर बन्द में चाहे सोना हो चाहे ठीकरी सभी बेकार है।

( ८११ )

जो हाथ प्रार्थना के समय ईश्वर की ओर उठाये जो और किसी की सहायता के समय बग़ल में छिपा लिये जाते हैं—वे किस काम के हैं?

( ८१२ )

शिकारी सदा शिकार को ले जाता हो यह बात नहीं, कभी शिकार भी शिकारी को फाड़ डालता है।

( ८१३ )

जब मौत का समय आ जाता है तब तेज़ भागने वाले के परों को भी मृत्यु बाँध देती है। जब दुश्मन आ दबाता है तब कमानी की कमान भी नहीं खिंचती।

( ८१४ )

खान्दानी आदमी यदि कालचक्र से फँस कर दरिद्र हो जाय तो उसकी पदवी को कम न समझना चाहिये, क्योंकि उच्च वंशज की भद्रता हर हालत में बनी रहती है।

( ८१५ )

जब भाग्य अनुकूल नहीं होता, तब हुनरमन्द जहाँ जाता है उसे कोई नहीं पूछता है—यों वह जाता ही ऐसी जगह है जहाँ उसका कोई नाम तक नहीं जानता।

( ८१६ )

किसी मूर्ख आदमी ने किसी भद्र पुरुष को बुरा कहा—उस भद्र पुरुष ने कहा—भाई, मै जैसा कि तुम कहते हो, उससे भी बुरा हूँ। मैं जितना बुरा हूं, उसको तुमसे अधिक मैं जानता हूं।

( ८१७ )

बात कैसी भी मीठा हो, कितनी ही अच्छी हो, पर उसे एक बार ही कहना चाहिये।

( ८१८ )

बुद्धिमान और विचारशील पुरुष, जब तक दूसरा बोलता रहता है अपनी बात शुरू नहीं करते।

( ८१९ )

मनुष्य! बात इस ढङ्ग की कर, जिससे किसी के मन को दुःख न हो और सत्य बोलने पर अपने शत्रु की भी इज्ज़त कर।

( ८२० )

नौकरों से वही काम लेना चाहिये, जो उसका है। उसे लाड़-प्यार कर के ख़राब कर देना अच्छा नहीं।

( ८२१ )

उनसे प्रेम की कहानी मत सुनो जो विपद् के समय अपने मित्र को छोड़ देते हैं।

( ८२२ )

जिससे तबियत मिली होती है उसके साथ नरक में जाना भी अच्छा है और जिससे तबियत का लगाव नहीं उसके साथ स्वर्ग में जाना भी अच्छा नहीं।

( ८२३ )

जो अपने पिता से भक्ति पूर्वक व्यवहार नहीं करते, उन्हें अपने पुत्रों से यह आशा नहीं रखना चाहिये कि वे उनकी सेवा करेंगे।

( ८२४ )

ऐ जवान लड़के! यदि तुझे अपना बचपन याद होता तो तू मेरे ऊपर यह बुरा बर्ताव नहीं करता। उस समय तू बेबसी की हालत में मेरी गोद में पड़ा रहता था, पर अब तू शेर है और मैं बेबस बूढ़ी हूँ।

( ८२५ )

धर्म के जिस कार्य में पैसा ख़र्च न हो, उसे लोग बड़े चाव से करते हैं, पर जहाँ पैसे का प्रश्न उठता है वहाँ उनका मुँह सूख जाता है।

( ८२६ )

गीली लकड़ी को जितना चाहें मोड़ सकते हैं—सूखी को नहीं। सूखी हुई लकड़ी को झुकाने के लिये आग में देने की ज़रूरत पड़ती है।

( ८२७ )

यह बात सोने के अक्षरों में लिखी जाने योग्य है कि माँ-बाप के लाड़ से शिक्षक की ताड़ना अच्छी है।

( ८२८ )

अगर जमा किया हुआ धन हिमालय पर्वत के बराबर हो, तो भी वह भी बराबर खर्च करते रहने से एक दिन बिलकुल चुक जायेगा।

( ८२९ )

योग्यता सभी में नहीं होती। जिनमें स्वाभाविक योग्यता होती है, वे ही सब कुछ सीख सकते हैं। दूसरे नहीं।

( ८३० )

जो मनुष्य अपने आत्मीय-जनों के साथ अच्छा बर्ताव नहीं करते, उन्हे अच्छे पुरुष मित्र नहीं बनाते।

( ८३१ )

कुपुत्र जननेकी अपेक्षा जननी यदि सर्प जने तो बुद्धिमान उसको अच्छा समझते हैं।

( ८३२ )

यदि मनुष्य में गुण और परोपकार करने की इच्छा नहीं है तो उसमें और दीवाल पर खींचे चित्र में क्या अन्तर है।

( ८३३ )

धन अहंकार करने के लिये नहीं, दान के लिये है। ज़रूरतमन्द ग़रीबों का जिससे निर्वाह होता है—वही धन है, नहीं तो मिट्टी का ढेला है।

( ८३४ )

धनवानों की निन्दा नहीं करनी चाहिये। उन्हीं की कृपाकटाक्ष से ग़रीबों के दुःख दूर होते हैं। जो धनी ग़रीबों का ख्याल नहीं करते, वे ईश्वर के सामने पापी हैं।

( ८३५ )

माल ज़िन्दगी के आराम के वास्ते हैं, किन्तु ज़िन्दगी माल जमा करने के वास्ते नहीं।

( ८३६ )

जिसने खाया और बोया वही भाग्यवान है, किन्तु जिसने भोगा नहीं, लेकिन छोड़ कर मर गया वह भाग्यहीन है।

( ८३७ )

दो पुरुषों ने वृथा कष्ट उठाया और व्यर्थ उद्योग किया—एक तो वह, जिसने धन जमा किया, किन्तु उसे भोगा नहीं, दूसरा वह जिसने अक्ल सीखी पर उसका अभ्यास नहीं किया।

( ८३८ )

विद्या धर्म-रक्षा के लिये है न कि धन जमा करने के लिये। जिसने धन कमाने के लिये अपनी नामवरी और विद्या ख़र्च कर दी वह उसके समान है जिसने खलियान बनाया और उसे बिल्कुल जला डाला।

( ८३९ )

तीन चीजें तीन चीज़ों के विना क़ायम नहीं रहतीं—दौलत विना सौदागिरी के, इल्म विना बहस के-और बादशाहत विना दहशत के।

( ८४० )

दुष्टों पर दया करना, सज्जनों के ऊपर जुल्म करना है। ज़ालिमों को माफ़ करना, सताये हुये पर जुल्म करना है। अगर तुम कमीनों के साथ मेल-जोल रखोगे और उन पर मेहरबानी करोगे तो वे तुम्हारी हिमायत से अपराध करेंगे और तुमको उनके अपराधों का हिस्सेदार बनना पड़ेगा।

( ८४१ )

मित्र के सामने अपना सारा गुप्त भेद मत खोल दो, कौन जाने वह कब तुम्हारा शत्रु हो जावे? इसी तरह शत्रु को भी हर तरह की तकलीफें मत दो, कौन जाने वह कभी तुम्हारा मित्र ही हो जावे।

( ८४२ )

वह भेद जिसे तुम गुप्त रखना चाहते हो, किसी को भी मत बताओ, चाहे वह विश्वासयोग्य ही क्यों न हो। अपनी गुप्त बात जितनी अच्छी तरह तुम खुद छिपा सकते हो, दूसरा हर्गिज़ न छिपा सकेगा।

( ८४३ )

ऐ भले आदमी! पानी को निकास पर ही रोक। जब वह नदी के रूप में बहने लगेगा तब तू उसे न रोक सकेगा। जो बात सब लोगों के सामने कहने लायक़ नहीं है उसे अकेले में भी मत कह।

( ८४४ )

जो मनुष्य दो आदमियों के बीच में आग लगाता है, वह खुद अपने को उसमें जलाता है। अपने मित्रों से चुपचाप इस तरह बात करो कि तुम्हारे खून के प्यासे शत्रु तुम्हारी बात न सुन लें। अगर दीवाल के सामने भी कुछ कहो, तो होश रक्खो कि दीवाल के पीछे कान न लग रहे हों।

( ८४५ )

ऐ बुद्धिमान मनुष्य! तू उस मित्र से हाथ धो ले जो तेरे शत्रुओं से मेल-जोल रखता है।

( ८४६ )

जब तक रुपया ख़र्च करने से काम निकल सके तब तक जान को ख़तरे में न डालना चाहिये। जब हाथ से किसी विधि काम न निकले, तब तलवार खींचना ही मुनासिब है।

( ८४७ )

हे मनुष्य! तू सिधाई और भलमनसाई से काम ले, मगर इतनी सिधाई मत रख कि लोग भेड़िये के से तेज़ दाँतों से तेरा अपमान करें।

( ८४८ )

जब दुश्मन की कोई चाल काम नहीं करती तब वह दोस्ती पैदा करता है, क्योंकि दोस्ती के बहाने से वह उन सब कामों को कर सकता है जिनको वह दुश्मनी की हालत में न कर सका था।

( ८४९ )

जब तुम्हें कोई ऐसी खबर देनी हो जो उसका ( जिसे खबर दी जाती है ) दिल बिगाड़े, तब तुम्हें उचित है कि वह ख़बर उसे मत दो। तुम चुप्पी साध जाओ। उस बुरी ख़बर को तो वह किसी दूसरे मनुष्य से ही सुन लेगा।

( ८५० )

जब तुम्हें किसी से कोई बात कहनी हो तब पहिले यह निश्चय करो कि तुम्हारी बात का असर होगा कि नहीं। अगर असर होने की उम्मेद दीखे तो मुँह से बात निकालो।

( ८५१ )

शत्रुओं से अपने दुःख की बात मत कहो, वे प्रकाश में तो तुम्हारे साथ सहानुभूति दिखायँगे और मन में तुम्हारी अवस्था पर खुश होंगे।

( ८५२ )

जिनका गला अच्छा नहीं, उन्हें कभी भूल कर भी गायन द्वारा दूसरों को कष्ट न पहुँचाना चाहिये।

( ८५३ )

जो मनुष्य अधिकार रहते हुए भलाई नहीं करता उसे अधिकार हीन होने पर दुःख भोगना पड़ेगा।

( ८५४ )

मूर्ख के लिये मौन से बढ़ कर दूसरी अच्छी चीज़ नहीं है। अगर मूर्ख इस बात को जानता तो मूर्ख न बनता। अगर तुम बुद्धिमान नहीं हो तो चुप रहो। तुम्हारा चुप रहना तुम्हारी बेइज्ज़ती नहीं होने देगा।

( ८५५ )

यदि हर एक पत्थर लाल होता तो लाल और पत्थरों का मोल एक समान होता।

( ८५६ )

मनुष्यों के छिपे हुये दोष जाहिर मत करो, क्योंकि उनकी बदनामी करने से तुम पर किसी का विश्वास नहीं रहेगा।

( ८५७ )

हर सुन्दर सूरत वाले का मिजाज भी अच्छा हो, यह कठिन है, क्योंकि भलाई दिल के अन्दर होती है न कि सूरत में।

( ८५८ )

नीच और दूसरे के गुणों पर द्वेष करने वाला मनुष्य गुणवान की निन्दा उसकी गैर हाज़िरी में ही करता है, लेकिन जब सामना होता है तब उसकी बोलती बन्द हो जाती है।

( ८५९ )

जो पेट न होता तो चिड़िया चिड़ीमार के जाल में न फँसती और चिड़ीमार भी अपना जाल न फैलाता। पेट हाथों की हथकड़ी और पैरों की बेड़ी है। जो पेट का गुलाम है वह ईश्वर की उपासना नहीं कर सकता।

( ८६० )

स्त्रियों के साथ सलाह करने से बरबादी होती है और उपद्रवियों के साथ उदारता करने से अपराध लगता है।

( ८६१ )

अगर कोई बुद्धिमान मूर्ख के साथ किसी विषय पर वाद-विवाद करे, तो उसे अपनी इज़्ज़त की आशा त्याग देनी चाहिये।

( ८६२ )

बुद्धिमान् अत्तर के तबले—डब्बे के समान है जो चुपचाप रहता है लेकिन गुण दिखलाता है। मूर्ख नट ढोल के समान है जो शोर बहुत करता है, किन्तु भीतर से पोला है। अन्धों के बीच में सुन्दरी कन्या और विधर्मी के घर में वेदों की जो गति होती है वही गति बुद्धिमान् की मूर्खों में होती है।

( ८६३ )

पाप किसी के भी द्वारा क्यों न किया जावे घृणोत्पादक है। लेकिन विद्वानों में और भी ज़्यादा। दुश्चरित्र मूर्ख दुश्चरित्र पंडित से अच्छा है, क्योंकि मूर्ख ने तो अन्धे होने के कारण रास्ता खोया, किन्तु पंडित दो आँखों के होते हुए भी कुएँ में गिर पड़ा।

( ८६४ )

अकाल और सूखे के समय किसी ग़रीब आदमी से यह मत पूछो कि किस तरह गुज़र होती है, यदि पूछना ही हो तो उस हालत में पूछो जब कि तुम्हारा इरादा उसे जीविका देकर उसके घाव पर मरहम लगाने का हो।

( ८६५ )

दो बातें असम्भव हैं—एक तो भाग्य में लिखे से अधिक खाना और दूसरे नियत समय से पहिले मरना। होनहार, हमारे हज़ारों बार रोने-पीटने या खुशामद और शिकायतें करने से टल नहीं सकती।

( ८६६ )

श्रद्धाहीनविद्यार्थी निर्धन प्रेमी है, अनजान यात्री पंखहीन पक्षी है और अनभ्यस्त विद्वान फलहीन वृक्ष है, और विद्याहीन साधु बिना द्वार का घर है-ये सब अपूर्ण है, अतएव बेकार हैं।

( ८६७ )

गीता इस उद्देश्य से प्रकाशित की गई थी कि लोग उससे अच्छी अच्छी नसीहतें सीखें और उसके अनुसार चलें न कि इस मतलब से कि लोग उसके अनुसार पाठ मात्र किया करें।

( ८६८ )

दो मनुष्य के दिल से रंज नहीं जाता—एक तो वह व्यापारी जिसका जहाज़ समुद्र में डूब गया है और—दूसरा वह जिसका उत्तराधिकारी धन उड़ाऊ लोगों के साथ बैठा हुआ है।

( ८६९ )

जो शख़्स अपनी बुद्धिमानी दिखाने के लिये दूसरों की बातों के बीच में बोलता है वह अपनी नादानी प्रगट करता है। होशियार आदमी से जब तक पूछा न जाय तब तक जबाब नहीं देता।

( ८७० )

सोना, खान से खोद कर निकाला जाता है, किन्तु सूम से उसकी जान खोदने से। कमीने लोग खर्च नहीं करते, किन्तु होशियारी के साथ जमा करते हैं। इन लोगों को तुम एक दिन शत्रुओं के लिये रुपया छोड़ कर मरा हुआ देखोगे।

( ८७१ )

होशियार मनुष्य झगड़ा देखकर दूर हट जाता है और जब शान्ति देखता है तब लंगर डाल देता है, क्योंकि झगड़े के समय दूर रहने में कुशल है और शान्ति के समय बीच में रहने में सुख है।

( ८७२ )

दाता के और दोष इस तरह छिप जाते हैं जिस तरह चन्द्रमा का कलंक उसकी किरणों की जाल मे छिप जाता है।

( ८७३ )

जिस बात को तुम सब के सामने कहने में हिचकते हो उस को किसी से एकान्त में भी मत कहो।

( ८७४ )

अत्याचारी से बढ़कर अभागा आदमी और कोई नहीं है, क्योंकि विपदा के समय उसका कोई मित्र नहीं होता।

( ८७५ )

विचार कर काम करना चाहिये। तीरंदाज़ को धैर्य धारण करना चाहिये। उसकी कमान से जो तीर निकल जायगा वह फिर वापिस नहीं आवेगा।

( ८७६ )

सुख से पहिले दुःख पाना अच्छा है, बनिस्पत सुख के पीछे दुःख भोगने के।

( ८७७ )

जो प्रज्वलित क्रोध रूपी मार्गच्युत रथ को रोक सकता है वही कुशल सारथि है। केवल हाथ से लगाम पकड़ रहने में कोई चतुराई नहीं है।

( ८७८ )

सत्य वह है जो सदा रस रहे। उस सत्य का परमात्मा की सत्ता से अत्यन्त घनिष्ठ सम्बन्ध है। संसार की अन्य वस्तुएँ असत्य हैं, क्योंकि माया स्वरूप होने से वे परिवर्तन शील है। **'राधा स्वामी'**

( ८७९ )

संसार के सुख क्षण भंगुर हैं किसी भी ऐसे सुखी का उदाहरण नहीं मिल सकता जो मृत्यु को न प्राप्त हुआ हो। 'सोलन'

( ८८० )

जिस मनुष्य की अच्छे कार्य के लिये निन्दा होती है वह बड़ा भाग्यवान है, किन्तु जो अपने भले कर्मों के बदले में धन्यवाद या किसी फल की आशा करता है वह महा अभागा है, क्योंकि वह सुकर्मों का मूल्य चाहता है। 'मार्क्स आरो०'

( ८८१ )

जो पास में धन रहने पर भी अपने भाइयों की दीन अवस्था पर तरस नहीं खाता और उनकी सहायता नहीं करता उनके हृदय में प्रभु का प्रेम कैसे धँस सकता है।

( ८८२ )

जिसकी हार हुई है वह सदा असन्तुष्ट रहता है, सुखी वही है जो हार-जीत की परवा नहीं करता। 'धर्मपद'

( ८८३ )

जो कोई तुम्हें कोसे, तुम उसे कभी मत कोसो, स्मरण रखो कि क्रोधी के शाप से आशिष का फल मिलता है। 'रैदास'

( ८८४ )

जिसने कभी दुःख नहीं उठाया, वह सबसे बड़ा दुखिया है और जिसने कभी पीर न सहा वह सबसे बढ़ कर वे पीर है। 'मैनसियस'

( ८८५ )

अपने मन के दुःख को मनही में छिपा रखो, दूसरों से न कहो, यदि कहोगे तो वे सिर्फ हँसेंगे, कोई उस दुःख को बँटा नहीं सकेगा।

( ८८६ )

यदि तुम्हें सबसे ऊँचे होना हो तो नीचे होकर अभिमान छोड़ कर चलो और यदि लोगों का नज़र में ख़राब होना हो तो अभिमान से चलो।

( ८८७ )

संसार जितना चंचल लक्ष्मी के लिये है। उसके शतांश परिश्रम में हो वह परमार्थ का वह अचल धन प्राप्त कर सकता है। 'पारसभाग'

( ८८८ )

हर्ष के साथ शोक और भय इस प्रकार लगे हुए हैं जिस प्रकार प्रकाश के संग छाया। सच्चा सुखी वही है जिसकी दृष्टि में दोनों समान है।

'धर्मपद'

( ८८९ )

जिस हृदय में उपकार का स्थान नहीं वह मसान के तुल्य है अथवा श्वास लेने वाली लोहार की प्राण रहित धौंकनी के समान है।

( ८९० )

हे ईश्वर! मुझे भूल से मारने वाले जीवों का अपराध क्षमा कर

'हरिदास,

( ८९१ )

जिसने मन रूपी राक्षस को वश में कर लिया वही सर्वश्रेष्ठ पुरुष है।

'मीरा'

( ८९२ )

सेवक में स्वामी तथा स्वामी में दास है, अतः जिसने अपने को नहीं पहिचाना वह स्वामी को कैसे पहिचान सकता है।

( ८९३ )

उस मनुष्य के लिये साहसी होना असम्भव है जो कष्ट को सब से अधिक ख़राब और आनन्द को सबसे अच्छा बनाता है। 'सिसरे,

( ८९४ )

जब तक आफत दूर रहे तब तक उससे भय करना चाहिये और जब उस भय का कारण हमारे निकट आजाय तब निर्भय हो उसका सामना करना चाहिये।

( ८९५ )

समय पड़ने पर साहस काम में आता है। 'शेक्सपियर'

( ८९६ )

छोटी चीजें छोटी बुद्धि पर ही असर करती है। 'डिसरेले'

( ८९७ )

निश्चय ही कीर्ति नदी के सदृश है जो हलकी और पोली वस्तुओं को सदा ही ऊँची रखती है तथा भारी और ठोस वस्तुओं को डुबाये रहती हैं। 'वेकन'

( ८९८ )

किसी की चालाकी को जान लेना बड़ी बुद्धिमानी है 'कौन्ट'

( ८९९ )

मौन के वृक्ष में शान्तिके फल लटकते रहते हैं। अधिक बोलने वाला मूर्ख समझा जाता है।

( ९०० )

जग में कोई बात असम्भव नहीं है। केवल खुद को दृढ़ होकर उस काम में लगाने भर की देरी है। तब तुम देखोगे कि वह काम कितनी सरलता से पूरा होता है।

( ९०१ )

भाई यद्यपि तुम्हारा मार्ग रात्रि के सदृश अन्धकार मय क्यों न हो, पर साहस तुम्हें ठोकर न खाने देगा। भूले हुए को मार्ग दिखलाने के

लिये भी एक तारा है वह है ईश्वर पर विश्वास करो और उचित काम करो। 'मेकलियोड'

( ९०२ )

जो ऊँचे खड़े होते हैं उन्हें हिलाने के लिये अनेक आँधी झोके हैं और यदि वे गिरते हैं तो चूरचूर हो जाते हैं। 'शेक्सपियर'

( ९०३ )

निम्न विचार के मनुष्यों की संगत से बुद्धि घटती है बराबरी वालों की संगत से समान बनी रहती है, तथा उच्च विचार के मनुष्यों की संमति से बुद्धि बढ़ती है। 'हितोपदेश'

( ९०४ )

अनेक प्रकार की चीज़ों का अध्ययन मत करो। उस चीज़ को मत पढ़ो जिसको तुम स्मरण नहीं रख सकते। उसको स्मरण मत रखो जिसको व्यवहार में नहीं लाना चाहते। 'ब्लेकी'

( ९०५ )

समयानुसार सब चीज़ों की वृद्धि होती है। कोई भी मनुष्य जन्म से ही बुद्धिमान नहीं होता। 'कर मेण्टस'

( ९०६ )

अन्य विश्वासों को त्यागने से मानव धर्म का त्याग नहीं होता। 'सिसरो'

( ९०७ )

पुनः सोच कर निश्चय किया हुआ विचार ही श्रेष्ठ है। 'यूरीपीड्स,

( ९०८ )

जवानों, तुम एक जीवन जीओगे और एक ही मृत्यु पाओगे, किन्तु सावधान! ये दोनों कार्य हमें साहसा मनुष्यों के समान करने चाहिये। 'डोवेल रा'

( ९०९ )

देश का बना हुआ कपड़ा चाहे कितना ही बुरा क्यों न हो, सब को पहिनना चाहिये। 'अमीरकाबुल'

( ९१० )

अपने घातक को भी क्षमा करना हिन्दू धर्म की महानता है।

'स्वा० दयानन्द'

( ९११ )

तुम अपने आत्मा के सत्य को पहिचानो, वह सत्य तुझे मुक्त कर देगा। 'सेंटपाल'

( ९१२ )

मेरी राय में स्कूल तथा कालेज के लिये यह बड़े शर्म की बात है कि उसमें से ऐसे नवयुवक निकलें जो छाती पर हाथ ठोंक कर साहस पूर्वक इस बात को नहीं कह सकते कि हमारी आत्मायें हमारी हैं और उनमें आत्म विश्वास और निश्चय की मात्रा भी कुछ है। 'स्विटमार्गडन'

( ९१३ )

जो मनुष्य यह कहा करता है कि अब हमारे गिरते हुये दिन हैं— अब हमारा शरीर दिन दिन क्षीण ही होगा—बुढ़ापे के कारण हमारा बल घटेगा, उसके लिये पूर्ण स्वास्थ्य, हृष्ट पुष्टता प्राप्त करना एक दम असम्भव है। 'स्विट'

( ९१४ )

मनुष्य तब तक बूढ़ा नहीं होता जब तक कि उसके जीवन में माधुर्य और उत्साह बना रहता है, जब तक कि उसके हृदय में महत्वाकांक्षा बनी रहती है, जब तक कि उसके खून में कार्य कर शक्ति का प्रवाह बहता रहता है।

( ९१५ )

दरिद्रता एक नरक है जिससे इस समय के अंग्रेजों का कलेजा कांपता है ।

**'कार्लाइल'**

( ९१६ )

यदि आप अपने जीवनोद्देश्य को सफल करना चाहते हैं, यदि आप अपने आदर्श को कार्य में परिणत करना चाहते हैं, तो आप अपने सम्पूर्ण विचार प्रवाह को अपने उद्देश्य की ओर लगा दीजिये एक ही उद्देश्य की ओर अपने मन वचन और काया को लगा देने से संसार में बड़ी बड़ी सफलताएँ होती हुई दीख पड़ती हैं । **'मार्सडन'**

( ९१७ )

जैसे चीटियाँ अपने सुख के लिये अच्छे अच्छे पेड़ों की जड़ों को खोदकर, सुखाकर बगीचेकी शोभा नष्ट करती है उसी प्रकार स्वार्थ लोलुप लोग अपने सुख के लिये दूसरे की हानि करने में ज़रा भी नहीं हिचकते ।

**'वेकन'**

( ९१८ )

दुखियों की आह सुन कर यदि तुम हँसोगे, दीन हीन अनाथों की आँखों के आँसू न पोंछ कर घृणा के साथ उनकी अपेक्षा करोगे तो इस संसार में तुम्हारे आँसू पोछने कौन आवेगा ? संकट में कौन तुम्हारी सहायता करेगा ?

( ९१९ )

दरिद्रों को धन देना चाहिये, धनवानों को धन देने से क्या लाभ ? जो रोगी है उसी को दवा देना चाहिये निरोग को औषधि देना वृथा है ।

( ९२० )

अप्रकट रूप से उपकार करना, आश्रितों पर क्षमा की दृष्टि रखना, कुछ न माँगने पर भी दरिद्रों को दान देना और सद्गुणों के साथ प्रीति करना, सौ में बिरला ही कोई जानता है।

( ९२१ )

धन रहते दान, शक्ति रहते क्षमा, विपत्ति में धैर्य और सदाचार में निरभिमानता वही दिखलाते हैं जो महात्मा हैं।

( ९२२ )

दृढ़ प्रतिज्ञा, अध्यवसाय, आत्मवश्यता और उद्योग परता से मनुष्य क्या नहीं कर सकता ? जब तुम बराबर परिश्रम करते रहोगे तब जो काम तुम्हें आज असाध्य जान पड़ता है वह कल सुसाध्य जान पड़ेगा।

( ९२३ )

जैसे घिसने, काटने, तपाने और पीटने इन चार बातों से सोने की परीक्षा होती है वैसेही विद्या, स्वभाव गुण और क्रिया इन चार बातों से पुरुषों की परीक्षा होती है।

( ९२४ )

मनुष्य को प्रति दिन अपने चरित्र की आलोचना करनी चाहिये कि मेरा आचरण पशु के तुल्य है या सत् पुरुष के समान।

( ९२५ )

वाचालता मूर्खता का लक्षण है। 'थेल्स'

( ९२६ )

सबसे बलवान वस्तु आवश्यकता है।

( ९२७ )

सबसे बुद्धिमान वस्तु समय है, क्योंकि सब चीज़ों का आविष्कार और निर्माण यही करता है। 'थेल्स'

( ९२८ )

दुष्टों के पाप कर्म का छिपना तो दूर रहे, उनका मनोगत विचार भी परमात्मा से नहीं छिप सकता।

( ९२९ )

शरीर को भूषित करने में अधिक समय नष्ट न करो, अपनी बुद्धि को अलङ्कृत करने की चेष्टा करो।

( ९३० )

मनुष्य अपनी विपत्ति को धैर्य पूर्वक सह सकता है यदि उसका शत्रु उससे भी बुरी दशा में हो।

( ९३१ )

जो निरोग, धनी, विद्वान और बुद्धिमान है वही इस संसार में सुखी है। **'थेल्स'**

( ९३२ )

अपने आदर्श को सदा उच्च रखो और उसकी सिद्धि के लिये तन मन से लीन रहो। **'अनटोनियस'**

( ९३३ )

किसी के गुणों की प्रशंसा करने में अपना समय व्यर्थ नष्ट न करो, उसके गुणों को अपनाने का प्रयत्न करो।

( ९३४ )

मनुष्य का जन्म एक दूसरे की सहायता करने के लिये हुआ है। इस लिये संसार का सुधार करो या जिस दशा में वह है, उसी दशा में अपना जीवन निर्वाह करो। **'अनटोनियस'**

( ९३५ )

जब मैं प्रेम से परमेश्वर की लीला गाता हूँ तब वे मङ्गल मूर्ति पूज्यपाद मेरे हृदय में ऐसे शीघ्र दर्शन देते हैं जैसे किसी के बुलाने से कोई शीघ्र आ जाय। **'नारदजी'**

( ९३६ )

पाप चित्त वाले दूसरों के दुर्गुण खोजने में जैसे तत्पर रहते हैं, वैसे उनके कल्याण कारी गुणों के लिये नहीं रहते। **'विदुरजी'**

( ९३७ )

जितनी प्रियवस्तुएँ हैं, उनमें आत्माही प्रधान है और भगवान हरि ही उन सब में आत्मारूप से स्थित हैं अतः उनसे बढ़कर प्रिय वस्तु और कौन हो सकती है। **'नारद'**

( ९३८ )

चन्द्रमा और हिमालय पर्वत भी इतने शीतल नहीं, कदली वृक्ष और चन्दन भी इतने शीतल नहीं, जितना तृष्णा रहित चित्त शीतल रहता है। **'वशिष्ठ'**

( ९३९ )

जो स्थिर चित्त हो कर्म-फल की इच्छा छोड़ कर काम करता है उसे परम शान्ति मिलती है, परन्तु जो स्थिर चित्त नहीं है और फलों की कामना में मन लगाये हुए काम करता है वह कर्म बन्धन में बँध जाता है। **'गीता'**

( ९४० )

छोटे से छोटे काम को भी तुच्छ दृष्टि से नहीं देखना चाहिये। **'विवेकानन्द'**

( ९४१ )

नियम और संस्थाएँ मनुष्यों के लिये हैं, मनुष्य नियमों और संस्थाओं के लिये नहीं है। 'स्वामी रामतीर्थ'

( ९४२ )

वही जाति अधिक बलवती होती है जिसमें आत्म निर्भरता का गुण हो। 'विलियम गार्डन'

( ९४३ )

कोई वस्तु निरर्थक और तुच्छ नहीं है। वह अपनी स्थिति में सर्वोत्कृष्ट है। 'लांगफेलो'

( ९४४ )

महत्कार्यों की मृत्यु नहीं हो सकती, वे सूर्य और चन्द्रके साथ अपने प्रकाश को नित्य-नवीन करते रहते हैं। 'टेनिसन'

( ९४५ )

मित्रता स्वयं एक पवित्र बन्धन है। विपत्ति से वह अधिक पावन हो जाती है। ड्राइडन'

( ९४६ )

मित्रता दैवी देन है और मनुष्यों के लिये अत्यन्त बहुमूल्य वरदान है। 'डिसरायली'

( ९४७ )

सब पर प्रेम करो, थोड़े पर विश्वास करो, किसी को हानि न पहुँचाओ। 'शेक्सपियर'

( ९४८ )

उदार हृदयी बनने के पहिले मनुष्यों का कर्तव्य है कि न्यायी बने। 'डीकेन्स'

( ९४९ )

यदि मनुष्य सीखना चाहे तो उसे उसकी प्रत्येक भूल कुछ न कुछ शिक्षा दे सकती है। 'डीकेन्स'

( ९५० )

सदैव धूप ही बनी रहेगी, ऐसी आशा मत करो। सदैव बादल ही घिरे रहेंगे, मत डरो। 'बर्न्स'

( ९५१ )

दुःखी होने पर भी किसी का जी न दुखावे, किसी के साथ द्रोह की बुद्धि मनमें न रखे। ऐसा गर्हित वचन कभी न बोले, जिससे दूसरे को उद्वेग प्राप्त हो। 'मनुस्मृति'

( ९५२ )

अतिथि के लिये और कुछ न हो तो तृणासन, ठहरने की जगह पैर धोने के लिये पानी और मधुर और सत्य वाणी इन चारो वस्तुओं का अभाव तो सज्जनों के यहाँ कभी नहीं रहता। 'मनुस्मृति'

( ९५३ )

ग़रीबों के साथ मुहब्बत और प्रेम का सलूक ही सच्ची ईश्वर सेवा है।

( ९५४ )

जो कर्म भगवान ने बुरे बताये हैं उनसे बच, अन्यथा उसकी सृष्टि से बाहिर चला जा।

( ९५५ )

यदि तू पाप करना चाहता है तो ऐसा स्थान ढूँढ कि जहाँ ईश्वर न देखे, अन्यथा पाप न कर। क्योंकि ईश्वर सर्वव्यापी है।

( ९५६ )

चींटी तो शरत्काल के लिये वस्तु उपार्जन करे और तू भविष्य के सामान से बिलकुल निश्चिन्त ?

( ९५७ )

विज्ञ जनों ने विष को विष नहीं कहा है, परन्तु ऋण को विष कहा है, क्यों कि विष तो खाने वाले को ही मारता है, पर ऋण तो आगामी सन्तान को भी मार डालता है।

( ९५८ )

सदा एक जैसी दशा नहीं रहेगी अतएव मनको प्रत्येक दशा में प्रसन्न रखने की बान डालो।

( ९५९ )

दूसरों से कुछ ख़्वाइश रखने से पेश्तर खुद तुमको उसके लिये कुछ करना चाहिये।

( ९६० )

जिस दिन कोई नई बात न सीखो, समझो वह दिन व्यर्थ गया।

( ९६१ )

कम ख़र्च करने का विचार न करो, बल्कि आमदनी बढ़ाने का प्रयत्न करो।

( ९६२ )

अपनी विद्या तथा गुण का परिचय अपने मुख से न देकर आचरण से दो।

( ९६३ )

याद रक्खो! दुख का समय मर्दों की परीक्षा का है। इस कसौटी से पूरा उतरा कि स्वर्ण बना।

( ९६४ )

"मुझे कुछ दो" जब यह शब्द आदमी के मुख से निकलते हैं तब उसके भीतर बैठे हुए लक्ष्मी, शर्म, बुद्धि, यश और सन्तोष उसके मुँह से निकल जाते हैं।

( ९६५ )

जिस मनुष्य से अपने देश को कोई लाभ नहीं है, उससे मिट्टी का खिलौना अच्छा है जो बच्चों का दिल तो बहलता है।

( ९६६ )

जितने पदार्थों में ज्यादा मोह, उतना ही मन ज्यादा दुःखी। हे शान्ति के इच्छुक ! सन्तोष करना सीख।

( ९६७ )

कभी कभी मरीज़ों के पास भी जाकर बैठ आया कर, ताकि तन-दुरुस्ती की कदर सीख जाये।

( ९६८ )

ज्ञानी और अज्ञानी में यही भेद है कि ज्ञानी किसी भी बात की इच्छा नहीं करता जो होता है उसी में प्रसन्न रहता है। अज्ञानी यह हो, यह न हो, ऐसी इच्छा करता है।

( ९६९ )

धन, पुत्रादि, लौकिक पदार्थों के तथा कल्याण के लिए ईश्वर से ही प्रार्थना करनी चाहिये। भूत, मनुष्य आदि से नहीं। सब कुछ ईश्वर की कृपा से होता है।

( ९७० )

भगवान का जन्म और मरण हुआ था, कई लोग ऐसा मानते हैं, परन्तु यह उनकी मूर्खता ही है। एक लौकिक मायावी जादूगर खेल

दिखाने में जब हाथ पैर मस्तक आदि का कट जाना उन्हें जला देना और फिर वापिस हो जाना आदि विचित्र खेल दिखला देता है, तब भगवान की माया को तो कौन समझे ? **'एक योगी'**

( ६७१ )

सबसे नीचा होना चाहिये । ऊँचा होने मे गिरने का भय रहता है ।

( ६७२ )

सत्संग का फल अवश्य होता है, परन्तु होता है पूर्ण रूप से परायण हो जाने पर । जैसे—पारस और लोहा एक एक ही डिबिया में बन्द रहने पर भी जब तक उनमें ज़रासा भी अन्तर रहता है तब तक फल नहीं होता।

( ६७३ )

उभड़ती हुई जवानी में रमण करते हुये जवान को, खेलते हुए बालक को, रोग शोक से पीड़ित वृद्ध को और माता के उदर में रहने वाले गर्भ को भी काल ग्रस लेता है । यह जगत काल का ग्रास है ।

**'महाभारत'**

( ६७४ )

शत्रु को प्यार करो, अपराधी को क्षमा करो, मालिक के लिये दान दो, अपने लिये कुछ भी न चाहो । **'ईसा मसीह'**

( ६७५ )

महापुरुष के लक्षण ये हैं—( १ ) दूसरे की निन्दा को झूठ समझना और उसकी कहीं चर्चा भी नहीं करना । ( २ ) अपनी प्रशंसा को न सुनना और दूसरे की प्रशंसा को सुनकर प्रसन्न होना । ( ३ ) दूसरे को सुख पहुँचाने को अपने सुख से भी बढ़कर समझना । ( ४ ) छोटों से कोमलता और दया तथा बड़ों से आदर के साथ बर्ताव करना और ( ५ ) खेल में भी किसी के साथ चालाकी न करना । **'कामन थाट्स'**

( ९७६ )

पानी ऊपर नहीं ठहरता, वह नीचे ही रहता है, जो नीचा रहता है वही भर पेट पानी पी सकता है। ऊँचा तो प्यासा ही मरता है। **'कबीर'**

( ९७७ )

मित्र का मिलने पर आदर करो, पीठ पीछे प्रशंसा कर और आवश्यकता के समय सहायता करो। **'अरस्तु'**

( ९७८ )

बदला लेने का ख्याल छोड़कर क्षमा करना, अन्धकार से प्रकाश में आना और नरक को जगह संदेह हो स्वर्ग पहुँचना है। **'जेम्स ऐलन'**

( ९७९ )

अपने को तो हारना भला है। जगत को जीतने दे। जो हारता है वही हरि से मिलता है और जो जीतता है वह यम के द्वार जाता है।

**'नानक'**

( ९८० )

संसार के सुख क्षण भंगुर हैं। तब तक किसी को सुखी नहीं समझना चाहिये, जब तक कि वह सुखी अवस्था में मर न जाय। **'सोलन'**

( ९८१ )

जिसका अन्तःकरण कामनाओं से भरा रहता है उसमें ये ५ बातें नहीं रह सकतीं ( १ ) ईश्वर का भय ( २ ) ईश्वर की आशा ( ३ ) ईश्वर में प्रेम ( ४ ) ईश्वर से लज्जा और ( ५ ) ईश्वर से मित्रता। **'शरी'**

( ९८२ )

किसी को दुःख नहीं देना तथा कोई तुम्हारे विरुद्ध बर्ताव करे, तब भी उसका बदला लेने की इच्छा न करके उस बात को गुप्त रखना, यही सहनशीलता है। **'अबुमहम्मद जुबरी'**

( ९८३ )

न्यायपरायण मनुष्य तक कोई घातक तीर नहीं पहुँचा सकता। वह घृणाओं के अंधड़ों के बीच में भी सीधा खड़ा रहता है और क्षति, अभिशाप तथा घाव को बिल्कुल ही तुच्छ या नाचीज़ समझता है—बराबर उनका अनादर करता है।

( ९८४ )

संसार का सारा ज्ञान पुस्तकों में है। जिन परिवारों में पठन-पाठन का व्यसन नहीं है, सचमुच ही वे बड़े अभागे हैं। **'स्वामी रामतीर्थ'**

( ९८५ )

परोपकार करना, दूसरे की सेवा करना और उसमें ज़रा भी अहंकार न करना, यही सच्ची शिक्षा है। **'म० गान्धी'**

( ९८६ )

तुम्हें पढ़ने की इतनी चिन्ता क्यों है ? यदि कमाने योग्य होने के लिये यह चिन्ता हो तो उसे छोड़ दो, क्योंकि परमात्मा सब के पेट के लिये देता है। तुम मज़दूरी करके भी अपना पेट भर सकते हो। अगर तुम्हें देश सेवा के लिये पढ़ना हो तो वह अब भी करते ही हो। अगर आत्मा को पहिचानने के लिये पढ़ना हो तो पहिले अच्छे बनो। **'म० गान्धी'**

( ९८७ )

जब तक तुम अपने चरित्र को पवित्र बनाये रख सकते हो, अपना कर्त्तव्य किये जाते हो, मैं तुम्हारे अक्षर ज्ञान के विषय में निश्चिन्त हूँ। **'म० गान्धी'**

( ९८८ )

मनुष्य का सच्चा धन्धा तो यह है कि वह अपना चरित्र बनावे। कमाने के लिये कुछ सीखने की ज़रूरत नहीं। जो मनुष्यता को नहीं छोड़ता, वह कभी भूखों नहीं मर सकता और यदि कहीं ऐसा समय आ भी जाय तो वह घबराता नहीं। **'म० गान्धी'**

( ६८६ )

हमारी सम्पूर्ण शिक्षाविधि सड़ी हुई है। इसका फिर नये सिरे से रचना करने की ज़रूरत है। 'म० गान्धी'

( ६६० )

अगर मेरी चले तो आजकल पाठशाला में जो पुस्तकें पढ़ाई जाती हैं, उनमें अधिकांश को मैं नष्ट कर दूं और ऐसी पुस्तकें लिखवाऊँ, जिनका गृह जीवन से निकट सम्बन्ध हो। इससे उनकी पढ़ाई का उपयोग उनके गृहजीवन में भी हो सकेगा। 'म० गान्धी'

( ६६१ )

मेरा तो ख्याल है कि मेरी तमाम प्रवृत्तियों में चरखा सब से अधिक स्थायी और कल्याणकारी है। हिन्दुस्थान के लाखों परिवारों की दरिद्रता और अकालों का वह रामबाण उपाय है। 'म० गान्धी'

( ६६२ )

अकालों के कारण लोग इतने भूखों मरते हैं कि कितने ही परिवार डूब मरते हैं। इसका कारण यह नहीं कि बाज़ार में अनाज नहीं मिलता, बल्कि यह है कि अनाज ख़रीदने के लिये उनके पास पैसे नहीं। आठ घन्टे कातने वाली औरतों को चरखा प्रति दिन तीन आने दे सकता है। 'म० गान्धी'

( ६६३ )

जो आदमी एक बार खादी खरीदता है, वह कम से कम तीन आने गरीबों के यहाँ देता है। खादी में कितना स्वदेशाभिमान है, यह वही आदमी जानता है जो आग्रह पूर्वक खादी पहिनता है। 'म० गान्धी'

( ६६४ )

जो अपने प्रति कठोर और साथियों के प्रति सहृदय होता है वह बिना सत्ता के शासक हो जाता है। उसके हुक्म प्रेम के सन्देश होते हैं और साथी उसके लिये उत्सुक रहते हैं। 'हरिभाऊ उपाध्याय'

( ९९५ )

हृदय की सचाई के साथ बाहिरी आव-भगत मनुष्यता का भूषण है, इसके विपरीत वह मलिनता और पाखंड का अचूक प्रदर्शन है।

( ९९६ )

भय से उच्चार अच्छा, उच्चार से आवेश अच्छा, आवेश से संयम, अच्छा, संयम से मौन अच्छा। भयमूलक मौन पतनकारी है संयमोत्तर मौन अविराम प्रबल कार्यकर्त्ता है।

( ९९७ )

सदा दूसरों के दोष देखना, सदा दूसरों पर अविश्वास रखना, अपने ही हृदय की मलिनता का लक्षण है। सावधानता जागरूकता एक बात है और अविश्वास दूसरी।

( ९९८ )

कर्मपथ में प्रभु पर विश्वास करो और बढ़ते जाओ। सर्वदा अपनी दृष्टि को उसके शब्दों पर रखो, तब तुम्हें आशातीत सफलता होगी।

'लूथर'

( ९९९ )

अगर कोई घमण्डी, आततायी या लोभी क्रोधी हो तो उसे दंड देने में कोई अपराध नहीं। 'दयानन्द'

( १००० )

ऐ, निर्दयी! ग़रीब को न सता। ग़रीब रो देगा। सुनेगा मालिक तो जड़ से खो देगा। 'स्वामी दयानन्द'

॥ अमूल्य हीरे समाप्त ॥

**पता—भार्गवपुस्तकालय, गायघाट, (ब्रांच—कचौड़ीगली बनारस)।**

मुद्रक—पं० बैकुण्ठनाथ भार्गव, आनन्द सागर प्रेस, गायघाट, बनारस।